चौधरी चरण सिंह

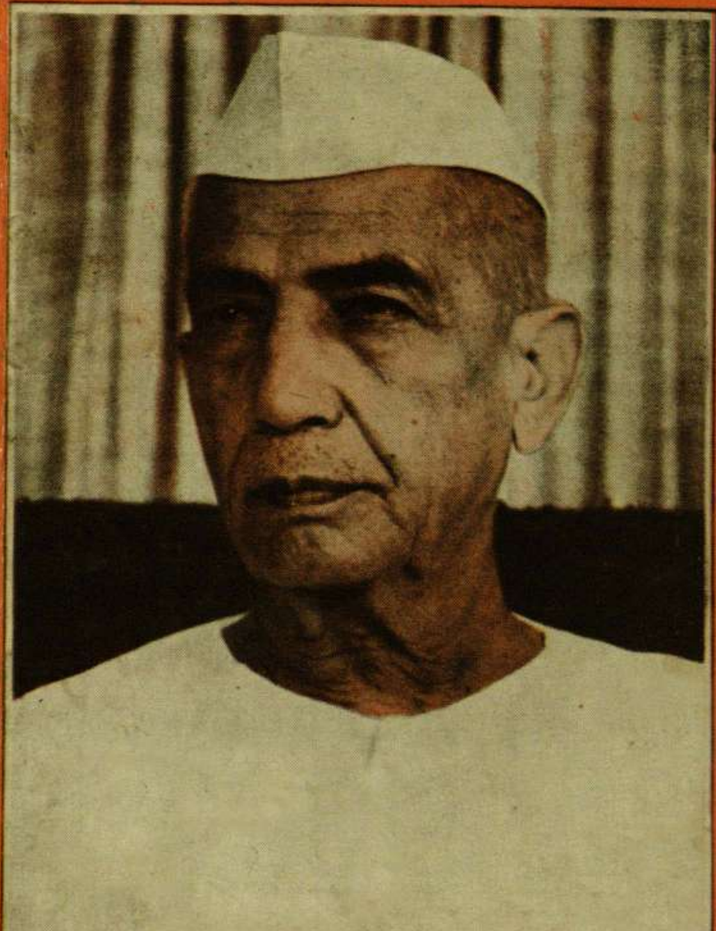

लोहपुरुष चौ० चरणसिंह
की
अमर कहानी

लेखक तथा सम्पादक—
परमेश शर्मा, एम० ए०

प्रकाशक :
मधुर-प्रकाशन
२८०४, गली आर्य समाज
बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

प्रथम संस्करण   दिसम्बर १९८७   मूल्य ८)

प्रकाशक—
राजपाल सिंह शास्त्री
अध्यक्ष, मधुर-प्रकाशन,
२८०४, गली आर्यसमाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

फोन :—कार्यालय : २६८२३१, निवास : ५१३२०६

प्रथम संस्करण—दिसम्बर १९८७

मूल्य : ८) रुपये

मुद्रक—नीलिमा प्रिंटर्स, टी-३००, अहाता किदारा, पहाड़ी धीरज,
दिल्ली-११०००६

अपनी बात

आज के अर्थ-प्रधान युग में भारतवर्ष की गणना ऐसे देशों में की जा रही है जो आर्थिक दृष्टि से समृद्ध नहीं है। भारत के आर्थिक दृष्टि से समृद्ध न होने के जो भी कारण रहे हैं, एक मुख्य कारण यह भी रहा है कि यहाँ युगों-युगों से अर्थ (वित्त) से अधिक ज्ञान की उपासना हो रही है। यहां का नचिकेता तो मिलती हुई वैभव-सम्पदा को ठुकराकर आत्म तत्व को जानने की जिज्ञासा करता रहा है। इसी परम्परा का निर्वहन कुछ लोगों द्वारा आज भी किया जा रहा हैं—भले ही ऐसे लोगों की संख्या कितनी ही कम क्यों न हो।

चौधरी चरण सिंह का जीवन-वृत्त पाठकों के हाथों में है। चौधरी साहब बड़े नगरों की दिखावटी और हलचल भरी जिन्दगी से नहीं अपितु शान्त वातावरण वाली गांव की मिट्टी की गंध से प्रभावित थे और इस प्रकार अपने समकालीन नेताओं की तुलना में एक अपवाद ही थे। मनसा—वाचा—कर्मणा, सादा, स्वदेशी और सात्विक जीवन जीने वाले चौधरी साहब की कथनी और करनी में अन्तर नहीं था। वे भारतीयता के प्रति समर्पित थे। उनके जीवन से पाठकों को विशुद्ध भारतीय जीवन जीने की प्रेरणा प्राप्त होगी, ऐसी आशा है।

मधुर-प्रकाशन द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के सच्चे अनुयाइयों का जीवन-वृत प्रकाशित होता रहता है। यह जीवनी उसी श्रृंखला की एक कड़ी है। हिन्दी, संस्कृत और वैदिक धर्म की सेवा में इस प्रकाशन के महत्वपूर्ण योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

प्रस्तुत जीवनी के लेखन में जिन-जिन पत्र-पत्रिकाओं से लेखकों के लेखों से सहायता ली गई है अथवा जिनके लेखों को ज्यों का त्यों स्थान दिया गया है उन सब के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

—परमेश शर्मा

अमर कहानी : चौ० चरण सिंह

विषय-सूची

जीवन परिचय	१
राजनैतिक जीवन का आरम्भ	४
भूमि-सुधार	१०
महाप्रयाण : शोक श्रद्धांजलियां	२७
संस्मरण	५३
चौ० चरणसिंह : जीवन यात्रा	६४

प्रेरणाप्रद अमर कहानी पढ़िये

क्रान्ति के अग्रदूत (श्री सच्चिदानन्द शास्त्री)	१२)
अमर क्रान्तिकारी (श्री राजपाल सिंह शास्त्री)	५)
सीमा के प्रहरी (आचार्य मित्रसैन)	५)
श्री लालबहादुर शास्त्री जीवनी (आचार्य परमेश)	१२)
महर्षि दयानन्द (श्री रामेश्वर शास्त्री)	३)
संघर्ष मूर्ति : स्वामी श्रद्धानन्द (श्री शिवकुमार)	५)
स्वामी विरजानन्द की जीवनी (स्वामी वेदानन्द तीर्थ)	१०)
जीवनी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती (डा० भवानीलाल भारतीय)	३)

विशेष जानकारी के लिये बृहद् पुस्तक सूचीपत्र निःशुल्क मँगायें।

मधुर-प्रकाशन

२८०४, गली आर्यसमाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-६

साहब आर्य समाज तथा काँग्रेस के कार्यों में अधिक रुचि लेते थे। वे आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों में निष्ठापूर्वक भाग लेते थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र देहलवी से उनका निकट सम्पर्क था।

चौधरी चरण सिंह भारत के उन सपूतों में से थे जिन पर भारतीय संस्कृति को सदा गर्व रहेगा। आर्थिक आपाधापी तथा राजनीतिक गहमा-गहमी के इस युग में कोई भी वह व्यक्ति जो गरीब, निर्धन किसानों का हितचिन्तक रहा हो और उसने उनके जीवन को ऊपर उठाने के लिए अपना पूरा जीवन खपा दिया हो, स्वयं सादगी का जीवन बिताते हुए देश को सादगी का जीवन बिताने की शिक्षा दी हो, जो रूढ़िवाद तथा अन्धविश्वासों को तोड़ता हुआ, प्राचीन मान्यताओं के साथ नई वैज्ञानिक उपलब्धियों के लाभ को ग्रहण करता हुआ देश को एक विशिष्ट दिशा देता रहा हो ऐसा व्यक्ति चरणसिंह के अतिरिक्त कौन हो सकता है। स्वाभिमानी, अपने विचारों पर दृढ़ रहने वाले धार्मिक और सामाजिक मर्यादाओं का पूर्णरूपेण पालन करने वाले चौधरी चरणसिंह के चरित्र की महानता को उनके विरोधी भी स्वीकार करते हैं।

'परोपदेशे पांडित्यम्' की बात आज के राजनीतिज्ञों में बहुतायत से पायी जाती है किन्तु चौधरी साहब की कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था। देश की उन्नति के लिए आवश्यक सामाजिक तथा राजनीतिक सुधार के कार्यों में वे सर्वदा अग्रणी रहे और सुधार की सभी योजनाओं का ईमानदारी से कार्यान्वयन कराया। वे अपने सिद्धांतों का सौदा किसी मूल्य पर नहीं करते थे। शाकाहारी, सात्विक जीवन जीने की कला हमें उनसे सीखनी है। उनका चरित्र नैतिक, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से उन्नत स्तम्भ की तरह खड़ा है।

ईश्वर ने उन्हें शक्ति प्रदान की थी, दूसरों की रक्षा के लिए। उन्होंने उस शक्ति का भौंड़ा प्रदर्शन कभी नहीं किया, किन्तु इस अर्थ में वे शक्ति को शून्य पड़े रहने देना भी नहीं चाहते थे। जन-कल्याण के लिए जहाँ आवश्यक था वे उसका उपयोग करते थे। पटवारियों की बर्खास्तगी व

जमींदारी उन्मूलन इसके उदाहरण हैं। वे विदेशी संस्कृति के पोषक नहीं थे, अपनी भाषा का संवर्द्धन चाहते थे। बहुत समय तक उन्होंने अपने घर में टेलीविजन तक नहीं रखा। उनके विचार में यह भारतीय संस्कृति को दूषित कर रहा है। सिनेमाओं में दिखायी जाने वाली अश्लील हिंसात्मक घटनाओं को हमारे देश के पतन का एक कारण मानते थे। इस सबसे अधिक उन्हें लगाव था अपने देश की मिट्टी से, इसकी भीनी-भीनी सुगन्ध से, इसमें पैदा होने वाले अन्न से, अन्न पैदा करने वाले अन्नदाता किसान से। किसानों के प्रति इसी अतिशय आत्मीयता के कारण जनता उन्हें किसान नेता कहकर पुकारती थी। वस्तुतः वे किसानों के, मजदूरों के, धनिकों के, निर्धनों के, पुरुषों के, महिलाओं के सभी के शुभचिन्तक नेता थे।

चौधरी साहब को कामचोरी व रिश्वतखोरी से भी नफरत थी, वे स्वयं रात देर तक काम करते थे और अपने काम में किसी का हस्तक्षेप (श्रीमती गायत्री देवी का भी नहीं) बर्दाश्त नहीं करते थे। वे महात्मा गांधी, महर्षि दयानन्द तथा सरदार पटेल को अपना आदर्श नेता मानते थे। चौधरी साहब की प्रशासनिक क्षमता व ईमानदारी सर्वविदित थी। अनुशासन और सादगी उनके जीवन का मूलमन्त्र था।

राजनैतिक जीवन का आरम्भ

सन् १९३० में चौधरी चरण सिंह तथा गोपीनाथ 'अमन' को नमक बनाने के आरोप में एक साथ गिरफ्तार किया गया। नमक कानून का उल्लंघन करने के कारण वे मेरठ जेल में बंद रहे।

१९३२ ई० में आपको मेरठ जिला बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया। इन दिनों व्यक्तिगत सत्याग्रह का दौर-दौरा था। क्षेत्र के किसानों को सक्रिय करने की दृष्टि से चौधरी साहब को जिला सत्याग्रह समिति का मंत्री बनाया गया। २८ अक्तूबर १९४० ई० को वे किसानों के बड़े जत्थे के साथ सत्याग्रह करते हुए बंदी बनाये गये। उन्हें डेढ़ वर्ष की सजा हुई और जुर्माना भी हुआ।

अगस्त, १९४२ में उनको भारत सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया और नवम्बर १९४३ में वे रिहा हुए। १९२९ से १९३९ तक श्री चरण सिंह गाजियाबाद नगर कांग्रेस समिति के सदस्य रहे और कई वर्षों तक समिति के किसी न किसी पद के कार्यभार को चलाते रहे। १९३९ से १९४८ तक उन्होंने लगातार मेरठ जिला कांग्रेस समिति के अध्यक्ष के या प्रधान सचिव के पद पर कार्य किया। सन् १९४६ में ही श्री चरण सिंह को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का सदस्य बना दिया गया। साथ ही १९५१ से वे राज्य संसदीय मंडल के भी सदस्य बना दिए गए। बीच में मंडल में गुटबाजी से तंग आकर उन्होंने उसकी सदस्यता त्याग दी थी, यहाँ तक कि उन्होंने प्रदेश कांग्रेस समिति की सदस्यता में भी कोई रुचि नहीं दिखाई। १९६५ में उन्होंने गुटों की राजनीति से पूरी तरह अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। सन् १९६८ में कांग्रेस के राज्य संसदीय मंडल के सदस्यों में श्री चरण सिंह को शामिल नहीं किया गया क्योंकि उस वर्ष मंडल के सभी सदस्य चुनाव द्वारा निर्वाचित होने के स्थान पर कांग्रेस अध्यक्ष के द्वारा गुटों के प्रतिनिधित्व के आधार पर मनोनीत किए गए। १९४८ से १९५६ ईस्वी तक श्री चरण सिंह राज्य विधान मंडल में कांग्रेस पार्टी के प्रधान सचिव भीं रहे।

अप्रैल १९४६ में उनको संसद सचिव नियुक्त किया गया और जून, १९५१ से अगले कई वर्षों तक श्री चरण सिंह उत्तरप्रदेश के सदस्य रहे। बीच में यह क्रम केवल दो बार १९५९-६९ तथा १९६३ में कुल मिला कर लगभग २१ महीनों के लिए टूटा।

१९३९ में श्री चरण सिंह ने निजी सदस्य के तौर पर विधान सभा में कृषि पदार्थों की बिक्री से सम्बन्धित एक विधेयक प्रस्तुत किया। उन्होंने कृषि पदार्थों की बिक्री नामक एक लेख भी लिखा जिसे दिल्ली के समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने दो भागों में अपने ३१ मार्च तथा अप्रैल १९३८ के अंकों में प्रकाशित किया। व्यापारी वर्ग के लोभ से कृषि क्षेत्र में उत्पादकों के हितों की रक्षा के उद्देश्य से उनके द्वारा दिए

गए सुझावों को लगभग सभी राज्यों ने अपनाया। सबसे पहले पंजाब से १९४० में इसकी शुरुआत हुई। परन्तु जिस राज्य में इस उपाय ने जन्म लिया वहां इस विषय पर १९६४ तक कोई अधिनियम नहीं बनाया गया। स्वार्थी लोगों के प्रतिनिधियों ने जो कांग्रेस तथा सरकार दोनों में ही उच्च स्थानों पर आसन्न थे, श्री चरण सिंह के प्रयत्नों को विफल कर दिया।

चौधरी साहब सन् १९६० में श्री चन्द्रभानु गुप्त के मंत्रिमंडल में गृह तथा कृषिमंत्री थे। किसानों के हितों के लिए उन्होंने अनेक पग उठाये। वे श्रीमती सुचेता कृपलानी के मंत्रिमंडल में भी कृषि तथा वनमंत्री रहे थे। १९६७ में चुनाव के बाद कांग्रेस ने जैसे-तैसे जोड़-तोड़ कर सरकार बनाने का प्रयास किया। श्री चन्द्रभान गुप्त कांग्रेस विधायक दल के लिए खड़े हुए। चौधरी साहब ने भी दल के नेता का चुनाव लड़ने का निर्णय किया। अन्त में कांग्रेस हाईकमान उन्हें चुनाव में खड़े न होने के लिए राजी करने में सफल हो गया। श्री गुप्त ने मंत्रिमंडल का गठन किया किन्तु चौधरी साहब को उसमें नहीं लिया गया। गुप्त मंत्रिमंडल कुछ ही दिनों में उस समय गिर गया, जब अप्रैल में चौधरी साहब ने जन कांग्रेस की स्थापना कर कांग्रेस से अलग होने की घोषणा कर दी। इसी दौरान उनका कांग्रेस से मतभेद हो गया तथा उन्होंने अप्रैल १९६७ में कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। १ अप्रैल को संयुक्त विधायक दल का गठन हुआ और ३ अप्रैल को मुख्यमन्त्री बने। संविद सरकार के विभिन्न घटकों में आपसी खींचतान शुरू हुई तथा अगले वर्ष सत्रह फरवरी ६८ को ही उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। विधानसभा भंग कर दी गई तथा १९६९ में विधानसभा के मध्यावधि चुनाव हुए। चौधरी साहब ने एक नये दल 'भारतीय क्रांति दल' का गठन किया तथा जब उन्होंने राज्य विधान सभा के निन्यानवे स्थान प्राप्त किये, तो उनकी लोकप्रियता की धाक तमाम देश में जम गयी।

फरवरी १९७० में वे पुनः मुख्यमन्त्री निर्वाचित हुए। किन्तु दल-

बदल ने राजनीतिक अस्थिरता पुनः उत्पन्न कर दी तथा अगस्त में ही उन्हें त्यागपत्र देना पड़ गया। उन्होंने भारी प्रयास करके २६ अगस्त १९७४ को भारतीय क्रांतिदल, स्वतंत्र पार्टी, उत्कल कांग्रेस, संसोपा, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल, किसान मजदूर पार्टी तथा पंजाब खेतीबाड़ी यूनियन, इन सात दलों का 'भारतीय लोक दल' के नाम से एकीकरण कर एक दल का गठन किया जिसके अध्यक्ष चौधरी साहब चुने गये।

इसके बाद वे जनसंघ तथा संगठन कांग्रेस को भी मिलाकर नये विपक्षी दल के गठन के बारे में प्रयास करते रहे। उनका स्पष्ट मत था कि राष्ट्रीय मुद्दों को प्रमुखता देकर आपसी मतभेद भुलाकर सशक्त विपक्षी दल का गठन अत्यन्त आवश्यक है।

२५ जून १९७५ को अन्य नेताओं के साथ चौधरी साहब को भी जेल भेज दिया गया। दिल्ली की तिहाड़ जेल में वे बन्दी रखे गये। मार्च १९७६ में उन्हें रिहा किया गया।

२३ मार्च १९७६ को उत्तर प्रदेश विधान सभा में विरोधी दल के नेता के रूप में उन्होंने जो ढाई घंटे तक अपने भाषण में आपात्काल तथा उसके दौरान हुए अत्याचारों के सप्रमाण प्रहार किये, उन्हें सुनकर कांग्रेसी सदस्य तथा मुख्यमंत्री निरुत्तर हो गये थे।

जनवरी १९७७ में चुनाव की घोषणा होने के बाद जयप्रकाश जी के आदेश पर चौधरी साहब ने जनता पार्टी के गठन की पहल की थी।

चौधरी साहब पर प्रायः उनके विरोधी 'जाटवाद' को पनपने का आरोप लगाते हैं। १९७१ के लोकसभा चुनाव में भारतीय क्रांतिदल के रूप में उन्होंने अपने अलग प्रत्याशी खड़े किये थे। मुझे उनके साथ पत्रकार के रूप में उत्तर प्रदेश तथा हरियाणा के चुनाव दौरे पर जाने का अवसर मिला था। किसी शहर में उन्हें कांग्रेस द्वारा प्रसारित एक पैम्फलेट दिया गया, जिसमें उन पर जाटवाद को उभारने का आरोप लगाया गया था। पैंफलेट पढ़ते ही उनका चेहरा गंभीर हो उठा तथा हम पत्रकारों से बोले, "आप मेरे प्रत्याशियों की लिस्ट देखिये और

बताइये कि इसमें कितने जाट हैं ? मैंने जाति के आधार पर नहीं, अपितु लोकप्रियता, जनसेवा तथा ईमानदारी को परखकर टिकट दिये हैं। इसमें हर वर्ग तथा जाति के व्यक्ति हैं—"बनिये, ब्राह्मण, राजपूत, मुसलमान, हरिजन सभी हैं।"

चौधरी साहब को अपने ऊपर लगाये गये जातिवाद के आरोप से सबसे अधिक कष्ट पहुंचता था। वे हमेशा जातिवाद की संकुचित भावना से कोसों दूर रहे। उन्होंने ही अपने मुख्यमंत्रित्व काल में उत्तर प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं से जातिसूचक नाम हटाने की सफल पहल की थी। जब जाट कालेज, बड़ौत (मेरठ) जो उनके चुनाव क्षेत्र में ही है, का नाम बदलने पर क्षेत्र के जाटों ने आपत्ति की, तो चौधरी साहब ने साफ-साफ कह दिया था, "मैं इस प्रश्न पर समझौता कदापि नहीं कर सकता।" विवश होकर कालेज के अधिकारियों ने उसका नाम "जनता वैदिक कालेज" कर लिया।

१९७७ के लोकसभा चुनाव में भी उनके बागपत चुनाव क्षेत्र में कुछ राजनीतिक नेताओं ने इसी प्रकार 'जाट गैर जाट' का प्रश्न उभारने का दुष्प्रयास किया। चौधरी साहब ने एक सभा में कहा था, "मैंने भगवान के यहाँ दरखास्त दी हो कि मुझे जाट के घर पैदा करना, यह तो मुझे याद नहीं है ? ऐसा संकुचित आरोप वही तत्व लगाते हैं जो स्वयं जातिवाद के बल पर जीवित हैं।"

चौधरी साहब प्रशासन की ईमानदारी तथा अनुशासन के सदा कायल रहे। उन्हें यह पता था कि पटवारी लोग रिश्वत के बल पर जमीन की हेराफेरी करने के लिए बदनाम हैं। एक बार जब उन्होंने हड़ताल की धमकी दी, तो उन्होंने उनके 'बस्ते' रखवा कर 'पटवारी' शब्द को ही हमेशा के लिए शब्दकोष से हटा दिया था, भले ही बाद में उनका 'लेखपाल' के रूप में पुनर्जन्म हो गया हो, उन्हें लगा कि जिला सूचनाधिकारी सरकारी प्रगति के प्रचार के नाम पर कुछ पत्रकारों की खुशामद तथा उनकी दावतों में अधिक रुचि लेते हैं, उन्होंने इस विभाग को ही समाप्त कर डाला।

एक बार वे अपने प्रदेश के किसी जिले में गये। जिला उद्योग अधिकारी उनकी अगवानी के लिये आया, तो उन्होंने सहज भाव से पूछ लिया, "इस जिले में कौन सा प्रमुख उद्योग है।" उसने उत्तर दिया, "उद्योग तो यहाँ कोई नहीं है" यह सुनकर उनका चेहरा तमतमा उठा तथा बोले, फिर आप किस कारण अपनी फौज के साथ यहां वर्षों से जमे हुए हैं ?" और दूसरे ही दिन उद्योग विभाग को वहाँ से उठाकर अन्यत्र भेज दिया।

सन् १९७७ में जनता पार्टी के गठन में चौधरी साहब ने अहम् भूमिका निभाई। जनता पार्टी का गठन हुआ और उसने देश की मुख्य समस्याओं को आधार बनाकर चुनाव लड़ा। चुनाव में जनता पार्टी को अभूतपूर्व सफलता मिली। चौधरी साहब भी भारी बहुमत से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए। जनता सरकार का गठन हुआ और चौधरी साहब को देश का गृहमंत्री बनाया गया।

प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई के साथ मतभेद के कारण ३० जून १९७८ को आपने मंत्रीमंडल से त्यागपत्र दे दिया। २३ दिसम्बर को दिल्ली में एक अभूतपूर्व किसान रैली बोट क्लब पर हुई जिसे चौधरी साहब ने सम्बोधित किया।

२४ जनवरी, १९७९ को जनता पार्टी सरकार में आपको उप-प्रधान मंत्री तथा वित्त मंत्रालय का कार्यभार सौंपा गया। चौधरी साहब के श्री मोरार जी देसाई के साथ मतभेद बने रहे। मतभेदों के रहते कार्य करना कठिन था। अतः आपने जुलाई १९७९ में अपने अनुयायी सांसदों के साथ सामूहिक रूप से पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि देसाई मंत्रीमंडल का पतन हुआ और चौधरी साहब को प्रधान मंत्रित्व के लिए राष्ट्रपति महोदय ने आमंत्रित किया।

पांचवें प्रधानमंत्री

२४ जुलाई को आपने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। आपके मंत्रिमंडल को कांग्रेस (इ) का समर्थन प्राप्त हुआ और आप देश के पांचवें प्रधानमंत्री बने।

२० अगस्त, १९७९ को कांग्रेस (इ) द्वारा अपना समर्थन वापस ले लिया गया। परिणाम स्वरूप चौधरी चरण सिंह की सरकार गिर गई। राष्ट्रपति को लोकसभा भंग करने की सलाह दी गई। चौधरी साहब ने इसके बाद दलित मजदूर किसान पार्टी का गठन किया।

सन् १९८५ में अपने सहयोगियों के आग्रह पर आपने 'दमकिपा' का नाम बदलकर लोकदल रखा। चौधरी साहब इसके अध्यक्ष रहे और यह दल बहुत अच्छे ढ़ंग से अपना कार्य कर रहा था। विधि का विधान भी बड़ा विचित्र है—२९ नवम्बर, १९८५ को चौधरी साहव गंभीर रूप से बीमार पड़ गये। १४ मार्च १९८६ को आप इलाज के लिए अमरीका गये और वहां आपके इलाज का सम्पूर्ण व्यय केन्द्र सरकार ने वहन किया इलाज के बाद आप स्वदेश लौटे किन्तु आप पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं हो पाये और २९ मई, १९८७ को इस संयमशील नेता ने नई दिल्ली स्थित अपने निवास पर अन्तिम सांस ली।

भूमि सुधार

अप्रैल, १९३९ में श्री चरण सिंह ने कांग्रेस विधायक दल की कार्यकारिणी में एक प्रस्ताव पेश किया जिसमें यह कहा गया था कि एक अच्छी सरकार के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि उसके कर्मचारियों के विचार व उनका दर्शन उस वर्ग के अनुरूप हों जिनके लिए वे प्रशासन चला रहे हैं और इस कारण कुल सरकारी नौकरियों का कम से कम ५० प्रतिशत किसानों के बेटों और उनके आश्रितों के लिए आरक्षित कर दिया जाना चाहिए। परन्तु इस प्रस्ताव पर विचार नहीं किया गया। मार्च १९४७ में उन्होंने इस विषय पर अपने विचारों की व्याख्या करते हुए एक लम्बा तर्क संगत लेख लिखा और इसे कांग्रेस के सदस्यों के साथ-साथ सार्वजनिक विषयों में रुचि रखने वाले अन्य लोगों को भी दिया परन्तु इन प्रयत्नों से कोई लाभ नहीं पहुंचा। देश के सार्वजनिक जीवन में गैर-कृषि क्षेत्र के लोगों का प्रभाव सम्पूर्ण था और वातावरण काफी विद्वेषपूर्ण बन गया था।

१९६१ में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार भारतीय सिविल सेवा तथा भारतीय प्रशासन सेवा के कुल १३४७ सदस्यों में से केवल ११.५ प्रतिशत लोग ही किसान वर्ग से सम्बन्धित थे। श्री चरण सिंह ने १९३९ के ऋण निर्मोचन बिल के प्रतिपादन तथा उसे अन्तिम रूप देने के कार्य में प्रमुख रूप से हिस्सा लिया। इस बिल से ऋण-ग्रस्त किसानों को बहुत राहत मिली। अगस्त, १९३९ में उन्होंने १९ पृष्ठों की एक पुस्तिका और एक लेख लिखा (जो 'नेशनल हेराल्ड में प्रकाशित हुआ) जिसमें उन्होंने बिल के प्रावधानों को स्पष्ट किया और उसके आलोचकों के तर्कों का भी उत्तर दिया। विभिन्न समितियों में हुए बहस के दौरान श्री चरण सिंह तथा उनके साथियों को यह देखकर काफी धक्का पहुंचा कि कांग्रेस समाजवाद दल के जो बड़े-बड़े नेता सार्वजनिक सभाओं में जोरों से किसानों व श्रमिकों के हितों की रक्षा करने का व्रत लेते थे, उन्होंने समितियों में कड़ा साहूकार-समर्थक रुख अपनाया।

भूमि सुधार के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश ने सारे देश का पथप्रदर्शन किया है। इस राज्य में जमींदारी प्रथा को जड़ से उखाड़ा जा चुका है। उत्तर प्रदेश में भूमि के पट्टे का मामला बहुत जटिल था और साथ ही इस राज्य का आकार भी बहुत बड़ा है। इन कारणों से राज्य में जमींदारी उन्मूलन एक अत्यन्त ही कठिन कार्य था। इस भारी कार्य में सफलता का पूरा श्रेय हर तरह से श्री चरण सिंह को ही जाता है। भूमि सुधार से सम्बन्धित विभिन्न कानूनों में सम्मलित प्रत्येक धारणा के जन्मदाता वे ही हैं। उन्होंने इस कार्यक्रम के अलग-अलग पहलुओं को स्पष्ट करने के लिए बीसियों तर्क युक्त लेख लिखे, रेडियो पर वार्ताएं प्रसारित कीं और इस विस्तृत राज्य के प्रत्येक इलाके में विशाल जनसभाओं में अनगिनत बार कई घण्टों तक इस विषय पर भाषण दिया। भूमि सुधार से सम्बन्धित प्रत्येक कानून को इतनी सफाई के साथ प्रतिपादित किया गया और इनके मसौदे इतने स्पष्ट थे कि अन्य राज्यों के विपरीत उत्तर प्रदेश में न्यायपालिका ने इनमें से किसी भी कानून को रद्द नहीं किया।

इस क्षेत्र में श्री चरण सिंह की सभी उपलब्धियों का पूरा विवरण देने के लिए एक पूरे ग्रन्थ की आवश्यकता होगी। परन्तु इनमें से कुछ सफलतायें इस प्रकार हैं।

१ जुलाई, १९५२ को कानून संग्रह ने सम्मिलित के जमींदारी उन्मूलन भूमि सुधार अधिनियम के अन्तर्गत हालांकि उत्तर प्रदेश के सभी मैदानी इलाकों की समस्त भूमि का स्वामित्व सरकार के हाथों में चला गया, फिर भी सभी पुराने भूस्वामियों या जमींदारों को 'भूमिधर' (अर्थात् भूमि के धारक) घोषित किया गया जिसके अनुसार उन्हें ऐसी भूमि जिस पर वे स्वयं खेती कर रहे हों, भूमि के उन टुकड़ों पर स्थित कुओं और वृक्षों और साथ-साथ ऐसे मकान और इमारतें जिन पर उनका कब्जा हो—इन सबका उपयोग करने और उनका हस्तांतरण करने का निर्बन्ध अधिकार दिया गया। सभी काश्तकारों को उन जोतों का 'सिरदार (अर्थात् हल चलाने वाले) घोषित किया गया जिन पर वे हल चला रहे थे। उन्हें कृषि कार्यों, बागवानी तथा पशुपालन के लिए भूमि के उपयोग का पूरा अधिकार दिया गया परन्तु भूमि के हस्तांतरण का अधिकार सीरदारों को नहीं दिया गया। ऐसे सीरदारों को जिन्होंने अपने लगान के दस-गुना के बराबर की रकम सरकार के नाम जमा कर दी, लगान में ५० प्रतिशत कटौती का हकदार बनाया गया और उनकी तरक्की कर 'भूमिधर' का दर्जा दिया गया। राष्ट्रीय योजना आयोग ने अन्य राज्यों को भी इस परियोजना को, जिसे भूमिधर परियोजना कहा गया, अपनाने का सुझाव दिया जिसे लगभग सभी राज्यों ने स्वीकार किया।

सभी जमींदारों या भूस्वामियों सरकार द्वारा गारंटी किये गये बाण्ड के रूप में समान दर पर मुआवजा दिया गया परन्तु छोटे भूस्वामियों को इसके साथ-साथ पुनर्वास अनुदान भी दिया गया जिसकी दर ऐसे भूस्वामियों के लिए कम थी जिनके पास अधिक भूमि थी और उन लोगों के लिए अधिक थी जिनके पास अब थोड़ी सी ही भूमि रह गई थी। कुछ-कुछ इस अनुदान की दर इन लोगों के द्वारा अदा किये गये लगान की

रकम के विपरीत अनुपात में थी। महाजनों के चंगुल से कृषि क्षेत्र को बचाने के लिए एक अलग कदम उठाया गया जिसके अनुसार ऋणों के भार में यथानुपात कमी कर दी गई।

कानून के अन्तर्गत यह तय किया गया कि सीरदारों तथा भूमिधरों द्वारा अदा किये जाने वाले लगान की रकम में अगले ४० वर्षों तक कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा। १९६२ में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा लगान की रकम में ५० प्रतिशत वृद्धि करने के प्रस्ताव का विरोध करने में श्री चरण सिंह ने प्रमुख भूमिका निभाई।

देश भर में बिना इस बात पर ध्यान दिये कि काश्तकार किस किस्म के हैं, भूस्वामियों को व्यक्तिगत खेती के लिए एक निश्चित सीमा तक काश्तकारों द्वारा जोती जाने वाली भूमि के पुनर्ग्रहण का अधिकार दे दिया गया। बम्बई और पंजाब में यह सीमा ५० एकड़ पर निश्चित की गई और हैदराबाद में इसे आर्थिक जोत की अपेक्षा पाँच गुना बड़ी भूमि के बराबर तय किया गया। प्रथम पंचवर्षीय योजना में पुनर्ग्रहण के सिद्धान्त का समर्थन किया गया परन्तु यह सुझाव भी रखा गया कि पुनर्ग्रहण की अधिकतम सीमा पारिवारिक जोत के तीन-गुना के बराबर तय किया जाना चाहिए।

इस सुझाव को लागू करने का परिणाम यह हुआ कि बड़े पैमाने पर काश्तकारों को भूमि से बेदखल किया जाने लगा। इनमें मौरूसी काश्तकार भी शामिल थे जिन्हें अंग्रेजों के शासनकाल से ही भूमि पर स्थाई और पुश्तैनी दखलकारी अधिकार मिला हुआ था। श्री चरण सिंह ने योजना आयोग की सिफारिश को अस्वीकार कर उत्तर प्रदेश में किसी भी काश्तकार को भूमि से बेदखल होने नहीं दिया। इसके विपरीत राज्य में कांग्रेस के कुछ प्रमुख सदस्यों के कड़े विरोध के बावजूद १९५४ में कानून में संशोधन कर उन सभी वर्गों को सीरदारी का स्थाई अधिकार प्रदान कर दिया गया, जिन्हें मालगुजारी के दस्तावेजों में उपकाश्तकार, सीर के काश्तकार, खुदकाश्त या अतिचारी भी माना गया और जिनको जमींदारी

उन्मूलन भूमि सुधार अधिनियम के अन्तर्गत अधिवासियों का दर्जा दिया गया था। १९४७ या १९४८ में जारी किए गए सरकारी आज्ञा के अनुसार इन लोगों की बेदखली पर ही पहले से रोक लगा दी गई थी। इस संशोधन से हरिजनों को अत्यधिक लाभ हुआ क्यों कि राज्य के लगभग ३० लाख अधिवासियों में उनका अनुपात एक-तिहाई था।

कुमायुं क्षेत्र के गैर मौरूसी काश्तकारों को जिन्हें सीरतन कहा जाता है और जिनमें से लगभग सभी अनुसूचित जातियों के सदस्य हैं, प्रमुख स्थानीय नेताओं के विरोध के बावजूद सीरदारों का दर्जा दे दिया गया। इस आशय का एक बिल १९५८ में प्रस्तावित किया गया और इस पर प्रवर समिति की रिपोर्ट अप्रैल-मार्च में श्री चरणसिंह के त्यागपत्र देने से पहले ही प्राप्त हो गई।

जमींदारी उन्मूलन भूमि सुधार नियम के अंकित होते ही सरकार को ऐसी कई शिकायतें प्राप्त होने लगीं कि अधिवासी वर्ग में शामिल बहुत से लोगों के मालगुजारी के दस्तावेजों में या तो दर्ज ही नहीं किया गया या फिर दर्ज होने के बावजूद कुछ काश्तकारों को छल या बल से बेदखल किया जा रहा था और कुछ को पहले बेदखल कर दिया गया था। इस स्थिति को सुधारने के लिये दो उपाय किये गये। जमींदारी उन्मूलन भूमि सुधार अधिनियम की धारा ३४२ के अन्तर्गत जारी किए गए एक सरकारी आज्ञा के अनुसार बेदखल किए गए अधिवासियों को जोत पर दोबारा कब्जा प्राप्त करने के लिए अधिनियम के अंतर्गत दिये गये ६ महीने की अवधि को बढ़ा कर एक वर्ष तक जोत पर कब्जा प्राप्त करने की अनुमति दी गई। दूसरा नवम्बर, १९५२ में उत्तर प्रदेश भूमिसुधार (अनुपूरक) अधिनियम नाम के विधेयक को कानून-संग्रह में अंकित किया गया जिसके अंतर्गत उपखंड अधिकारियों के साथ-साथ इस कार्य के लिये विशेष तौर पर प्राधिकृत कुछ तहसीलदारों को भी यह अधिकार दिया गया कि सक्षिप्त जांच-पड़ताल के बाद वे किसी भी व्यक्ति का कब्जा पाए उसका नाम तत्काल माजगुजारी के दस्तावेजों में चढ़ा दें।

भूतपूर्व जमींदारों को यह अधिकार स्वामित्व के प्रसंग में पहले से ही दे दिया गया था। अब अन्य सभी ग्रामवासियों को भी, चाहे वे काश्तकार हों, श्रमिक हों या शिल्पी उनके अपने मकानों, कूओं और साथ जुड़ी हुई भूमि का और आबादी में उनके वृक्ष हों तो उनका स्वामी घोषित कर दिया गया। इस अधिकार के बदले में उन्हें कोई भी कीमत अदा करने की आवश्यकता नहीं थी। इस प्रावधान से भी एक बार फिर हरिजनों को बहुत लाभ पहुंचा, जिन्हें जमींदार जब चाहे उनके मकान से भी बेदखल कर सकता था।

ऐसी भू को छोड़ कर जो कि कृषि जोत के रूप में पूरी तरह से विभिन्न व्यक्तियों के कब्जे में हो या जिस पर बाग, मकान या कुयें पाये जाते हों, बाकी सारी भूमि सरकार ने अपने हाथों में कर ली और ग्राम या ग्राम समुदाय पंचायत को उसके प्रबन्ध और विकास का उत्तरदायित्व सौंप दिया। एक 'ग्राम समाज पुस्तिका' भी प्रकाशित की गई जिसमें पंचायतों के अधिकारों और कर्तव्यों का विस्तृत विवरण दिया गया और जो कि बाद में अन्य राज्यों में उस विषय में पथ प्रदर्शक के रूप में इस्तेमाल की गई।

इस प्रकार एक व्यक्ति के दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बन्धों में सामन्तवाद के सभी बन्धनों को तोड़ दिया गया। शोषण के एक ही झटके में समाप्त कर दिया गया। उत्तर प्रदेश के विस्तृत ग्रामीण क्षेत्र में कोई जमींदार, लम्बरदार नहीं बचा।

कारखाने, स्कूल, अस्पताल या किसी अन्य सार्वजनिक उद्देश्य के लिए भूमि के अनिवार्य अधिग्रहण के विषय में श्री चरण सिंह ने उत्तर प्रदेश के भूमि अधिग्रहण कानून पुस्तिका में इस आशय का एक नियम जोड़ दिया कि यदि उस स्थान से आध मील के घेरे में कोई ऊसर भूमि, अर्थात् ऐसी भूमि जो कृषि कार्यों के लिए अयोग्य है, उपलब्ध हो तो कृषि योग्य भूमि का अधिग्रहण नहीं किया जा सकता। लगभग पन्द्रह वर्षों के पश्चात् भारत सरकार ने भी अपने भूमि अधिग्रहण अधिनियम में भी इसी तरह का संशोधन कर उत्तर प्रदेश का अनुसरण किया।

राज्य के कुछ हिस्सों में, विशेषकर शहरों में, जर ए चहरूम की प्रथा पाई जाती थी जिसके अन्तर्गत भूस्वामी या किसी इमारत का पट्टादाता इमारत के क्रेता या विक्रेता से उसकी कीमत का एक अंश, साधारणतया एक चौथाई भाग वसूल कर सकता था। इस प्रथा को समाप्त कर दिया।

पूर्वक्रय कानून को, जिसके अनुसार भूस्वामी को किसी भी हिस्सेदार द्वारा भूमि के किसी अन्य व्यक्ति को बेचने के हकशफा का अधिकार प्राप्त था, अब खत्म कर दिया गया। इस कानून के कारण मुकदमेबाजी तथा भ्रष्टाचार बढ़ गये और इसकी समाप्ति से किसानों को बहुत राहत मिली।

जमींदारी उन्मूलन भूमि सुधार अधिनियम की धारा १६८ में यह प्रावधान रखा गया था कि भूमि प्रबन्ध समिति द्वारा खेती के लिए पट्टे पर दी जाने वाली भूमि को प्राप्त करने का शिक्षण संस्थाओं के बाद भूमिहीन लोगों के वर्ग को ही अधिकार होगा। साथ ही जब कि अन्य उम्मीदवारों तथा भूमि प्राप्त करने वालों को इस भूमि के लिए पुश्तैनी दर पर निर्धारित लगान के दस गुना के बराबर की रकम की अदायगी करनी थी, अनुसूचित जातियों के किसी भी सदस्य से यह रकम नहीं ली जानी थी। इसी धारा के नियमों में भूमि प्रबन्ध समिति की अद्दी भूमि के बंटवारे में भूमिहीन कृषि श्रमिकों को प्राथमिकता दिये जाने की भी व्यवस्था की गई थी।

जमींदारी उन्मूलन अथवा भूस्वामी काश्तकार सम्बन्धों की समाप्ति और सारे राज्य में काश्त की समानता के लाये जाने से अब जोतों की चकबन्दी करने का कार्य आसान हो गया। अतः श्री चरण सिंह ने बिना समय नष्ट किये इसके लिए आवश्यक कानून बना दिया और सम्बन्धित कर्मचारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की परन्तु समाजवादी दल के नेताओं तथा श्री चरण सिंह के ही कुछ साथियों ने चकबन्दी कार्यक्रम का विरोध किया। उन्होंने यह आरोप लगाया कि यह परियोजना लोगों को अप्रिय लगी और इससे कांग्रेस सरकार की बदनामी होने का भय था। १९५९

में श्री चरण सिंह के त्यागपत्र देने के बाद डा० सम्पूर्णानन्द के नेतृत्व में राज्य सरकार ने राजस्व विभाग में श्री चरण सिंह के उत्तराधिकारी ठाकुर हुकम सिंह के एक प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, जिसके अन्तर्गत इस कार्यक्रम को लागू न करने का सुझाव दिया गया था। परन्तु एक महीने में ही किसानों के विरोध तथा राष्ट्रीय योजना आयोग द्वारा कार्यक्रम को दोबारा आरम्भ करने के आग्रह पर सरकार को इस निर्णय को रद्द करना पड़ा। इस उदाहरण से स्पष्ट है कि श्री चरण सिंह के सहयोगियों के आम जनता की समस्याओं की कितनी जानकारी थी और उनके लिए वह क्या कुछ कर सकते थे। आज यह बात सर्वसम्मति से मानी जाती है कि जोतों की चकबन्दी राज्य के किसान वर्ग के लिए एक वरदान है।

लगान वसूल करने वालों या बड़े भूस्वामियों की आय पर 'कर' लगाने के उद्देश्य से श्री चरण सिंह ने कृषि आयकर अधिनियम को, जिसे १९४८ में बनाया गया था, रद्द कर दिया। जहाँ तक भूस्वामियों का सम्बन्ध था १९५२ में जमींदारी उन्मूलन के बाद यह अधिनियम बेकार हो गया था और इससे भ्रष्टाचार के बढ़ने के साथ-साथ उन लोगों को परेशानी हो रही थी जो कि अपनी भूमि पर वास्तव में खेती कर रहे थे। इसके स्थान पर श्री चरण सिंह ने बड़े कृषि जोतों के कराधान का अधिनियम बनाया जो कि किसानों के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ क्यों कि यह भ्रष्टाचार और परेशानी से उनको बचाता था।

सन् १९५९ में श्री चरण सिंह के इस्तीफा देने के बाद बड़े जोतों के इस अधिनियम के स्थान पर एक अधिकतम सीमा आरोपण अधिनियम बनाया गया जिसका स्वरूप ऐसा था कि इस नियम के अन्तर्गत भूमिहीन लोगों के बीच बांटने के लिए उपलब्ध भू-क्षेत्र में कमी हो गई। तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने बड़ी जोत के स्वामियों को अपनी भूमि को रिश्तेदारों में बांट देने के लिए पर्याप्त समय दे दिया। इससे न केवल सरकार काफी अधिक आय की प्राप्ति से वंचित रह गई, बल्कि सरकारी खजाने पर मुआवजों के रूप में भारी बोझ पड़ा।

पटवारियों की सेवाएँ समाप्त

एक तरफ अभी जमींदारी उन्मूलन भूमि सुधार अधिनियम लागू किया ही गया था और परिणाम स्वरूप आवश्यक प्रक्रियाओं का प्रबन्ध किया जा रहा था और दूसरी तरफ राज्य के २८००० पटवारी, जो कि मालगुजारी प्रशासन की एक महत्वपूर्ण कड़ी थे, वेतन में वृद्धि तथा अन्य सुविधाओं के लिए आन्दोलन कर रहे थे। श्री चरण सिंह ने उन्हें एक महीने तक और प्रतीक्षा करने की सलाह दी परन्तु इससे पहले ही पटवारियों ने सामूहिक रूप से इस्तीफा दे दिया। उनका विचार था कि इससे राज्य में मालगुजारी प्रशासन ठप्प हो जायेगा और फलस्वरूप राज्य सरकार घुटने टेक देगी। श्री चरण सिंह ने पटवारियों के इस्तीफों को तुरन्त स्वीकार कर लिया और तुरन्त 'लेखपालों' की संस्था शुरु की। लेखपालों को पटवारियों' की अपेक्षा कम अधिकार दिये गये। श्री चरण सिंह ने कांग्रेस पार्टी के ऊँचे स्तरों पर कड़े विरोध का सामना किया परन्तु फिर भी पीछे नहीं हटे। उन्होंने अपने सहयोगियों और नेताओं को बताया कि यदि सरकार अपनी बात पर अड़ी रहे तो अगले दस वर्षों तक सरकारी कर्मचारी हड़ताल करने या सरकार को'धमकियाँ देने के बारे में सोचना भी बन्द कर देंगे। अगले १३ वर्षों के लिए उनकी भविष्य वाणी सही साबित हुई. अर्थात् १९६६ तक जब श्रीमती सुचेता कृपलानी के दिनों में राज्य के अराजपत्रित कर्मचारियों ने हड़ताल कर नौ सप्ताह के लिये लगातार प्रशासन व्यवस्था को ठप्प कर दिया।

लाखों छोटे-बड़े जमींदारों को दिये जाने वाले मुआवजे तथा पुनर्वास अनुदान की रकम के निर्धारण तथा उसकी अदायगी के लिए (यह रकम लगभग दो हजार करोड़ रुपये थे) एक सस्ते और प्रभावकारी संगठन की स्थापना की गई जिसने अपना कार्य रिकार्ड समय में पूरा किया। इसके अतिरिक्त लगान की वसूली के लिए भी एक संगठन बनाया गया जो कि आज तक बिना किसी कठिनाई के सुचारु रूप से काम करती आई है और जिस पर राज्य सरकार को बहुत कम रकम व्यय करना पड़ता है।

कृषि प्रशासन के नये ढांचे की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए

भूमि अभिलेख पुस्तिका में सुधार किया गया। तहसीलों को पुनर्गठित किया गया और विभिन्न जिलों के कई अन्तःक्षेत्रों को, जो कि सदियों से कायम थे और जिनकी वजह से प्रशासन में काफी गड़बड़ पैदा होती थी, समाप्त कर दिया गया।

उत्तर प्रदेश में भूमि सुधार नियमों की आज वही स्थिति है जहाँ उसे १९५९ में श्री चरण सिंह ने छोड़ा था।

जमींदारी उन्मूलन और चकबन्दी

जमींदारी उन्मूलन तथा भूमि की चकबन्दी दोनों ही निसंदेह कृषि उपज को बढ़ाने में अत्यन्त सहायक थे और इन उपायों का श्रेय श्री चरण सिंह को ही जाता है। परन्तु इनके अलावा भी उन्होंने राज्य के कृषि क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसका वर्णन भी यहाँ हम भूमि सुधार की तरह संक्षिप्त में ही कर सकते हैं।

१९५४ में उन्होंने कानून-संग्रह में भूमि संरक्षण अधिनियम को शामिल किया। देश में शायद वे पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने इस तरह का कदम उठाया था। भूमि संरक्षण को कानपुर के राजकीय कृषि महाविद्यालय के दो वर्ष के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में एक अलग विषय के रूप में आरम्भ करवा कर एक बार फिर उन्होंने इस क्षेत्र में सारे देश में पहल की। १९५४ के इस अधिनियम को, जिसको उन्होंने १९६१ में संशोधित कर भूमि व जल संरक्षण अधिनियम का नाम दिया था, इतनी बुद्धिमत्ता के साथ तैयार किया गया और इतनी कुशलता के साथ लागू किया गया कि इसकी न केवल समस्त किसान वर्ग न बल्कि राजनीतिक विपक्षियों और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की। यहाँ यह बताना अनुचित नहीं होगा डा० सम्पूर्णानन्द १९५४ के अन्त में मुख्य मंत्री पद को सम्भालने के बाद श्री चरण सिंह से कृषि विभाग का भार वापस ले लिया गया था। भूमि संरक्षण से सम्बन्धित विभिन्न नियमों को अंतिम रूप देने में श्री चरण सिंह ने कृषि विभाग से भार-मुक्त होने के बाद चार वर्ष तक परिश्रम किया और तब जाकर कहीं उन्हें यह सफलता प्राप्त हो सकी।

भूमि परीक्षण परियोजना भी, जो कि राज्य में आज तक कार्यशील है, श्री चरण सिंह के ही दिमाग की उपज थी और उन्होंने इसको तैयार किया था। परियोजना के अन्तर्गत काफी दूरदर्शिता के साथ इस बात का प्रबन्ध किया गया कि सरकारी साधनों और प्रयत्नों को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए इसमें सरकार के साथ-साथ निजी क्षेत्र के कृषि महाविद्यालयों के साधनों का भी लाभ उठाया जा सके।

१९६३ तक कृषि के लिए आवश्यक पदार्थ केवल सहकारी समितियों के सदस्यों को ही उपलब्ध थे जिनका अनुपात सभी किसानों का केवल ४० प्रतिशत था। ६० प्रतिशत बचे किसानों को भी यह सेवा प्रदान करने के लिए श्री चरण सिंह ने एक कृषि संभरण संगठन की स्थापना की। इस संगठन ने अपने संस्थापक की आशाओं को कुशलतापूर्वक पूरा किया है।

१९५८ से श्री चरण सिंह जनसभाओं तथा सदन में दिये गये भाषणों में इस बात पर विशेष जोर देते रहे थे कि कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि किए बिना देश का आर्थिक विकास असंभव है और यह कि गैर-कृषि क्षेत्रों की समृद्धि कृषि क्षेत्र पर निर्भर करती है, इसका विलोम नहीं। परन्तु उनकी बात पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। श्री चरण सिंह ने यह विचार प्रस्तुत किया कि विकसित या समृद्ध कृषि क्षेत्र से ही —

- उद्योगों के पहियों को चलाते रहने के लिए कच्चा माल प्राप्त होता है।
- कारखानों को चलाने, वाणिज्य, परिवहन तथा अन्य सेवाओं, जैसे बिजली और शिक्षा और सड़कें, रेलवे लाइन, बन्दरगाह और कारखानों के निर्माण कार्य के लिए श्रम शक्ति प्राप्त होती है।
- ऊपर बनाए गए विभिन्न गैर-कृषि क्षेत्रों में काम करने वाले श्रमिकों के लिए आवश्यक खाद्य सामग्री प्राप्त होती है।
- गैर-कृषि क्षेत्र की वस्तुओं और सेवाओं की बाजार मांग उत्पन्न होती है और जितना कृषि क्षेत्र में उत्पादन बढ़ेगा उतनी ही अधिक क्रय

शक्ति इस क्षेत्र में लोगों को प्राप्त होगी और गैर-कृषि क्षेत्र के बाजार में विस्तार होगा; और अन्त में;

☼ अनिवार्य गैर कृषि पदार्थों तथा मशीनों के आयात के लिए आवश्यक विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

कृषि क्षेत्र में उत्पादन की वृद्धि के अतिरिक्त श्री चरण सिंह आर्थिक विकास के लिए एक अन्य आवश्यक शर्त पर भी पिछले कई वर्षों से जोर देते आए हैं—मानवीय साधन में सुधार। भौतिक साधनों की सहायता के बिना आर्थिक विकास लाना संभव नहीं है पर इस कार्य को इस स्थिति में भी पूरा नहीं किया जा सकता जब देश में सही किस्म के कुशल व्यक्ति उपलब्ध न हो। जापान के आर्थिक विकास में भौतिक साधनों की अपेक्षा मानवीय साधन अधिक महत्वपूर्ण थे। हमारे देशवासी भाग्यवादी हैं और संसार को मायाजाल समझते हैं। इस कारण वे कठिन परिश्रम करने के लिए तैयार नहीं रहते। यह भी खेद की बात है कि हममें निष्ठा और ईमानदारी की भी कमी है। अपनी इच्छा से कोई भी अपना कर्तव्य निभाने को तैयार नहीं होता, लोगों से कर्तव्य पूरा करवाने के लिए उनके काम पर हमेशा निगरानी रखना आवश्यक होता है। अधिकारों और मांगों पर सब जोर देते हैं पर कर्तव्यों की कोई बात भी नहीं करता। इस्पात, ऊर्जा, पूंजी, तकनीकी जानकारी इत्यादि उस समय तक बेकार हैं जब तक हमारी जनता के विचारों और रुख में परिवर्तन-मनोवैज्ञानिक परिवर्तन—नहीं होता। इसके लिए देश में लोगों को शिक्षित करने के लिए एक अभियान शुरू करना होगा। जिसे पूरा करने में दो नहीं तो कम से कम एक पीढ़ी अवश्य लग जाएगी। श्री चरण सिंह ने कई वर्ष पूर्व तत्कालीन प्रधान मंत्री को लिखे एक पत्र में कहा कि योजना आयोग को भविष्य में मानवीय साधनों के सुधार, सही किस्म की शिक्षा आदि से सम्बन्धित कार्यक्रमों पर कम से कम कुछ ध्यान अवश्य देना चाहिए। परन्तु इसका कोई लाभ नहीं हुआ। पं० नेहरू की आर्थिक विकास के लिए भौतिक साधनों पर अधिक आस्था थी।

पिछले काफी समय से अर्थात् १९६४ से वे इस बात का जोरदार समर्थन करते आए हैं कि बड़े किसानों से अधिप्राप्ति लेवी तो वसूल किया जाना चाहिए लेकिन खाद्य क्षेत्रों या जोतों की प्रथा को समाप्त कर देना चाहिए। जब तक देश में उत्पादन की पर्याप्त वृद्धि नहीं होती। हमें देश में ही प्राप्त किए गए खाद्यान्न अतिरिक्त प्रयोग से खाद्य समस्या का सफलता से सामना कर सकते हैं। खाद्यान्नों का आयात केवल उन वर्षों में ही किया जाना चाहिए जब कि देश में उपज बहुत कम हो।

इसी प्रकार सहकारिता विभाग, पुलिस विभाग और वन विभाग के कार्यकाल में चौधरी साहब ने अभूतपूर्व सुधार किया।

गरीबों, दलितों और हरिजनों के शुभ चिन्तक

नवम्बर १९५४ से मार्च १९५९ तक राजस्व मंत्री रहते हुए, इस बात का निश्चित प्रबन्ध करने के लिए कि जिला प्रशासनों, लेखपालों तथा अमीनों के दफ्तरों में चपरासियों के पदों में हरिजनों का अनुपात कम-से-कम १८ प्रतिशत हो सके, चौधरी साहब ने विभिन्न जिलों को सरकार तथा राजस्व मंडल की ओर से कई आदेश तथा सरकुलर जारी करवाये। लेकिन सरकारी स्तर पर इसका बहुत विरोध हुआ। और बहुत से स्मरण-पत्रों के बावजूद केवल आंशिक सफलता ही प्राप्त हुई। दिसम्बर १९५३ में श्री चरण सिंह ने एक सरकारी आदेश जारी किया ताकि उनके आधीन विभागों जैसे कृषि, पशु पालन तथा वन, में चतुर्थ श्रेणी की सभी खाली नौकरियाँ अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों को मिलें; जब तक कि उनका कोटा १८ प्रतिशत न पहुंच जाय। लेकिन कुछ मास बाद नियुक्त विभाग ने बताया कि यह आदेश संविधान के विरुद्ध है, अतः इसे वापिस ले लिया गया। उनकी यह सिफारिश कि कम वेतन पाने वाले सरकारी कर्मचारियों को अधिक वेतन पाने वाले कर्मचारियों की अपेक्षा अधिक मँहगाई भत्ता मिलना चाहिए, हाल ही का एक उदाहरण है। ऐसा विचार रखने वाले वे, शायद, देश के पहले राजनैतिक नेता थे।

प्रशासनिक तथा सामाजिक सुधार

प्रशासन में सुधार लाने के लिए तथा देश के हित के लिए उन्होंने बहुत से अन्य विचार तथा योजनाएं प्रस्तुत की थी, लेकिन या तो इन पर कोई विचार ही नहीं किया गया या जनहित की काफी हानि होने के पश्चात् ही इन पर विचार किया गया। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

१९५० के दशक के मध्य से वे, विशेषतया पूर्वी जिलों के लिये, छोटी सिंचाई परियोजनाओं की उपयोगिता पर बल दे रहे थे, लेकिन किसी ने इसकी सुनवाई नहीं की। इसके विपरीत, उनके विरुद्ध कानों कान एक प्रचार प्रारम्भ हुआ जिसमें यह कहा गया कि वे नहीं चाहते कि राज्य के पश्चिमी भागों के अतिरिक्त किसी अन्य भाग में पैसा लगाया जाय। अन्ततः सरकार को उनके विचारों के अनुकूल अपना रुख बदलना पड़ा, लेकिन यह हुआ बहुत देर बाद १९६४ में। इस अवधि में करोड़ों रुपया पूंजी व्यय के रूप में अलाभकारी परियोजनाओं पर खर्च हो चुका था जिसके कारण सिंचाई विभाग सरकारी खजाने के लिए एक भार बन गया था। अंग्रेजों के जमाने में सिंचाई विभाग ने लगभग एक करोड़ पिच्चहत्तर लाख रुपये की शुद्ध वार्षिक आय कमायी : १९६७ में इसने साढ़े आठ करोड़ रुपये की वार्षिक हानि दिखाई।

जाति प्रथा हिन्दू या भारतीय समाज का सबसे बड़ा दोष है। अप्रैल १९३९ में श्री चरण सिंह ने कांग्रेस संसदीय दल के सम्मुख एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें कहा गया कि शिक्षा सम्थाओं या सार्वजनिक सेवाओं में प्रवेश देते समय हिन्दू उम्मीदवारों की जाति के बारे में नहीं पूछना चाहिए। केवल यह पूछना चाहिए कि उम्मीदवार अनुसूचित जाति का है या नहीं। उन्हीं के अनुरोध पर ही १९४८ में सरकार ने यह निर्णय लिया था कि भूमि रिकार्डों में काश्तकारों की जाति न लिखी जाय। इस सम्बन्ध में सरकार के कर्त्तव्य के बारे में श्री चरण सिंह के विचार क्रांतिकारी प्रायः थे। संविधान में एक संशोधन का सुझाव देते हुए १९५४ में उन्होंने पंडित नेहरू को लिखा कि राज्यों की राजपत्रित सेवाओं में उन्हीं

नवयुवकों को भर्ती करना चाहिए जो अपनी जाति के बाहर विवाह करने के लिए तैयार हों (और केन्द्रीय राजपत्रित सेवाओं मे उन नवयुवकों को जो कि अपने भाषा वर्ग के बाहर विवाह करने के लिए तैयार हों) लेकिन इसके कुछ परिणाम न निकले। पंत जी के समय से मृदु उपाय के रूप में वे ये सुझाव देते आ रहे हैं (और नोट लिखते आ रहे हैं) कि उन शिक्षा संस्थाओं को जिनका कि नाम किसी विशेष जाति के साथ जुड़ा हुआ है, वित्तीय सहायता समाप्त कर देनी चाहिए। क्यों कि इस संस्थाओं में पढ़ रहे हमारे बेटे-बेटियाँ धीरे-धीरे जन्म के सयोग पर आधारित ऊँच-नीच के विचारों में प्रभावित हो रहे हैं। लेकिन मंच से इन जोशीली घोषणाओं कि कांग्रेसजन एक जातिहीन समाज के लिए काम कर रहे हैं के बावजूद भी उनसे किसी ने सहमति प्रकट न की।

१९५२ से वे इस बात का निवेदन करते आ रहे थे कि एम. डी. ओ. के मुख्यालयों को जिलों से हटाकर तहसील में लाया जाय ताकि छोटे-छोटे कामों के लिए लोगों का समय बर्बाद न हो, भ्रष्टाचार में कमी हो, कार्य तेज गति से चलें। प्रत्येक ने सहमति प्रकट की लेकिन आवश्यक वित्त व्यवस्था न हो सकी।

शायद श्री चरण सिंह ही उत्तर प्रदेश के प्रथम राजनैतिक नेता थे जिन्होंने जनसंख्या वृद्धि को रोकने के उपायों के बारे में आवाज उठायी। १९५६ में बस्ती जिले में कांग्रेस कार्यकर्ताओं को भाषण देते समय उन्होंने उनसे कहा था कि वे यह कार्य अपने हाथ में ले और लोगों से उनके अपने ही हित में यह कार्यक्रम अपनाने के लिए अनुरोध करें। राज्य सरकार ने इस सम्बन्ध में काफी देर बाद १९६४ में सक्रिय रुचि ली।

काला धन, अर्थात् काला बाजारियों द्वारा तथा अन्य गैर-कानूनी तरीकों से कमाया गया धन, जो कि देश की कुल करंसी का एक तिहाई भाग है, मूल्यों में अनावश्यक वृद्धि के दो कारणों, जिसमें दूसरा कम उत्पादन है, में से एक है, जिससे लोगों को कठिनाइयाँ आई हैं, संगठित मजदूरों तथा सरकारी कर्मचारियों ने अधिकाधिक मंहगाई भत्ते की मांग

की है, और अनुशासन, कानून तथा व्यवस्था को बनाये रखने में समस्याएँ पैदा हुई हैं। जून १९६६ में श्री चरण सिंह ने काला धन के विमुद्रीकरण की एक योजना तैयार की और उसे भारत सरकार के सदस्यों के सामने प्रस्तुत किया, उनको लिखा तथा व्यक्तिगत रूप में मिले लेकिन कोई फायदा न हुआ। उन्होंने इस बात की चेतावनी भी दी थी कि यदि मूल्यों को नीचे न लाया गया, जो कि विमुद्रीकरण द्वारा ही सम्भव हो सकता था तो कांग्रेस की १९६७ के आम चुनाव में भारी हार होगी लेकिन किसी ने सुनवाई नहीं की। शायद काले धन के स्वामियों का प्रभाव बहुत अधिक था। इसके बदले रुपये का उन्मूल्यन कर दिया गया। इसके क्या परिणाम हुए, सबको मालूम है।

चौधरी साहब की दूरदर्शिता

उत्तर-पूर्व भारत में १९५३ में नागा शस्त्र विद्रोह किए हुए थे। फौज का एक दस्ता उस क्षेत्र भेजा गया लेकिन जैसी कि रिपोर्ट थी उनको स्पष्ट आदेश थे कि वे केवल अपनी रक्षा के लिए ही गोली चलाएँ। लगभग हर चौथे महीने भारत सरकार बयान जारी करके लोगों को आश्वासन दे रही थी कि स्थिति में सुधार हो रहा है और यह शीघ्र ही सामान्य हो जाएगी। लेकिन वास्तविक तथ्य यह था कि स्थिति प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। १९६४ में हमने उनसे युद्ध-विराम समझौता किया और जब से अब तक उसकी अवधि बढ़ाते चले आ रहे हैं। नागाओं ने इसका पालन केवल उल्लंघन द्वारा ही किया। फलस्वरूप अब उनकी फौज पहले से अधिक प्रशिक्षित, अधिक सुसज्जित तथा अधिक संख्या में है। दोनों पक्षों में बातचीत का कोई आधार न था। नागा एक क्षण के लिए भी संघ का भाग बने रहने को राजी न थे। फिर भी शान्ति मिशन का छल बनाये रखा गया और पादरी स्काट, जो कि विद्रोह के मुख्य प्रेरणास्रोत थे उनके साथ मिशन के एक सदस्य के रूप में वर्षों तक संधि-वार्ता चलती रही। १९५९ से श्री चरणसिंह भारत सरकार के सदस्यों को लिखते चले आ रहे थे कि वे साहस जुटाने के लिए स्थिति को वास्तविक

रूप में देखें और जैसे कि विश्व के इतिहास में विद्रोह कुचले गये हैं, उसी प्रकार इस विद्रोह को भी कुचल दें इस सम्बन्ध में वे प्रधान मन्त्री, गृहमंत्री तथा एक वरिष्ठ नेता से मिल चुके थे और उनसे इस मामले पर विचार विमर्श किया लेकिन परिणाम कुछ नहीं निकला। उन्होंने उनको बताया कि विश्व में कोई भी हमें इस उदारता तथा सहिष्णुता के लिये धन्यवाद या बधाई नहीं देने जा रहा है, बल्कि हमें अपने देश का प्रशासन चलाने या इसकी अखंडता या सीमाओं की रक्षा करने के अयोग्य तथा कमजोर समझा जाएगा। दिल्ली को भेजे गये अपने एक पत्र में श्री चरण सिंह ने पहले से ही बता दिया था कि नागा चीन व पाकिस्तान से मिल सकते हैं और उचित समय पर हमारी पीठ में छुरा भौंक सकते हैं। नागा समस्या को सुलझाने में असफलता ने मिजों तथा कुकियों के विद्रोह को जन्म दिया है और एक पृथक् पहाड़ी राज्य की मांग को बल दिया है।

१९६३ में उन्होंने उस समय भारत के गृह मंत्री पाकिस्तानी एजेन्टों और घुसपैठियों तथा असम और उसके आस-पास में र्य कर रहे विदेशी मिशनों की गतिविधियों के बारे में एक विस्तृत नोट भेजा। इसकी एक प्रतिलिपि श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को भी भेजी गई, लेकिन किसी के पास आवश्यक साहस या आवश्यक दूरदर्शिता नहीं थी। उस समय देश का उत्तर-पूर्व क्षेत्र वस्तुतः ज्वलित था चीनी सैनिक नागालेंड में घुस आये थे और किसी को आश्चर्य नहीं होता यदि यह एक दूसरा ही वियतनाम बन जाता। देश के शासकों में दूरदर्शिता स्पष्ट विचार तथा दृढ़ता की इस कमी के कारण हमारी भावी पीढ़ियों को भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

अक्तूबर १९४७ में पाकिस्तान द्वारा कश्मीर घाटी पर हमले के बारे में श्री चरण सिंह ने प्रधान मंत्री को पहले से आगाह कर दिया था। लेकिन पंडित नेहरू ने इस बात की कल्पना भी न की थी कि ऐसा भी है तो भारत कोई सैनिक सहायता भेज सकेगा। तिब्बत, जिसकी सीमाएं हमसे मिलती हैं, वहाँ चीनियों की उपस्थिति के परिणामों के बारे में भी

उन्होंने उप-प्रधानमंत्री को आगाह किया था। बाद में मालूम पड़ा कि सरदार पटेल का भी यही विचार था लेकिन अव्यावहारिक विचारों से उत्पन्न पंडित नेहरू के विरोध के कारण वे कुछ भी करने में असमर्थ थे।

राज्य को दी गई श्री चरणसिंह की ठोस तथा रचनात्मक सेवाओं की तुलना नहीं की जा सकती।

महाप्रयाण

शोक श्रद्धांजलियाँ

२६ मई, १९८७ को चौधरी साहब के निधन पर सम्पूर्ण देश मानो शोक सागर में डूब गया। देश के नेता तथा पदाधिकारी और समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि उनके निवास पर उनके अन्तिम दर्शनों के लिए वहाँ गये। पूरे देश से चौधरी साहब को शोक श्रद्धांजलियों का तांता लग गया। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केन्द्रीय मंत्रीमंडल के सदस्य, राज्यों के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री तथा सहस्रों गणमान्य व्यक्तियों की ओर से श्रद्धांजलियाँ प्राप्त हुई। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :—

राष्ट्रपति—ज्ञानी जैलसिंह ने चौधरी चरण सिंह के पार्थिव शरीर पर फूल मालाएँ चढ़ायीं। उनके साथ उनकी पुत्री डा० मंजीत कौर भी थीं। श्री जैलसिंह ने श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद कहा—'चौधरी चरण सिंह के निधन से मुझे बहुत सद्मा पहुंचा है' वह प्रधानमंत्री तथा अन्य ऊँचे पदों पर रह चुके थे।

चौधरी चरण सिंह ने हमेशा ही गरीबों, ग्रामीणों तथा किसानों की आवाज बुलन्द की तथा जीवन पर्यन्त वह इन वर्गों की आर्थिक हालत में सुधार के लिए कोशिश करते रहे।

राष्ट्रपति ने कहा कि चौ० चरण सिंह का विचार था कि गांधी जी के आदर्शों पर चलकर ही देश में प्रगति हो सकती है। उनके निधन से एक बहुत बड़ी रिक्तता आ सकती है।

राष्ट्रपति ने कहा है कि चौधरी साहब वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी, चरित्रवान तथा ईमानदार व्यक्ति थे। उनके निधन से राष्ट्र को भारी क्षति हुई है।

वेंकटरमण—उप-राष्ट्रपति आर० वेंकटरमण ने श्री चरण सिंह को भारतीय किसानों का मसीहा बताया है।

जिनेवा से भेजे एक शोक संदेश में उप-राष्ट्रपति ने कहा कि श्री चरण सिंह भारतीय कृषि की उन्नति और इसकी समस्याओं से बहुत गहरे जुड़े हुए थे।

उन्होंने कहा कि भूतपूर्व प्रधानमंत्री एक देशभक्त समर्पित स्वतन्त्रता सेनानी और कुशल प्रशासक थे।

प्रधानमंत्री—प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने चौधरी चरण सिंह के निधन पर अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की है।

प्रधानमंत्री ने एक शोक संदेश में चौधरी साहब का राष्ट्रीय आंदोलन का प्रमुख नेता बताते हुए कहा कि वे अपनी सादगी तथा निष्ठा के लिये याद किये जाते रहेंगे।

श्री गांधी ने कहा कि उनके निधन से देश ने एक सम्मानित तथा समर्पित नेता खो दिया। वे महात्मा गांधी के जीवनकाल में ही राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल थे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि चौधरी साहब उत्तर प्रदेश में कांग्रेस के कई उच्च पदों पर रहे। बाद में उन्होंने अपनी खुद की पार्टी बना ली। केन्द्र में उन्होंने गृहमंत्री तथा प्रधानमंत्री के रूप में एक अमिट छाप छोड़ी।

श्री गांधी ने कहा कि श्री चरण सिंह को उनकी सादगी तथा एक निष्ठा लगन के लिए सदा याद किया जायेगा।

श्री गांधी ने उनके परिवारीजनों के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की।

संजीव रेड्डी—भूतपूर्व राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने श्री चरण-सिंह को महान नेता बताया और कहा कि वे जीवन भर ईमानदारी से जनता की सेवा में जुटे रहे।

श्री रेड्डी ने श्री चरणसिंह के आवास पर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि प्रदान की। उन्होंने कहा कि आज चारों ओर भ्रष्टाचार की बातें हो रही हैं, श्री चरण सिंह पूरी तरह बेदाग रहे।

श्री रेड्डी ने कहा कि संकट के समय मैंने श्री चरण सिंह को प्रधान-मंत्री बनाया था, हालांकि कुछ लोग इस निर्णय की आलोचना करते हैं। मुझे अपने निर्णय पर कोई अफसोस नहीं है। मैंने सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को प्रधानमंत्री पद के लिए चुना था।

उन्होंने कहा कि श्री चरण सिंह एक संयमशील नेता थे और हमेशा किसानों के हितों की रक्षा के लिए प्रयत्नशील थे।

एन. डी. तिवारी—विदेशमंत्री नारायण दत्त तिवारी ने कहा कि आजादी की लड़ाई लड़ने वालों की एक पीढ़ी उठ गयी है, जिसकी पूर्ति बहुत मुश्किल है। चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश में जमींदारी प्रथा का अन्त करके क्रान्तिकारी कदम उठाया था। उन्होंने देश के गरीबों और ग्रामीण विकास के महत्व में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

त्रिपाठी—कांग्रेस (इ) नेता कमलापति त्रिपाठी ने चौधरी चरणसिंह के निवास स्थान जाकर शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। उन्होंने कहा कि श्री चरण सिंह के निधन के कारण हुई क्षतिपूर्ति कभी नहीं हो सकती। श्री चरण सिंह ईमानदार, महान देशभक्त व गरीबों के हितैषी थे। किसानों की उन्नति के लिए उन्होंने बहुत कार्य किये। श्री त्रिपाठी ने कहा कि चौधरी चरण सिंह देश की राजनीति पर एक अमिट छाप छोड़ गये हैं।

राजेश्वर राव—भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने उनके निधन को दुखद बताया और कहा कि उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ अन्तिम क्षण तक देश की सेवा की। पार्टी के महासचिव श्री राजेश्वर राव ने अपने संदेश में कहा है कि उनके विचारों से मतभेद हो सकता है लेकिन उनकी ईमान-दारी और निर्भयता की सभी सराहना करते हैं।

देवीलाल—हरियाणा प्रदेश लोकदल (ब) के अध्यक्ष देवीलाल ने

श्री चरण सिंह के निधन पर किसानों के लिये अपूरणीय क्षति बताया है। उन्होंने कहा कि देश के किसानों और गरीब आदमी की जिस लड़ाई को श्री सिंह ने आगे बढ़ाया उसी को और आगे ले जाना उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

लोकदल (ब) के नेता शरद यादव ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का निधन देश के कमजोर वर्गों के लिये सबसे बड़ी क्षति है। वह एक महान् गांधीवादी नेता थे।

मार्क्सवादी—मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वाधीनता संग्राम में उनके योगदान की सराहना करते हुए कहा कि ग्रामीण भारत के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

रघुकुल तिलक—राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल ने कहा कि वह आम आदमी की आकांक्षाओं के प्रतीक थे।

एस. वी. चह्वाण—महाराष्ट्र के मुख्यमत्री शंकर राव चह्वाण ने कहा कि देश ने ऐसा नेता खो दिया है जो जीवन भर किसानों के लिए संघर्ष करता रहा।

वीरभद्र सिंह—हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री चरणसिंह ने अपना सारा जीवन ग्रामीण पुनर्निर्माण के लिये समर्पित कर दिया। केन्द्रीय योजना राज्यमंत्री सुखराम ने उन्हें एक अच्छा सांसद और राजनेता बताया।

जनवादी पार्टी के नेता 'चटर्जी व यादव' ने कहा कि भारतीय राजनीति में किसानों की समस्याओं को इतनी गंभीरता से नहीं उठाया जितनी गंभीरता से चरण सिंह ने उठाया।

वी. पी. सिंह—भूतपूर्व रक्षा मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहा कि चौधरी चरणसिंह के निधन से एक महान देशभक्त हम लोगों के बीच से उठ गया। उन्होंने कहा कि उनकी ईमानदारी, प्रशासनिक कुशलता और किसानों के प्रति सहानुभूति एक मिसाल बन गयी है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह सच्चे मायने में भूमिपुत्र थे। और इस रूप में

सदैव वे हम लोगों के बीच रहेंगे ।

डा० बलराम जाखड़—लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड़ ने चौधरी साहब के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि भारत ने एक महान देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी और गरीबों का सेवक खो दिया है ।

उन्होंने कहा कि ऐसा आदमी कभी-कभी पैदा होता है जो पूरे मन से लोगों की सेवा करता है । आम ग्रामीण उन्हें सदैव याद करता रहेगा ।

वाजपेयी—भारतीय जनता पार्टी के नेता अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा कि किसानों विशेषरूप से पिछड़े वर्गों के नेता के रूप में वे हमेशा याद किये जायेंगे । श्री वाजपेयी ने कहा कि एक महान् स्वतन्त्रता सेनानी और स्वतन्त्र भारत के निर्माण में विभिन्न रूपों से योगदान देने वाला एक कुशल राजनीतिज्ञ हमारे बीच से उठ गया है ।

मधु लिमये—प्रसिद्ध समाजवादी नेता मधुलिमये ने चौधरी चरणसिंह के निधन पर गहरा अफसोस प्रकट किया है ।

युवा जनता के संस्थापक महामंत्री तथा लोकदल के केन्द्रीय चुनाव अभियान समिति के प्रभारी मार्कण्डे सिंह ने कहा कि वे एक गांधीवादी विचारक तथा राजनेता थे । उन्होंने गांधीवादी अर्थनीति को नई परिभाषा दी और लोगों को उस पर अमल करने को प्रेरित किया ।

प्रो० मधु दण्डवते—जनता पार्टी के नेता प्रो० मधु दण्डवते ने कहा कि श्री चरणसिंह के निधन से एक युग की समाप्ति हो गयी ।

अस्कर फर्नान्डील—कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस (इ) के अध्यक्ष ने कहा कि देश ने ऐसा नेता खो दिया जो सदैव लोकतंत्र के लिये काम करता रहा ।

आरिफ—उत्तर प्रदेश के राज्यपाल मोहम्मद उस्मन आरिफ ने कहा कि चौधरी चरणसिंह न केवल एक योग्य प्रशासक और वरिष्ठ स्वाधीनता संग्राम सेनानी थे बल्कि निर्बल व पिछड़े वर्ग के लोगों के सच्चे हितैषी भी थे ।

लोकदल के महासचिव जनेश्वर मिश्र ने इलाहाबाद में कहा कि चौधरी चरणसिंह की मृत्यु से आम जनता के नेता का जो स्थान खाली हो गया है उसकी पूर्ति संभव नहीं है।

राजस्थान के भूतपूर्व गृहमंत्री एवं लोकदल (ब) विधायक लालचन्द डूडी ने चौधरी पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुये कहा कि आज देश के किसानों ने अपना मसीहा खो दिया।

राजस्थान विधानसभा के लोकदल (ब) विधायक यदुनाथ सिंह ने कहा कि आज देश ने आजादी के योद्धा और गाँधीवादी विचारक के साथ-साथ ग्रामीण चेतना के जनक को खो दिया है।

वीर बहादुर सिंह—उ० प्र० के मुख्यमंत्री बीर बहादुर सिंह ने कहा कि स्वर्गीय चरणसिंह के निधन से देश ने वरिष्ठ, स्वाधीनता संग्राम सेनानी, महान देशभक्त तथा एक योग्य प्रशासक खो दिया।

श्री सिंह ने कहा कि उनके निधन से देश, विशेषकर उत्तर प्रदेश को भारी क्षति हुयी है।

बहुगुणा—लोकदल (ब) के कार्यकारी अध्यक्ष हेमवती नन्दन बहुगुणा ने चौधरी चरणसिंह के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया है।

उन्होंने अपने बयान में कहा कि श्री सिंह के निधन से स्वाधीनता संग्राम का एक प्रमुख सेनानी भारतीय राजनीति से उठ गया है। वह ग्रामीण खेतीहर व मजदूरों के हितों के लिए बराबर लड़ते रहे। उनके निधन से पिछड़े वर्ग ने अपना प्रमूख गांधीवादी तथा ग्रामीणों का मसीहा हमसे छीन लिया है।

उन्होंने कहा कि श्री सिंह आंख मूंदकर मशीनीकरण करने तथा पश्चिम देशों का अनुसरण के भीं खिलाफ थे। वे ताजिन्दगी किसानों, शिल्पियों, उपेक्षितों तथा दलितों के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहे।

उन्होंने कहा कि चौधरी साहब सादे जीवन के सिद्धान्त पर कायम रहे। वे सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखते थे।

बूटासिह—केन्द्रीय गृहमंत्री बूटासिह ने भूतपूर्व प्रधान मंत्री और

लोकदल के वयोवृद्ध नेता चौधरी चरणसिह के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है।

उन्होंने अपने शोक संदेश में श्रीमती गायत्री देवी और परिवार के सदस्यों के प्रति सहानुभूति जताई। उन्होंने कहा कि देश ने एक निष्ठावान भूमि पुत्र खो दिया है। चौधरी साहब किसानों और खेतिहर मजदूरों के हितों के लिये बराबर लड़ते रहे। उनके निधन से पिछड़े वर्ग ने अपना एक मसीहा खो दिया है।

मार्क्सवादी-कम्युनिष्ट पार्टी के पोलिट ब्यूरो ने भी कहा कि ग्रामीणों के ऊपर उठाने की बहस में चौधरी साहब का बड़ा योगदान था। राजनैतिक मतभेदों के बावजूद सभी मानते थे कि वे एक ईमानदार नेता थे।

जनता पार्टी ने अपने शोक संदेश में कहा कि देश ने एक महान गांधीवादी खो दिया। उन्होंने सारा जीवन किसानों का जीवन स्तर सुधारने में लगा दिया।

३० मई को विभिन्न राज्य सरकारों तथा लोकदल की विभिन्न शाखाओं द्वारा चौधरी चरणसिह के पार्थिव शरीर पर फूल मालायें चढ़ाई गई। कई केन्द्रीय मंत्रियों, सांसदों और विधायकों ने उन्हें अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की।

आडवाणी—भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने कहा हमने एक महान देशभक्त खो दिया। वे एक प्रकार से भारत के किसानों के मसीहा थे।

उन्होंने कहा कि देश में पिछले कुछ दशकों में शायद ही कोई ऐसा राजनेता हुआ हो जिसने देश की अर्थ-व्यवस्था में कृषि तथा किसानों के लिये उचित महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हो।

भजनलाल—केन्द्रीय पर्यावरण तथा वनमंत्री भजनलाल ने श्री चरणसिह को एक वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी तथा सच्चा गांधीवादी बताते हुए कहा कि चौधरी साहब जीवनभर ग्रामीण तथा किसानों के हितों के लिये संघर्ष करते रहे।

श्री भजनलाल ने एक शोक संदेश में चौधरी साहब को ग्रामीण जन-जीवन का प्रतीक बताया।

मौलाना हाशमी—जनवादी पार्टी के अध्यक्ष मौलाना एस० ए० हाशमी और महामंत्री प्रो० एस० के० सैनी ने कहा कि श्री सिंह ने अपना पूरा जीवन देश के गरीबों एव किसानों के लिये संघर्ष के प्रति समर्पित कर दिया था।

रमाकान्त पाण्डेय—सोशलिस्ट पार्टी के महासचिव ने कहा कि चौधरी चरणसिंह भारतीय राजनीति के सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों अनुभवों के जानकार एवं समझदार व्यक्ति थे।

हरिदेव जोशी—राजस्थान के मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने अपने शोक संदेश में कहा है कि चौधरी साहब के निधन से देश ने एक महान स्वतन्त्रता सेनानी, देशभक्त, योग्य प्रशासक तथा किसानों और दलितों की वकालत करने वाला सच्चा हितैषी खो दिया।

ललित तिवारी—राजस्थान प्रदेश जनता पार्टी के मंत्री ने कहा कि किसानों के मसीहा और गांधी जी के ग्रामीण उत्थान का समर्थक आज हमारे बीच नहीं रहा।

ललित किशोर चतुर्वेदी—राजस्थान प्रदेश भारतीय जनता पार्टी विधायक दल के उपनेता ने कहा कि देश ने महान स्वतन्त्रता सेनानी, राष्ट्र भक्त और किसानों का सर्वोच्च नेता खो दिया।

जे.बी. पटनायक—उड़ीसा के मुख्यमंत्री जानकी बल्लभ पटनायक ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से देश ने एक सुयोग्य पुत्र, वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ, प्रमुख स्वाधीनता सेनानी तथा लोगों की सेवा के प्रति समर्पित नेता खो दिया।

बी. एन. पाण्डेय—भुवनेश्वर से प्राप्त सूचनानुसार राज्यपाल ने कहा कि चौधरी साहब आधी सदी तक देश की राजनीति पर छाये रहे। देश एवं इसके लोगों की उन्होंने विभिन्न रूपों में सेवा की। ग्रामीण परि-वेश से उठकर भारतीय राजनीति पर छा जाने वाले वह अनोखे व्यक्ति थे।

गुजरात के राज्यपाल **श्री आर. के. त्रिवेदी** तथा मुख्यमंत्री **अमर-सिह चौधरी** ने गांधी नगर में जारी एक संदेश में कहा कि ग्रामीणों के मसीहा हमारे बीच से उठ गया।

जगमोहन—कश्मीर के राज्यपाल ने श्रीनगर में जारी अपने शोक संदेश में कहा कि चौधरी साहब का बड़ा योगदान था। राजनीति में मतभेदों के बावजूद सभी मानते थे कि वे एक ईमानदार नेता थे।

ज्योति बसु—पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने कलकत्ता में आज जारी अपने शोक संदेश में कहा कि देश की आर्थिक योजना के प्रति उनके दृढ़ विचार थे। उनके मतभेदो के बावजूद वे कह सकते हैं कि वे बेदाग व्यक्ति थे और वर्षों भारतीय राजनीति मे एक हस्ती बने रहे। उनके निधन के समाचार से उन्हें बड़ा आघात लगा।

चन्द्रशेखर—जनता पार्टी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर ने कहा कि चौधरी चरण सिह के निधन से देश ने एक महान देशभक्त खो दिया है।

उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिह ग्रामीण भारत की आकांक्षाओं के प्रतीक थे और उन्होंने भारत की आर्थिक नीतियों को एक नई दिशा दी जो किसानों और ग्रामीण जनता के लिये कल्याणकारी साबित हुई।

श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि चौधरी चरण सिह को हमेशा निःस्वार्थ सेवा और ग्रामीणों के प्रति प्रतिबद्धता के लिये याद किया जायेगा।

हेगड़े—कर्नाटक के मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े ने विदेश से भेजे गये सदेश में कहा कि देश ने एक नेता खो दिया है।

रामकृपाल सिन्हा—भूतपूर्व केन्द्रीय श्रम राज्यमंत्री तथा बिहार भाजपा के उपाध्यक्ष ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से देश के किसानों तथा ग्रामोत्थान के लिये प्रयत्नशील लोगों का नेता उठ गया है। किसान अनाथ हो गये हैं।

उन्होंने कहा कि गांधी जी के बाद देश में एक मात्र चौधरी चरणसिंह ही थे जो गांधीवादी सिद्धांत के अनुसार ग्रामीण पुनर्निर्माण के लिये

प्रयत्नशील थे।

भगत—संसदीय कार्यमंत्री श्री हरिकिशन लाल भगत ने कहा कि चौधरी चरण सिंह के निधन से हमने बहुत ही महान देशभक्त और निष्ठावान नेता खो दिया है। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब ने अपना सारा जीवन देश के लोगों, खास तौर पर किसानों व दलितों को ऊपर उठाने में लगा दिया था।

उन्होंने कहा कि चौधरी साहब के अनेक कार्य हमें प्रेरणा देते रहेंगे। चौधरी साहब ने कई महत्वपूर्ण स्थानों पर रहकर बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये।

अर्जुनसिंह—केन्द्रीय संचार मंत्री ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से देश को महान क्षति हुई है। उन्होंने आजादी के लिये महत्वपूर्ण कार्य किये थे। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब हमारे तथा युवा पीढ़ी के लिये हमेशा प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

नटवर सिंह—विदेश राज्यमंत्री नटवर सिंह ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से हमने एक महान नेता और कुशल प्रशासक खो दिया है। चौधरी साहब ने देश की जो सेवायें की हैं, वे हमेशा हमें प्रेरणा देंगी।

केसरी– कांग्रेस (इ) के कोषाध्यक्ष तथा भूतपूर्व केन्द्रीय संसदीय कार्यमंत्री सीताराम केसरी ने चौधरी चरण सिंह को महान देशभक्त व वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी, योग्य प्रशासक तथा दलितों एवं कमजोर वर्गों का मसीहा बताते हुए उनके निधन को देश के लिये भारी क्षति बताया।

मोहसिना किदवई—शहरी विकास मंत्री श्रीमती मोहसिना किदवई ने कहा है कि चौधरी साहब के निधन से देश के एक अच्छे इन्सान और अच्छे प्रशासक को खो दिया है। श्रीमती किदवई ने कहा कि चौधरी साहब ने सदैव मुल्क की खिदमत की। और हमेशा गरीबों के लिये आवाज उठायी।

शीला दीक्षित—केन्द्रीय संसदीय कार्य राज्यमंत्री शीला दीक्षित ने

कहा है कि चौधरी साहब के निधन से देश को भारी धक्का लगा है। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब के जीवन के उद्देश्य और कार्यों से हमारी आने वाली युवा पीढ़ी हमेशा प्रेरणा लेती रहेगी। चौधरी साहब ने लोगों और विशेष रूप से पिछड़े वर्गों के लिये बहुत कार्य किया था।

कृष्णाशाही—केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णाशाही ने कहा कि दो अलग-अलग राजनीतिक मंच पर होते हुए भी मेरे उनसे पारिवारिक सम्बन्ध थे। चौधरी साहब ने सदैव इन सम्बन्धों को महत्व दिया।

दिनेश सिंह—कांग्रेस (इ) सांसद दिनेश सिंह ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से देश ने एक बहुत बड़े त्यागी, कर्तव्य निष्ठ और क्रांतिकारी नेता खो दिया है। उन्होंने कहा चौधरी साहब ने किसानों के उत्थान के लिये बहुत बड़ा योगदान दिया था। केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री बसन्त साठे ने कहा कि राष्ट्र का एक बहुत बड़ा स्वतन्त्रता सेनानी और कर्मठ नेता हमारे बीच से उठ गया है। उनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसे भर पाना बहुत मुश्किल होगा।

सत्यपाल यादव—उत्तर प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के लोकदल (अ) नेता श्री यादव ने चौधरी चरण सिंह के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। श्री यादव ने लखनऊ में कहा कि स्व० श्री चरण सिंह देश के किसान मजदूर और गरीबों के एकमात्र नेता थे।

बंशीलाल—हरियाणा के मुख्यमंत्री बंसीलाल ने चौधरी चरण सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि चौधरी साहब जनता के एक क्रांतिकारी नेता थे। उन्होंने हमेशा ग्रामीण लोगों के उत्थान तथा उनकी अज्ञानता को दूर करने के लिये कार्य किया। चौधरी बसीलाल ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का सारा जीवन लोगों की सुरक्षा तथा कल्याण के लिये संघर्ष में व्यतीत हुआ।

समाचार पत्रों से

चौधरी साहब के निधन पर देश के अनेक छोटे-बड़े समाचार पत्रों

ने चौधरी साहब के सम्बन्ध में विचार व्यक्त करते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। समाचार पत्रों के कुछ उद्धरण इस प्रकार हैं—

किसानों का नायक

चौधरी चरणसिंह उन गिने चुने भारतीय नेताओं में से थे जिन्होंने अपना जीवन तपस्यापूर्वक जिया। पुराने शील और संस्कार को मानने वाले नेताओं में उनके अलावा मोरारजी देसाई की याद आ सकती है। अपने व्यक्तिगत जीवन में संयम और सादगी बरतने के मामले में दोनों एक जैसे दिखायी देते हैं। लेकिन फिर भी इन दोनों नेताओं को जीवन शैली और दृष्टिकोण में बुनियादी फर्क रहा है। चरणसिंह के मूल्य और मान्यतायें ठेठ भारतीय किसान जैसी थीं। चरणसिंह ने खुद कभी खेती नहीं की। लेकिन उनका स्वभाव और संस्कार ही नहीं उनकी बुद्धि, आम सूझ-बूझ और विवेक दृष्टि भी किसानों जैसी ही थी।

चरणसिंह की देशभक्ति और ईमानदारी पर कोई उंगली नहीं उठाई जा सकती थी। राजनीति में वे देश के अच्छे-बुरे को देसी बुद्धि से ही समझने और तय करने का आग्रह करते रहे।

चरणसिंह को यह सुविधा मिली हुई थी कि वे देश में शक्ति के केन्द्र दिल्ली के इर्द-गिर्द बसे हुए करीब दो करोड़ जाटों के एकछत्र नेता थे। उन्होंने उनके लिए कभी कोई पक्षपात नहीं किया और ना ही वे अपने आपको जाट नेता बताए जाने से खुश होते थे। लेकिन सहज भावानात्मक रिश्तों के आधार पर उन्हें जाट किसानों का ठोस समर्थन तो मिला ही हुआ था। इस ठोस जमीन पर खड़े होकर उन्होंने किसानों के हितों की आवाज उठाई और अपने जनसमर्थन के कारण सब तरह के लोगों का ध्यान खींचा। [—दैनिक जनसत्ता, नई दिल्ली]

चरणसिंह भारत के राजनैतिक इतिहास में लम्बे समय तक याद रखे जायेंगे, क्योंकि उनमे काफी कुछ ऐसा था जो व्याख्या की मांग करता रहेगा। सपाट लोगों का मूल्यांकन मृत्यु के दिन हो सकता है, लेकिन

चरणसिंह का नहीं हो सकता। एक पहेली की तरह हम सब उन्हें वर्षों तक समझने का प्रयत्न करते रहेंगे। [—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली]

उत्तर प्रदेश मे वर्षों तक मंत्री तथा दो बार मुख्यमंत्री और केन्द्र में उप-प्रधानमंत्री तथा फिर कुछ समय तक प्रधानमंत्री रहने के बावजूद उनका अन्त समय तक धरती और किसानों से सम्बन्ध नहीं टूटा। यही उनकी राजनीतिक शक्ति का सूत्र भी था। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी के बाद यदि किसी का देश की ग्रामीण जनता से सीधा सम्बन्ध एवं उस पर प्रभाव था तो वह चौधरी चरणसिंह ही थे।

……फिर भी आधी शताब्दी तक राजनीतिक पदों पर रहने के बावज़ूद उनकी ईमानदारी व सदाशयता में किसी को कभी संदेह नहीं रहा। चरित्र के मामले में उन पर कभी उंगली नहीं उठाई।

[—दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली]

किसानों का मसीहा

उनके निधन से राजनीति ने एक धुनी राजनेता, आर्थिक जगत ने एक व्यावहारिक अर्थशास्त्री और किसानों ने अपना मसीहा खो दिया है। भारत की राजनीति में चौधरी चरणसिंह अपनी सानी अकेले नेता थे और जो कुछ वह करते और कहते थे उसके पीछे उनकी दृढ़ राजनीतिक आस्था थी।

चरणसिंह को जाट नेता के रूप में जाना जाने लगा। उन्हें इस विश्लेषण पर हमेशा आपत्ति रही है और उनकी आपत्ति वाजिब भी थी। उनका कहना था कि जिन क्षेत्रों में उनका प्रभाव है वहां जाट बहुसंख्यक नहीं हैं। उनके लिए ऐसा विशेषण लगाना अनुचित है। वास्तव में वे शुरू से किसानों के हामी रहे हैं और इसलिए उनका पूरा दर्शन ग्रामोन्मुखी रहा है। वे वास्तव में किसान नेता थे और उन्हें अपने आपको किसान नेता होने में गौरव का अनुभव भी होता था।

[—दैनिक राजस्थान पत्रिका, जयपुर राज०]

एक युग का अवसान

चौधरी चरणसिंह के निधन से भारत के राष्ट्रीय क्षितिज में एक नक्षत्र का अन्त हो गया जिसकी अपनी ही चमक, अपनी ही प्रेरणा और अपना ही संदेश था। पांच दशकों के अपने दीर्घ सार्वजनिक जीवन में चौधरी चरणसिंह ने भारतीय कृषि, कृषक एवं ग्राम्य उत्थान के लिए अनवरत् संघर्ष किया।

इन मुद्दों पर उनका संघर्ष इतना प्रभावशाली रहा कि कोई भी सरकार उनकी उपेक्षा नहीं कर सकी। यथार्थ में वे भारतीय किसानों के मसीहा ही बन गये थे। वे इस बात पर जोर देते थे और वह सही था, कि यदि किसान और ग्रामीणजन खुशहाल होंगे तो भारत खुशहाल होगा।

वे साम्यवाद के कायल नहीं थे किन्तु लोकतन्त्र पर आधारित एक जाति एवं वर्ग विहीन, शोषण रहित समाज की उनकी परिकल्पना साम्यवाद से कहीं आगे जाने वाली और मानवतावादी थी।

भारतीय कृषि और कृषक की उन्नति के लिये उनका संघर्ष और अभियान किसी खास बिरादरी को ध्यान में रखकर नहीं था। उसके लाभ प्रत्येक जाति के किसान को मिले हैं। फिर दुर्भाग्य से उन पर जातिवादी होने का आरोप उनके जीवन पर्यन्त लगता ही रहा और विडम्बना यह रही कि ऐसा दोषारोपण करने वाले राजनैतिक तत्व वे थे, जो स्वयं सम्प्रदायों एवं जातियों के जोड़-तोड़ बिठाकर राजनीति करते हैं।

उनके इन्ही गुणों के कारण भारत की भोली-भाली कृषक एवं ग्रामीण जनता ने उन्हें अपने त्राता और मसीहा के रूप में देखा। वे एक युग के पुरुष थे जिनके रिक्त स्थान की पूर्ति अथवा विकल्प की कल्पना ही नहीं की जा सकती। —[दैनिक अमर उजाला, आगरा]

वयोवृद्ध नेता और लोकदल के अध्यक्ष चौधरी चरण सिंह के देहान्त से भारतीय राजनीति का एक और सशक्त स्तम्भ ढह गया है।

चौधरी चरण सिंह के देहान्त से भारतीय राजनीति ने एक सूझवान नेता खो दिया है। आज जब कि देश को उन जैसे सूझवान नेता की अत्यधिक आवश्यकता थी, उनका अभाव काफी देर तक महसूस किया जायेगा।

जो वादा कश थे पुराने, वो उठ जाते हैं।
कहीं से आबे-बकाए दवाम ला साकी॥

[—पंजाब केसरी, अमृतसर]

किसानों की क्षति

चौधरी चरण सिंह के निधन का समाचार भारतीय राजनीति में काफी उथल-पथल ला सकता है। भले ही चौधरी जी का व्यक्तित्व अत्यधिक विवादों से घिरा रहा हो पर यह बात भी बिल्कुल सही है कि वे इन विवादों के कारण ही भारतीय राजनीति के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व्यक्ति बने और जब तक वे सक्रिय रहे तब तक सदैव राजनीतिक चर्चा का विषय बने रहे।

चौधरी साहब के निधन से सबसे बड़ी क्षति समाज के पिछड़े वर्ग को हुई है। समाज का जो पिछड़ा वर्ग है वह चौधरी साहब को एक प्रकार से अपना मसीहा मानता था और यही कारण है अनेक कमजोरियों के बाद भी चौधरी साहब की राजनीतिक शक्ति कम नहीं हो सकी।

किसानों और पिछड़े वर्ग के नेता के रूप में चौधरी साहब ने जो भी कार्य किया उसे सदैव स्मरण किया जायेगा और उनमें न रहने से किसानों और पिछड़े वर्ग के नेतृत्व में जो रिक्तता आ गई है उसे बहुत जल्द भरा जा सकेगा इसकी सम्भावना जल्दी दिखायी नहीं देती।

[—दैनिक जागरण, कानपुर]

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह ने अपने समकालीन इतिहास को सामाजिक और आर्थिक विशेषकर कृषि क्षेत्र को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। वे महात्मा फूले (महाराष्ट्र) और राममोहन राय (बँगाल) की भाँति बुराईयों से आजीवन संघर्ष करते रहे। वे महान स्वतन्त्रता सेनानी

के अतिरिक्त आजादी के बाद के सर्वश्रेष्ठ भू-प्रबन्धों के लिए तकनीशियन भी थे। [—पैट्रियाट]

"वे एक चतुर कूटनीतिज्ञ और दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति थे। वे एक लोकप्रिय किसान नेता थे। उनका यह व्यक्तित्व पेशे के प्रथम गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल के समकक्ष है, या उस लोह पुरुष की याद ताजा कर देता है। [—दि टैलीग्राफ]

"भारतीय राजनीति में, पिछले पाँच दशकों से चौधरी चरणसिंह ईमानदार और एक गैर समझौता परस्त राजनीतिज्ञ के तौर पर छाये रहे।" [—दि वीक (अंग्रेजी साप्ताहिक)]

एक युग की समाप्ति

महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गाँधी और चरणसिंह की समाधियाँ स्वतन्त्र भारत के अलग-अलग अध्याय बन जाना ही किसी भी व्यक्ति को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार कर लिये जाने का प्रमाण है। पिछड़े और दलित-शोषित समाज के लोग भी किसानों की रहनुमाई का काम छोटे पैमाने पर कई नेताओं ने पहले भी किया था। लेकिन चौधरी जी ने उसे एक व्यापक आयाम दे दिया। इसलिये किसान उन्हें अपनी मिट्टी का देवता मानने लगे। साठ के दशक में जब उन्होंने हाशिये की रणनीति, में पूरी महारत हासिल कर ली थी, तब फ्रैंक मोरेस ने कहा था, 'चरणसिंह लखनऊ में पैर पटकते हैं लेकिन उनकी दूरबीनी निगाह जरूर दिल्ली पर टिकी होगी।'

बीमार पड़ने तक चरण सिंह विपक्षी एकता के लिये एक और कोशिश करना चाहते थे। उनके साथ ही, एक युग खत्म हो गया है।

[—दिनमान, २५ जून (पाक्षिक पत्रिका), नई दिल्ली]

दबंग राजनेता

एक मजबूत दबंग और स्पष्टवादी नेता के रूप में उभरे इस व्यक्तित्व ने दृढ़ इच्छा शक्ति के जरिये उत्तर प्रदेश और देश की राजनीति को कई बार नये मोड़ दिये, उन्हें लोकप्रियता भी बेतहासा मिली जिससे उनके

मजबूत और निष्ठावान अनुयायियों की एक बड़ी जुझारू फौज खड़ी हो गयी।

किसानों और खेतों के प्रति उनकी निष्ठा ने उन्हें नेता के रूप में स्थापित किया एवं लोकप्रियता दी। आज जब किसानों में बहुत जागृति आयी है, तो इसका काफी श्रेय चौधरी साहब को जाता है।

[—दैनिक ट्रिब्यून, चण्डीगढ़]

राष्ट्रीय राजनीति के परिदृश्य पर आधी शताब्दी तक छाये रहने के ाद देश के एक पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के निधन से सम-कालीन राजनीति में एक अतिशय घटनापूर्ण अध्याय समाप्त हो गया।

देश में ऐसा दूसरा राजनैतिक व्यक्तित्व पैदा नहीं हुआ, जो चौधरी साहब की क़िसानों और धरती से जुड़े आम लोगों के बीच विलक्षण लोकप्रियता का मुकाबला कर सके। [—दैनिक आज, कानपुर]

गांव की आवाज

लेकिन यह भी याद किया जाना चाहिये कि वे अपने जीवन काल में ग्रामीण उत्तर भारत में एक उपाख्यान ही बन गये थे। पिछड़ी जातियों का संयोजन किया और पिछले २० वर्ष से ग्रामीण तत्वों को भारतीय राजनैतिक में स्थान दिलाने के लिये नेतृत्व किया। इसके लिये चौधरी चरणसिंह को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

उन्होंने भूमि सुधारों का समर्थन किया और नेहरू की सहकारी खेती की धारणा का प्रबल विरोध किया।

केन्द्रीय वित्त मंत्री के रूप में सन् १९७९ का बहुनिन्दित वजट व्यापार को निर्णायक रूप से कृषकों के पक्ष में बदलने का प्रयास था

यद्यपि उनके आलोचक भी मानेंगे कि उनकी मृत्यु से देश से स्वतंत्रता पूर्व युग की एक राजनैतिक कड़ी और एक मौलिक ग्रामीण राजनैतिक का अन्त हो गया जिसकी श्रेष्ठजनों में पश्चिमीकरण का अनियंत्रित विस्तार के बारे में सचेतक वाणी एक मात्रात्मक प्रासंगिकता रखती थी।

[—द टाइम्स ऑफ इण्डिया]

किसान नेता

भारतीय राजनीति में चौधरी चरण सिंह का महत्व उच्च राजनैतिक पदों की बजाय हरित क्रान्ति के लाभ-भोगी व्यक्तियों की सांस्कृतिक बोली और उनकी महत्वाकांक्षाओं को अभिव्यक्ति करने की क्षमता में है।

समूचे हिन्दी क्षेत्र में फैले किसान संसर्ग के माध्यम से अन्य व्यक्ति की अपेक्षा चौधरी चरण सिंह ने उत्तरी भारत की राजनीति पर शासक दल की गला घोंटू पकड़ को कमजोर किया। उन्हें युद्धकारी जाट केन्द्र भरतपुर का आधुनिक सूरजमल मानना न्याय संगत नहीं है क्यों कि चरण सिंह की छत्रछाया में दूसरे किसान समुदाय भी शामिल थे, जैसे यादव, कुर्मी और मुसलमान। जिनके अनुविभागीय स्वर कांग्रेस के व्यापक मतैक्य में निरन्तर शामिल थे।

श्री चरण सिंह के विचार और नीति गाँवों के पुनरुत्थान के सम्बन्ध में कभी दो तरफा नहीं रही। उनकी और उनके समर्थकों की समस्त कोशिशें गांधीवाद की उत्तमता के अनुरूप कुछ विशिष्ट योजनाओं के अनुनयन सम्बन्धी रही। जैसे कि वह बेकार नेहरूवाद के जहर को मारने की सर्वोत्तम दवा थी। अपने विरोधी स्वरूप के कारण ही वह अधिक से अधिक सम्मानित हुए, साथ ही आधुनिक वातावरण में ढल नहीं पाये।

[—इण्डियन एक्सप्रैस]

वह शहरी अभिजात राजनीतिज्ञों के बीच कन्धे पर हल लिए किसान को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। वह गांव की पंचायत को दिल्ली के तख्त पर बिठाना चाहते थे।

उनके होने का अर्थ था केन्द्रीय सत्ता की दहलीज पर देश की किसान राजनीति का निरन्तर दस्तक देते रहना। अब उनके न होने का अर्थ है एक बड़ा शून्य। लोगों को यह सवाल अब वर्षों तक कचोटता रहेगा कि इस शून्य को कौन भरेगा ?

[—माया ३० जून ८७ (पाक्षिक पत्रिका), इलाहाबाद]

चरण सिंह असली चौधरी थे

चौधरी चरण सिंह का लम्बा राजनैतिक जीवन अनेक असफलताओं और भोलेपन मे किये गये गलत फैसला का भी लम्बा सिलसिला है। लेकिन चौधरी चरण सिंह सिर्फ एक राजनीति, एक पार्टी के अध्यक्ष, एक भूतपूर्व प्रधान मन्त्री का नाम ही नहीं था, चरण सिंह एक धारा का नाम भी था।

चरण सिंह का मतलब शहर देहात का खामोश नहीं, आत्मविश्वास से सराबोर कदम था। चरण सिंह का मतलब राजनैतिक सत्ता में पिछड़े और गरीबों की भागीदारी था। चरण सिंह का मतलब दिल्ली की चकाचौंधी और बदबूदार भ्रष्ट सत्ता राजनीति में ग्रामीण सुलभता, सहजता और गलतियों का प्रवेश था। चरण सिंह एक अर्थशास्त्री का नाम था, जो भारत की समस्याओं भारतीय परिवेश में देशी तरीकों से सुलझाना चाहता था। चरण सिंह उस ठेठ देहाती राजनीतिज्ञ का नाम था, जिसकी राजनीति में कोई दुराव, कोई कपट नहीं था, बल्कि उसे जो अच्छा लगा उसे ताल ठोककर अच्छा कहा और जो बुरा लगा उसे खुल्लमखुल्ला कोसा।

चौधरी अपनी समस्त सफलताओं-असफलताओं के बावजूद भारतीय राजनीति को स्पष्ट धारा प्रदान कर गये हैं।

चौधरी के कारण ही हर पार्टी में आज किसानों की, पिछड़ों की, कारीगरों की और गाँव वालों की आवाज हैं।

[—रविवार १४-२० जून (सप्ताहिक पत्रिका), कलकत्ता]

पिछड़े वर्ग के समर्थक

चौधरी साहब मानते थे कि इस देश की राजनीति पर अभिजात्य वर्ग का वर्चस्व जब तक समाप्त नहीं होगा, तब तक पिछड़े, दलित और किसान-मजदूर, जो संख्या में बहुत ज्यादा हैं, केवल "प्रजा" ही बने रहेंगे। यही वजह थी कि चौधरी साहब ने इन पिछड़े तबकों में संघर्ष की एक चेतना जगाई, अन्याय के खिलाफ' विद्रोह की

आवाज उठाना सिखाया। उनके अन्दर सत्ता में भागीदारी की एक भूख पैदा की। यह चौधरी साहब ही थे, जो एक साधारण किसान परिवार में पले-बढ़े और अपने आदर्शों एवं सिद्धान्तों पर अडिग रहते हुए सत्ता के शिखर पर पहुंचे, लाल किले पर तिरंगा लहराया तथा दबे-पिछड़े तबकों को दिल्ली का रास्ता दिखाया। इस देश की राजनीति को चौधरी साहब का यह एक महान योगदान है। [—असली भारत]

श्रद्धांजलियाँ

चौधरी चरण सिंह के निधन पर विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं द्वारा उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

कमलापति त्रिपाठी : कांग्रेस (इ) नेता कमलापति त्रिपाठी ने श्री चरण सिंह के निवास स्थान जाकर शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी उन्होंने वार्ता को बताया कि श्री चरण सिंह के निधन के कारण हुई क्षति कभी पूरी नहीं हो सकती। श्री चरण सिंह ईमानदार, कर्मठ और महान देशभक्त थे। गरीबों और किसानों की उन्नति के उन्होंने बहुत कुछ किया। श्री त्रिपाठी ने कहा कि श्री चरण सिंह देश की राजनीति पर एक अमिट छाप छोड़ गये हैं।

राजेश्वर राव : भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने उनके निधन को दुखद बताया और कहा कि उन्होंने पूरी निष्ठा के साथ अन्तिम क्षण तक देश की सेवा की। पार्टी के महासचिव श्री राजेश्वर राव ने अपने संदेश में कहा है कि उनके विचारों से मतभेद हो सकता है लेकिन उनकी ईमानदारी और निर्भयता की सभी सराहना करते हैं।

देवीलाल : हरियाणा प्रदेश लोकदल (ब) के अध्यक्ष देवीलाल ने श्री चरण सिंह के निधन पर किसानों के लिये अपूरणीय क्षति बताया है। उन्होंने कहा कि देश के किसानों और गरीब आदमी की जिस लड़ाई को श्री सिंह ने आगे बढ़ाया उसी को और आगे ले जाना उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

लोकदल (ब) के नेता शरद यादव ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का निधन देश के कमजोर वर्गों के लिये सबसे बड़ी क्षति है। वह एक महान् गांधीवादी नेता थे।

मार्क्सवादी : मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के स्वाधीनता संग्राम में उनके योगदान की सराहना करते हुए कहा कि ग्रामीण भारत के विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। हरियाणा के मुख्यमंत्री बंसीलाल ने अपने शोक संदेश में कहा कि चौधरी चरण सिंह आम जनता के क्रान्तिकारी नेता थे। उनका जीवन संघर्षों की कहानी थी। राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल रघुकुल तिलक ने कहा कि वह आम आदमी की आकांक्षाओं के प्रतीक थे।

एस. बी. चव्हाण : महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शंकर राव चव्हाण ने कहा कि देश ने ऐसा नेता खो दिया है जो जीवन भर किसानों के लिये संघर्ष करता रहा।

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमत्री वीरभद्र सिंह ने कहा कि श्री चरण सिंह ने अपना सारा जीवन ग्रामीण पुनर्निर्माण के लिये समर्पित कर दिया। केन्द्रीय योजना राज्यमंत्री सुखराम ने उन्हें एक अच्छा सांसद और राजनेता बताया। जनवादी पार्टी के नेता चटर्जी व यादव ने कहा कि भारतीय राजनीति में किसानों की समस्याओं को इतनी गम्भीरता से नहीं उठाया जितनी गम्भीरता से चरण सिंह ने उठाया।

वी. पी. सिंह: भूतपूर्व रक्षा मत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कहा कि चौधरी चरण सिंह के निधन से एक महान् देशभक्त हम लोगों के बीच से उठ गया। उन्होंने कहा कि उनकी ईमानदारी, प्रशासनिक कुशलता और किसानों के प्रति सहानुभूति एक मिसाल बन गयी है। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह सच्चे मायने में भूमिपुत्र थे। और इस रूप में सदैव वे हम लोगों के बीच रहेंगे।

बलराम जाखड़ : लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने चौधरी साहब के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा है कि भारत ने

एक महान देशभक्त स्वतन्त्रता सेनानी और गरीबों का सेवक खो दिया है।

उन्होंने कहा कि ऐसा आदमी कभी-कभी पैदा होता है जो पूरे मन से लोगों की सेवा करता है। आम ग्रामीण उन्हें सदैव याद करता रहेगा।

वाजपेयी : भारतीय जनता पार्टी के नेता अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि चौधरी साहब किसानों, विशेषरूप से पिछड़े वर्गों के नेता के रूप में हमेशा याद किया जायेगा। श्री वाजपेयी ने कहा कि एक महान स्वतन्त्रता सेनानी और स्वतन्त्र भारत के निर्माण में विभिन्न रूपों से योगदान देने वाला एक कुशल राजनीतिज्ञ हमारे बीच से उठ गया है।

मधु लिमये : प्रसिद्ध समाजवादी नेता मधु लिमये ने चौधरी चरणसिंह के निधन पर गहरा अफसोस प्रकट किया है।

युवा जनता के संस्थापक महामंत्री तथा लोकदल के केन्द्रीय चुनाव अभियान समिति के प्रभारी मार्कण्डेय सिंह ने कहा कि वे एक गांधीवादी विचारक तथा राजनेता थे। उन्होंने गांधीवादी अर्थनीति की नयी परिभाषा दी थी और लोगों को उस पर अमल के लिये प्रेरित किया था।

भूतपूर्व केन्द्रीय श्रम राज्यमंत्री तथा बिहार भाजपा के उपाध्यक्ष डा० रामकृपाल सिन्हा ने कहा है कि चौधरी साहब के निधन से देश के किसानों तथा ग्रामोत्थान के लिये प्रयत्नशील लोगों का नेता उठ गया है। किसान अनाथ हो गये हैं।

उन्होंने कहा कि गांधी जी के बाद देश में एक मात्र चौधरी चरणसिह ही थे जो गांधीवादी सिद्धान्त के अनुसार ग्रामीण पुनर्निर्माण के लिये प्रयत्नशील थे।

भगत : संसदीय कार्यमंत्री श्री हरिकिशन लाल भगत ने कहा कि चौधरी चरण सिंह के निधन से हमने बहुत ही महान देशभक्त और निष्ठावान नेता खो दिया है। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब ने अपना सारा जीवन देश के लोगों खास तौर पर किसानों और दलित वर्गों को ऊपर उठाने में लगा दिया था।

उन्होंने कहा कि चौधरी साहब के अनेक कार्य हमें प्रेरणा देते रहेंगे। आपने अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रहकर बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये ।

अर्जुन सिंह : केन्द्रीय संचार मंत्री अर्जुन सिंह ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से देश को महान् क्षति हुई है। उन्होंने आजादी के लिये महत्वपूर्ण कार्य किये थे।

उन्होंने कहा कि चौधरी साहब हमारे तथा युवा पीढ़ी के लिये हमेशा प्ररणा के स्रोत बने रहेंगे।

नटवर सिंह : विदेश राज्यमंत्री नटवर सिंह ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से हमने एक महान् नेता और कुशल प्रशासक खो दिया है। चौधरी साहब ने देश की जो सेवायें की हैं, वे हमेशा हमें प्रेरणा देंगी।

केसरी : कांग्रेस (इ) के कोषाध्यक्ष तथा भूतपूर्व केन्द्रीय संसदीय कार्यमंत्री सीताराम केसरी ने चौधरी चरण सिंह को महान् देशभक्त व वयोवृद्ध स्वाधीनता सेनानी, योग्य प्रशासक तथा दलितों एवं कमजोर वर्गों का मसीहा बताते हुए उनके निधन को देश के लिये भारी क्षति बताया।

मोहसिना किदवई : शहरी विकास मंत्री श्रीमती मोहसिना किदवई ने कहा है कि चौधरी साहब के निधन से देश ने एक अच्छे इन्सान और अच्छे प्रशासक को खो दिया है। श्रीमती किदवई ने कहा कि चौधरी साहब ने सदैव मुल्क की खिदमत की और हमेशा गरीबों के लिए आवाज उठायी।

शीला दीक्षित : केन्द्रीय संसदीय कार्य राज्यमंत्री शीला दीक्षित ने कहा है कि चौधरी साहब के निधन से देश को भारी धक्का लगा है। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब के जीवन के उद्देश्यों और कार्यों से हमारी आने वाली युवा पीढ़ी हमेशा प्रेरणा लेती रहेगी। चौधरी साहब ने जन-साधारण और विशेष रूप से पिछड़े वर्गों के लिए बहुत कार्य किया था।

कृष्णाशाही : केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णाशाही ने कहा

कि दो अलग-अलग राजनैतिक मंच पर होते हुए भी मेरे उनसे पारिवारिक सम्बन्ध थे। चौधरी साहब ने सदैव इन सम्बन्धों को महत्व दिया। हरियाणा लोकदल (ब) के अध्यक्ष श्री देवीलाल ने कहा कि जब देश को एक महत्वपूर्ण नेता की जरूरत थी वह हमसे बिछुड़ गये। उन्होंने कहा कि सदियों में ऐसे नेता मिलते हैं।

दिनेश सिंह : कांग्रेस (इ) सांसद दिनेश सिंह ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से देश ने एक बहुत बड़े त्यागी, कर्तव्यनिष्ठ और क्रांतिकारी नेता खो दिया है।

उन्होंने कहा कि चौधरी साहब ने किसानों के उत्थान के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया था। केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री श्री बसन्त साठे ने कहा कि राष्ट्र का एक बहुत बड़ा स्वतन्त्रता सेनानी और कर्मठ नेता हमारे बीच से उठ गया है। उनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है, उसे भर पाना बहुत मुश्किल होगा।

सत्यपाल यादव : उत्तर प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के नेता श्री सत्यपाल सिंह यादव लोकदल (अ) ने चौधरी चरण के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। श्री यादव ने लखनऊ में कहा कि स्व० श्री चरण सिंह देश के किसान, मजदूर और गरीबों के एकमात्र नेता थे।

बंसीलाल : हरियाणा के मुख्यमंत्री बंसीलाल ने चौधरी चरण सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि चौधरी साहब जनता के एक क्रांतिकारी नेता थे। उन्होंने हमेशा ग्रामीण लोगों के उत्थान तथा उनकी अज्ञानता को दूर करने के लिए कार्य किया। चौधरी बंसीलाल ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का सारा जीवन लोगों की सुरक्षा तथा कल्याण के लिए संघर्ष में व्यतीत हुआ।

आडवाणी : भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि हमने एक महान देशभक्त खो दिया। वे एक प्रकार से भारत के किसानों के मसीहा थे।

उन्होंने कहा कि देश में पिछले कुछ दशकों में शायद ही कोई ऐसा

राजनेता हुआ हो जिसने देश की अर्थव्यवस्था में कृषि तथा किसानों के लिये उचित महत्वपूर्ण भूमिका निभायी हो।

भजनलाल : केन्द्रीय पर्यावरण तथा वनमंत्री भजनलाल ने श्री चरण सिंह को एक वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी तथा सच्चा गांधीवादी बताते हुए कहा कि चौधरी साहब जीवन भर ग्रामीण तथा किसानों के हितों की रक्षा के लिये संघर्ष करते रहे।

श्री भजनलाल ने एक शोक संदेश में चौधरी साहब को ग्रामीण जनजीवन का प्रतीक बताया।

मौलाना हाशमी : जनवादी पार्टी के अध्यक्ष मौलाना एस० ए० हाशमी और महामंत्री प्रो० एम. के. सैनी ने कहा कि श्री सिंह ने अपना पूरा जीवन देश के गरीबों एवं किसानों के लिये संघर्ष के प्रति समर्पित कर दिया था।

सोशलिस्ट पार्टी के महासचिव रमाकान्त पाण्डेय ने कहा कि चौधरी चरण सिंह भारतीय राजनीति के सत्तापक्ष और विपक्ष दोनों अनुभवों के जानकार एवं समझदार व्यक्ति थे।

हरिदेव जोशी : राजस्थान के मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने अपने शोक संदेश में कहा है कि चौधरी साहब के निधन से देश ने एक महान स्वतन्त्रता सेनानी, देशभक्त, योग्य प्रशासक तथा किसानों और दलितों की वकालत करने वाला सच्चा हितैषी खो दिया।

राजस्थान प्रदेश जनता पार्टी के मंत्री श्री ललित तिवारी ने कहा कि किसानों के मसीहा और गांधी जी के ग्रामीण उत्थान का समर्थक आज हमारे बीच नहीं रहा।

राजस्थान प्रदेश भारतीय जनता पार्टी विधायक दल के उपनेता श्री ललित किशोर चतुर्वेदी ने कहा कि देश ने एक महान स्वतन्त्रता सेनानी, राष्ट्रभक्त और किसानों का सर्वोच्च नेता खो दिया।

जे. बी. पटनायक : उड़ीसा के मुख्यमंत्री जानकी वल्लभ पटनायक ने कहा कि चौधरी साहब के निधन से देश ने एक महान सुयोग्य पुत्र,

वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ, प्रमुख स्वाधीनता सेनानी तथा लोगों की सेवा के प्रति समर्पित नेता खो दिया।

भुवनेश्वर से प्राप्त सूचनानुसार राज्यपाल श्री बी. एन. पाण्डेय ने कहा कि चौधरी साहब आधी सदी तक देश की राजनीति पर छाये रहे। देश एवं इसके लोगों की उन्होंने विभिन्न रूपों में सेवा की। ग्रामीण परिवेष से उठकर भारतीय राजनीति पर छा जाने वाले वह अनोखे व्यक्ति थे।

गुजरात : गुजरात के राज्यपाल श्री आर. के. त्रिवेदी तथा मुख्यमंत्री अमरसिंह चौधरी ने गांधी नगर में जारी एक संदेश में कहा कि ग्रामीणों का मसीहा हमारे बीच से उठ गया।

कश्मीर : कश्मीर के राज्यपाल श्री जगमोहन ने श्रीनगर में जारी अपने शोक संदेश में कहा कि चौधरी साहब का ग्रामीणों के उत्थान में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान रहा।

मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो ने भी कहा कि ग्रामीणों को ऊपर उठाने की बहस में चौधरी साहब का बड़ा योगदान था। राजनीतिक मतभेदों के बावजूद सभी मानते थे कि वे एक ईमानदार नेता थे।

ज्योति बसु : पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने कलकत्ता में आज जारी अपने शोक संदेश में कहा कि देश की आर्थिक योजना के प्रति उनके दृढ़ विचार थे। उनसे मतभेदों के बावजूद वे कह सकते हैं कि वे बेदाग व्यक्ति थे और वर्षों भारतीय राजनीति में एक हस्ती बने रहे।

उनके निधन के समाचार से उन्हें बड़ा आघात लगा।

चन्द्रशेखर : जनता पार्टी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर ने कहा कि चौधरी चरण सिंह के निधन से देश ने एक महान देशभक्त खो दिया है।

उन्होंने कहा कि चरण सिंह ग्रामीण भारत की आकांक्षाओं के प्रतीक थे और उन्होंने भारत की आर्थिक नीतियों को एक नई दिशा दी जो किसानों और ग्रामीण जनता के लिये कल्याणकारी साबित हुई।

श्री चन्द्रशेखर ने कहा कि चरण सिंह को हमेशा निःस्वार्थ सेवा, और ग्रामीणों के प्रति प्रतिबद्धता के लिये याद किया जायेगा।

हेगड़े : कर्नाटक के मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े ने विदेश से भेजे गये संदेश में कहा कि देश ने एक नेता खो दिया है।

जनता पार्टी के नेता प्रो० मधु दण्डवते ने कहा कि श्री सिंह के निधन से एक युग की स्माप्ति हो गयी।

संस्मरण

चौधरी साहब की स्मृति में अनेक विद्वानों एवं नेताओं ने अपने संस्मरण भेजे हैं उनमें से कुछ लेख यहां प्रस्तुत हैं।

वतन के वास्ते जिए और वतन के लिए कुर्बान हो गए

चलते-चलते पग थके, नगर रहा नौ कोस,
बीच में डेरा दियो, कहो कौन को दोष ?

भारत राष्ट्र को नई शक्ति देने की तमन्ना लिये हुए चौधरी चरणसिंह दिवंगत हो गये। रण क्षेत्र में धराशायी होकर भीष्म पितामह की तरह उन्होंने एक लम्बे अर्से तक बाण शैय्या पर उत्तरायण नक्षत्र के उदय का इंतजार किया। महाभारत चलता रहा और शांत भी दिखता रहा। प्राणत्याग भी श्री चौधरी की इच्छा पर निर्भर हो गया। कल शाम को ही चर्चा थी—क्या श्री चौधरी हरियाणा के चुनाव परिणामों को देख सकेंगे ? रात को स्वप्न दर्शन भी ऐसा हुआ, युद्ध में धनुष बाण धारण किये हुए अर्जुन का विमान आकाश में उड़ता जा रहा है और कृष्ण भगवान अंगुलियों का संकेत देते हुए उपदेश दे रहे हैं—"हतोवा प्राप्यसि स्वर्गम्, जित्वा वा भोक्षे महीम्।"

मरना जीवन समान है।

"न मरने का गम है मीर, न जीने की खुशी है।" कर्मक्षेत्र ही युद्ध क्षेत्र और धर्मक्षेत्र है।

क्या हुआ गर मर गये, अपने वतन के वास्ते।
बुलबुल कुर्बान होती है, चमन के वास्ते।

चौधरी चरण सिंह वतन के वास्ते जिये और वतन की बेदी पर ही कुर्बान हो गये। एक साधारण किसान के घर में जन्म लेकर वह अपनी प्रतिभा और परिश्रम से आगे बढ़े। देश के उज्ज्वल सितारों में वह प्रकाशमान होकर चमके। सबसे बड़े राज्य के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के पद पर विराजमान हुए।

पर उनके जीवन का मुख्य ध्येय किसान और देश की गरीब जनता के कल्याण के लिये संघर्ष करना ही रहा। किसान जनता का उन्हें असीम प्यार मिला। जहां तक इस देश की किसान जनता का संबंध है, जो देश का मेरुदण्ड है उसमें चौधरी चरण सिंह जैसा ही एक मसीहा पैदा किया है। इस देश की जनता किसान जनता है। किसान के हितों पर ही इस देश का कल्याण निर्भर है। जिसके अन्तर्गत जनता के सभी वर्ग आते हैं—बुद्धिजीवी वर्ग से लेकर, शासक वर्ग और प्रशासनिक वर्ग, श्रमजीवी वर्ग, व्यवसायी समाज और औद्योगिकरण के सभी अंग। यदि किसान की हालत सुधरी तो देश की सारी जनता का उत्थान और अभ्युदय होगा, यह चौधरी की नीति रही, जिस पर उनकी राजनीति का चक्र घूमता रहा। अत:

एके साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।

चौधरी का यह बीज मंत्र था।

महात्मा गांधी के इस विचार का चौधरी चरण सिंह मूर्तिवान रूप थे कि इस देश की शासन-व्यवस्था किसान पुत्र के हाथ में होनी चाहिये। जिसके लिये बुद्धिजीवी वर्ग एक सहायक रूप में होगा। अर्थात् देश की शासन-व्यवस्था में श्रम और बौद्धिक बल दोनों का ही महत्व है। लेकिन बौद्धिक बल से श्रम के मूल्य का अधिक महत्व है।

श्रम शक्ति ही बौद्धिक बल को जन्म देती है, बौद्धिक बल को पुष्ट करती है। चौधरी चरण सिंह जन्म से, स्वभाव से, विचार से आद्योपांत

किसान पुत्र थे, धरती के लाल साथ ही बुद्धिजीवियों की खचित मुक्त माला में वह एक मणिधारी की चमक थे। भारत की अर्थव्यस्था पर उनका लिखा हुआ ग्रन्थ "देश की अर्थव्यस्था का भयावह रूप" कौटिल्य के अर्थशास्त्र से भी अधिक 'महाभारत' महाग्रंथ बन गया है। जो देश के अर्थशास्त्रियों के लिये तो पथ-प्रदर्शक है ही, देश की अर्थव्यस्था को कैसा रूप दिया जाना चाहिये, इसका मार्गदर्शन चौधरी चरण सिंह ने किया है। चौधरी चरण सिंह के अर्थविन्यास को लोग इसी तरह समझेंगे और हृदयगम करेंगे जैसे कि 'महाभारत' पढ़ा जाता है।

हमारे देश की राजनैतिक व्यवस्था पर ही नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था और बौद्धिक शक्ति पर जवाहरलाल नेहरू छाये रहे। यह चौधरी चरण सिंह का ही साहस और वैचारिक धरातल था कि उन्होंने धारा के विपरीत जवाहर लाल नेहरू की गलतियों को उजागर कर दिया। (१) सहकारी खेती का प्रयोग देश में असफल हो गया तथा उसकी जगह एक मध्यवर्ती सामन्ती वर्ग के स्वार्थ प्रबल हो गये। (२) जहां तक सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का संबध है देश का केन्द्रीकरण और पूंजीवाद की राजनैतिकता बढ़ी है। जवाहर लाल नेहरू का समाजवाद पूंजिपतियों की तिजोरियों में और बैंकों में देश के आयात-निर्यात भंडारों में कैद हो गया। जो देश की अर्थव्यवस्था का 'भयावह' रूप है जिसकी चिंता आज देश भर में व्याप्त है।

उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलन और भूमि व्यवस्था अधिनियम के निर्माण में चौधरी चरण सिंह को मुख्य श्रेय हैं। जो देश में नयी भूमि व्यवस्था के लिए एक आदर्श बन गया। अतः उत्तर प्रदेश की भूमि-व्यवस्था में जैसा सुधार हुआ, दूसरे राज्यों में उसका अनुसरण करते हुए भी सफलता प्राप्त नहीं हुई है और जमींदारी प्रथा का उन्मूलन होकर भी अभी तक सामंती व्यवस्था चल रही है। यह दुर्भाग्य की बात हैं कि चौधरी चरण सिंह पर दो प्रकार के कटु प्रहार होते रहे। (१ चौधरी चरण सिंह खुशहाल किसानों के समर्थक हैं। (२) चौधरी ने जातिवाद

कों बढ़ावा दिया है। देश के पूंजीपति वर्ग का यह प्रचार रहा जिससे देश का बुद्धिजीवी वर्ग भी प्रभावित हो गया। अतः चौधरी चरण सिंह को देश की जनता ने तो समझा, लेकिन राजनैतिक प्रतिद्वन्दिता और प्रतिस्पर्धा के कारण देश का निहित स्वार्थी वर्ग उनका विरोधी रहा और दुद्धिजीवी वर्ग ने उनको भली प्रकार नहीं समझा। चौधरी चरण सिंह की भूमि व्यवस्था में सबसे निम्न श्रेणी के किसान और श्रमजीवी वर्ग के हित सुरक्षित रखे गये हैं, जबकि खेती की भूमि की उच्चसीमा निर्धारित कर सामंती वर्ग के स्वार्थों को परकैंच कर दिया है। इसी प्रकार जिसे जातिवाद कहा गया है। उसकी परिभाषा वर्गवाद है। चौधरी चरणसिंह श्रमजीवी वर्ग के प्रतिनिधि और उनके हित के लिए संघर्ष करते रहे हैं। शासन-व्यबस्था में सादगी और स्वच्छता लाने के प्रश्न पर उन्होंने अपने शासकीय पद से कई बार इस्तीफा भी दे दिया। उनके कांग्रेस छोड़ने और नई पार्टी बनाने का उद्देश्य भी अपने सिद्धान्तों को सत्ता के लाभ से प्रमुख स्थान देना था। महात्मा गांधी ने भी कांग्रेस को छोड़ दिया था, यह उनकी आत्मा की आवाज थी। चौधरी चरण सिंह ने सत्ता के लोभ को संवरण किया और अपने विचार, सिद्धांत और नीति पर अडिग रहे। उनका एक प्रहार सत्ता पर एक वंश के राज्य शासन पर अक्षुण्ण अधिकार के विरोध में रहा। यह गलत है कि इस सम्बन्ध में चौधरी चरण सिंह के हृदय में व्यक्ति विशेष के सम्बन्ध में कोई द्वेष भाव था। नेहरू परिवार के प्रति उनके व्यक्तिगत संबंधों और आदर भाव में कोई कमी नहीं आयी। वह लोकनंत्र में व्यक्ति विशेष और तानाशाही प्रवृति के सख्त विरोधी थे।

आज चौधरी चरण सिंह के रूप में गांधी युग का एक देदीप्यमान सितारा अदृश्य हो गया। चौधरी चरण सिंह अपनी एक अलग हस्ती थे। उन जैसा व्यक्तित्व देश ने अद्वितीय पैदा किया था। निकट भविष्य में क्या इसकी पूर्ति हो सकेगी ? यह प्रश्न भविष्य के गर्भ में है। ?

"तेरी बेफिक्री है जिस घर में, तेरे मरने के बाद तेरी तस्वीरें उसी घर में लगादी जायगी।"

—रमेश वर्मा

उत्तर प्रदेश के एक सिंह : चौधरी चरणसिंह

राजनेताओं में वे लोग गिने-चुने हैं, जो व्यक्ति, अपनी पार्टी और अपने लोगों के हितचिंतन से ऊपर उठकर अपने प्रदेश और इस विशाल देश की समस्याओं से जूझना अपना धर्म समझते हैं। चौधरी चरण सिंह को मैंने सत्ता में देखा है। जब वे उत्तर प्रदेश के मंत्री और मुख्यमंत्री थे और सत्ता से अलग भी, जब वे किसी भी पद पर नहीं रहे। दोनों ही स्थितियों में समान रूप से जनसाधारण और मुख्य रूप से देहात से जुड़ी जनता के लिये अनवरत कुछ-न-कुछ करते रहना उनका सबसे पहला कर्तव्य रहा है। मंत्रिपद पर रहने या सत्ता से बाहर होने पर चौधरी साहब के व्यवहार या उनके सोचने के तरीकों में कभी अन्तर नहीं पड़ता। बड़े-से-बड़ा अफसर, उद्योगपति या छोटे-से-छोटा किसान उनसे समान रूप से मिल सकता है।

पहले वे एक तिरछी निगाह से आगंतुक को देखते हैं और यह जान लेते हैं कि यह व्यक्ति जायज काम के लिये आया है या किसी बेजा काम को उनको उनके प्रभाव से करवाना चाहता है। यदि काम जायज है तो चौधरी साहब से बड़ा हिमायती मिलना मुश्किल है और यदि काम दूसरे तरह का है; तो ज्यादा देर तक उनके बंगले में ठहरे रहना भी कठिन होता है, खरा व्यवहार और खरी बात उनके चरित्र का अंग बन चुके हैं। चरित्र की इस विशेषता से उन्हें व्यक्तिगत हानि भले ही हुई हो, पर उनके पास गांव-गिरांव से आने वाली अपार दुखिया जनता के बीच वे निःसदेह 'हीरो' बने हैं। लोग अक्सर यह कहते सुन जाते रहे कि दुःखी हो तो चौधरी साहब के पास चले जाओ।

नागपुर—कांग्रेस का जमाना था। सहकारिता आंदोलन जोर पकड़ रहा था। पंडित जवाहर लाल नेहरू सहकारिता आंदोलन के जनक थ और नागपुर कांग्रेस में इस प्रश्न पर बड़ी जोरदार बहस छिड़ी हुई थी। सभी वक्ता सहकारिता आंदोलन के पक्ष में जोरदार भाषण कर रहे थे।

सहसा माइक पर उत्तर प्रदेश की कांग्रेस सरकार के राजस्व मंत्री चौधरी चरण सिंह आये और डट कर सहकारी खेती का विरोध किया। लोग भौंचक्के कि एक मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रतिपादित सिद्धांतों के विरोध में कैसे बोल सकता है, पर चौधरी साहब ने धारा प्रवाह तर्क-युक्त भाषण में सरकारी खेती की कमियों और उसके अव्यावहारिक होने के कारण उसे देश में लागू न किये जाने पर बल दिया। उस समय के वातावरण को देखते हुए यह एक साहसपूर्ण कदम था। जिसे उठाने की हिम्मत अधिकांश लोगों में नहीं थी। देश के हित को सर्वोपरि मानने वाले चौधरी चरण सिंह ने उस समय जो आवाज उठाई, उससे उनका व्यक्तिगत नुकसान भले हुआ हो, पर जनमानस में उनकी प्रतिष्ठा को चार चांद लग गये और लोग उन्हें 'शेरे उत्तर प्रदेश' कहने लगे।

धीरे-धीरे चौधरी साहब कांग्रेस की नीतियों और विशेष रूप से उस समय अपनाई जाने वाली राजनीतिक पद्धतियों से असहमत होने के कारण अपने आपको उस बड़े गढ़ में अकेला महसूस करने लगे और अन्ततः उन्होंने अपने चन्द अनुयायियों सहित कांग्रेस छोड़ दी और उसके कुछ दिन बाद ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। उन दिनों मैं उत्तर प्रदेश सरकार का सहायक सूचना निदेशक और पत्र सूचना कार्यालय का प्रमुख था और इस नाते चौधरी साहब को नजदीक से देखने का मौका मिला। बहुत थोड़े लोगों को पता होगा कि उत्तर प्रदेश के जमींदारी उन्मूलन का बिल और उसका सफल कार्यान्वयन चौधरी साहब की ही देन है। उत्तर प्रदेश आज गर्व के साथ यह दावा करता है कि उसके 'लैंड रेकॉर्ड्स' बिलकुल 'अपटुडेट' हैं, लेकिन यह उपलब्धि उत्तर प्रदेश को चौधरी चरण सिंह की देन है, यह बात बहुत लोग नहीं जानते। अपने राजस्व मंत्रित्व काल में चौधरी साहब ने प्रदेश के सारे भूमि सम्बन्धी रेकार्ड सही किये, जो अपने आप में एक बड़ा काम था।

जिस दिन उत्तर प्रदेश में यह खबर होती थी कि कल से चौधरी साहब मुख्यमंत्री होने जा रहे हैं, पुलिस थानों और पी. डब्लू. डी. में

अपने-आप रिश्वत बन्द हो जाती थी। ये विभाग अन्य विभागों की अपेक्षा अधिक नामधारी विभाग रहे हैं। लोग सचिवालय में दस बजे आना शुरु कर देते थे और सभी सरकारी कार्यालयों में अनुशासन अपने-आप उत्पन्न हो जाता था। स्वयं बारह घंटे से अधिक रोज काम करके चौधरी साहब बिना किसी के कुछ कहे सचिवालय में लगन के साथ काम करने का एक वातावरण उत्पन्न कर सकने में समर्थ थे।

कुछ लोगों का यह दावा है कि यदि स्थायी सरकार में चौधरी साहब को दस वर्ष मुख्यमंत्री होने का अवसर मिलता, तो उत्तर प्रदेश का नक्शा ही बदल गया होता। यह प्रदेश का दुर्भाग्य ही रहा कि उन्हें कभी स्थाई सरकार की बागडोर नहीं मिली, लेकिन थोड़े से समय में भी उन्होंने अपने एक अमिट छाप शासन पर छोड़ी। जो उचित हो, वह काम हर कीमत पर होना चाहिए और अनुचित काम मुख्यमंत्रित्व की कीमत पर भी नहीं हो सकता।

जीवन-दर्शन की सहज कविता

एक उदाहरण दे रहा हूं, संविद (संयुक्त विधायक दल) की सरकार कुछ पार्टियों की मिली-जुली सरकार थी और एक भी घटक का समर्थन न रहने पर सरकार गिर सकती थी। इस प्रकार की सरकार के मुख्यमंत्री थे चौंधरी चरण सिंह। फिर यह हुआ कि तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी उत्तर प्रदेश के दौर पर आयीं। उनके दौर की खबर होते ही संविद के एक घटक ने घोषणा की कि हम प्रधानमंत्री का घेराव करेंगे और उन्हें काशी के बाहर नहीं जाने देंगे। मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह के सामने यह एक ऐसी समस्या उत्पन्न हो गई, उसका हल उनकी सरकार के लिए घातक हो सकता था। यदि मुख्यमंत्री उन लोगों को घेराव न करने दें तो उन सबको गिरफ्तार करना पड़ेगा। जो प्रधानमंत्री का घेराव करना चाहते हैं और इस दशा में यदि उस घटक ने सरकार से अपना समर्थन हटा लिया तो सरकार गिर जायेगी। दूसरी ओर यदि प्रधानमंत्री का घेराव कर लेने दिया जाये (क्यों कि उससे उत्तर प्रदेश

की सरकार गिरने का खतरा टल जाता) तो मुख्यमंत्री चौधरी चरणसिंह की व्यक्तिगत 'इमेज' को धक्का लगता। चौधरी साहब मुख्यमंत्री हों और प्रधानमंत्री (चाहे वे विरोधी दल के ही क्यों न हो) का घेराव कर लिया जाये, यह सम्भव नहीं था। चौधरी साहब स्वयं प्रधानमंत्री के साथ उनके दौरे के समय रहे ताकि इस सम्बन्ध में की गई व्यवस्था वे स्वयं देख सकें और सरकार रहे या न रहे, किसी को यह कहने का अवसर न मिले कि चौधरी साहब के मुख्यमंत्रित्व में 'लॉ एण्ड ऑर्डर' में जरा-सी भी ढील हुई। उनके गृहमंत्री बनने के बाद भारत सरकार के गृहमंत्री पद की प्रतिष्ठा एक बार फिर अपने सर्वोच्च शिखर पर है।

जो लोग चौधरी साहब को पूरी तरह नहीं जानते, वे समझते हैं कि चौधरी साहब बड़े कठोर दिल के और सबको डांटने-फटकारने वाले व्यक्ति हैं। उनकी कठोरता के पीछे जो सहृदय व्यक्तित्व छिपा है, वह यदि उनके साथ कोई चौबीस घंटे भी रह ले, तो उजागर हो जाता है। एक दिन रात को करीब ग्यारह बजे उनके घर गया तो उन्हें कुछ उदास-सा पाया। जिज्ञासावस मैंने पूछा कि उनके उदास होने का कारण क्या है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्होंने अप्रत्याशित बात कही। बोले, "तिवारी, काश मेरी उम्र दस वर्ष कम हो जाती, तो मैं उन लोगों की सेवा और सक्रिय रूप से कर सकता, जो कष्ट में हैं और जिसकी सुनने वाला कोई नहीं है।" बाद में पता चला कि उनके माल एवन्यू के घर पर रात दस बजे कोई बुढ़िया किसी गांव से आई थी, जिसके साथ गाँव पुलिस ने कुछ ज्यादती की थी। किसी को कष्ट में देखकर अपनी उम्र दस वर्ष घटाने की ईश्वर से प्रार्थना अपने-आप में एक कविता की पंक्ति जैसी लगती है, उनके जीवन-दर्शन को सार्थक और सशक्त सिद्ध करने वाली सहज कविता राजकर्मचारी उन्हें अपने मसीहा मानते रहे। लखनऊ में कुछ वर्षों पूर्व खुलेआम यह घोषणा करके कि हम राज्य कर्मचारियों को कुछ भी नहीं दे सकेंगे, उन्होंने लखनऊ की प्रतिष्ठा-सीट जहाँ राज-कर्मचारियों की संख्या बहुत है, जीती थी। यह इसलिये सम्भव हो सका

था। क्यों कि राजकर्मचारी यह जानते थे कि चौधरी साहब जो कहते हैं, उसका मतलब वही होता है और उसके अतिरिक्त कुछ नहीं। वह किसी को अपने साथ आने के लिए प्रलोभन नहीं देते, वरन कठिनाई का रास्ता बताते हैं। और मजा यह कि लोग उनके साथ कठिनाई का रास्ता भी तय करने के लिए तैयार हो जाते रहे।

उनके साथ अनेक बार दौरों पर जाने का मौका मिला, जहाँ वे जन-सभाओं को सम्बोधित करते थे, मैंने देखा कि, उनके शहर के भाषणों और गांवों के भाषणों में बहुत अन्तर होता था, ऐसा शायद ही कभी हो, जब उन्होंने केवल शहर का ही कोई कार्यक्रम स्वीकार किया। वे हमेशा ग्रामीण अंचल से अपने को जोड़ते रहे हैं और गांव वाले उन्हें हमेशा अपना संरक्षक मानते रहे हैं, गांवों के भाषणों में उनकी भाषा ग्रामीण और गांव वालों की समस्याएं उनके भाषण के विषय होते हैं और शैली बातचीत की, जो गांव वालों तक सीधी पहुंचती है।

चौधरी साहब का जन्म १९०२ में हुआ और २७ वर्ष की आयु में उन्होंने कांग्रेस की सक्रिय सदस्यता ग्रहण की थी। एम.ए., एल.एल.बी., करने के बाद वे अपनी वकालत ज़मा ही रहे थे कि १९३७ में उन्हें विधानसभा का सदस्य चुन लिया गया। तब से आज तक उनकी लम्बी जनसेवा की यात्रा बहुत लोगों के लिए आदर्श बनी हुई है, क्यों कि वह एक ऐसे व्यक्ति की जीवन-यात्रा है, जो आदर्शों की स्थापना के लिए जीता है।

—सुरेन्द्र तिवारी

ऋषि दयानन्द के भक्त : चौधरी चरणसिंह

—डा० भवानीलाल भारतीय

चौधरी चरणसिंह के निधन के साथ ही गांधीवादी राजनीति के युग की समाप्ति हो गई। १९०२ में जन्मे चरणसिंह अपनी युवावस्था में ही आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और ऋषि दयानन्द के कट्टर भक्त बन ये। गाजियाबाद और मेरठ में वकालत करते समय वे आर्यसमाज की

गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। उन्होंने इन नगरों की आर्य समाज में मंत्री पद पर भी कार्य किया था। साप्ताहिक सत्संगों में नियमित रूप में उपस्थित होने में कभी नागा नहीं करते थे। दयानन्द के राष्ट्रवादी विचारों ने ही उन्हें देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भाग लेने की प्रेरणा दी और महात्मा गांधी के अनुयायी बन कर राजनीति में प्रविष्ट हुए। ज्यों-ज्यों राष्ट्रीय आन्दोलनों में उनकी गतिविधियाँ बढ़ती गई आर्य सामाजिक कार्यों के लिए समय की न्यूनता होती रही, किन्तु ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी सामाजिक और राष्ट्रीय विचारों के प्रति उनकी निष्ठा यथावत् बनी रही।

१६४६ से १६५२ तक वे भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के प्रधान रहे। मैंने १६४६ में इसी परिषद् द्वारा संचालित सिद्धान्तशास्त्री तथा १६५२ में सिद्धान्तवाचस्पति की परीक्षाएं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। इन दोनों परीक्षाओ के प्रमाणपत्रों पर परिषद् के प्रधान चरणसिंह M.L.A. के हस्ताक्षर अंकित हैं।

१६६४ में जव काशी शास्त्रार्थ का शताब्दी समारोह वाराणसी में आयोजित किया गया, उस समय चौधरी साहब उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री वे स्वयं समारोह में पधारे और ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित की। अक्तूबर १६७६ में जब पानीपत में सत्यार्थप्रकाश शताब्दी मनाई गई उस समय वे भारत के प्रधानमंत्री पद पर थे। १४ अक्तूबर को जब उन्होने इस समारोह में पदार्पण किया तो परोपकारिणी सभा की ओर से मैंने तथा सभा के स्वर्गीय मंत्री श्री करणजी शारदा ने उनका माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया था। उन्हीं दिनों वे परोपकारिणी सभा के प्रधान भी थे। भारत के गृहमंत्री पद पर कार्य करते हुए उन्होंने ऋषि की निर्वाण शताब्दी पर केन्द्रीय सरकार की ओर से एक अच्छी राशि आर्थिक सहायता के रूप में दिलाने का भी वचन किया था, किन्तु जनता सरकार की आन्तरिक उलझनों में फँसे रहने के कारण वे यह कार्य नहीं करा सके।

पानीपत के उक्त समारोह में भाषण देते हुए चौधरी साहब ने स्पष्ट

कहा था कि अपने जीवन के प्रारम्भकाल मे ही मैं एक निष्ठावान् आर्य समाजी हूं। मेरी यह सदा इच्छा रही हैं कि मैं जहां भी रहूं आर्यसमाज में सदा जाता रहूं। उन्होंने इस बात को स्पष्टतया माना कि राजनीति तो कीचड़ है जिसमें वे स्वयं आपादमस्तक लिप्त हैं, तथापि ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज का गुणानुवाद करने में उन्होंने स्वयं को धन्य माना। अपने तर्कपूर्ण एवं विश्लेषण प्रधान भाषण में चौधरी साहब ने हिन्दू जाति के वर्तमान पतन के निम्न कारण बताये जो ऋषि दयानन्द के चिन्तन के सर्वथा अनुरूप ही थे—

१. हिन्दू जाति ने संसार को मिथ्या मान लिया, यही उसके पतन का कारण बना।

२. हिन्दू जाति ने पुरुषार्थ की अपेक्षा भाग्य को महत्व दिया, जिससे वे बलहीन होकर पराजित हुए।

३. हिन्दू समाज में प्रचलित जाति-प्रथा ने उसे दुर्बल बनाया।

अपने गृहमंत्री काल में गुजरात यात्रा के दौरान वे समय निकाल कर स्वामी दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा को देखने आये। महर्षि महालय तथा स्वामी दयानन्द से सम्बन्धित अन्य स्थानों को उन्होने भावविभोर होकर देखा तथा महर्षि स्मारक को ५ हजार रुपया भेंट किया। उन्होंने स्वामी दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पुनः इस स्थान पर आने की इच्छा प्रकट की।

सुप्रसिद्ध साप्ताहिक रविवार को एक भेंट में उन्होंने कहा था कि यों तो वे गांधी, रविन्द्रनाथ तथा अन्य अनेक महापुरुषों से प्रभावित हुए हैं किन्तु उन्हे सच्चा प्यार तो दयानन्द से ही है।

जब चौधरीचरण सिंह ने आर्यसमाज के सिद्धान्त की लाज रखी

घटना उस समय की है जब भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति स्वानामधन्य श्री घनश्याम दास बिड़ला का देहावसान हो गया था और दिल्ली नागरिक परिषद् ने उनकी स्मृति में एक शोक सभा का आयोजन पिक्की

हाल, नई दिल्ली में किया था। इस अवसर पर कुछ वक्ता थे सर्वश्री अटल बिहारी वाजपेयी, डा० कर्णसिंह, कवल लाल गुप्त, हेमवती नन्दन बहुगुणा तथा बलराज मधोक। संचालक महोदय ने सभी वक्ताओं से एक-एक करके सभी वक्ताओं से कहा कि वे स्वर्गीय बिड़ला जी की मूर्ति पर माल्यार्पण करें, सभी ने एक-एक करके उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण किया। जब चौधरी चरण सिंह से माल्यार्पण हेतु कहा गया तो उन्होंने मूर्ति पर माल्यार्पण नहीं किया। हाल में बैठे हुए कुछ श्रोतागणों ने कहा कि देखो ये चौधरी भी कितना घमण्डी है। मैं भी इन्हीं श्रोताओं के बीच में बैठा हुआ था और मैं चौधरी साहब के प्रति ऐसे विचार नहीं सुन सका। मैंने उन व्यक्तियों से कहा कि चौधरी साहब ने घमण्ड के कारण नहीं, बल्कि आर्य विचारधारा से सम्बन्धित होने के कारण बिड़ला जी की मूर्ति पर माल्यार्पण नहीं किया। आर्य समाज इसे वेद विरुद्ध मानता है। जब कार्य-क्रम समाप्त हुआ और सभी नेतागण हाल से बाहर आ गये तब मैंने चुप-चाप एक स्लिप पर यह लिखा—"आदरणीय चौधरी साहब, मैं समस्त आर्य जनों की ओर से आपका अभिनन्दन करता हूं क्योंकि आपने आर्य समाज के सिद्धान्त की रक्षा की है।" यह लिख कर वह चिट मैंने चुपचाप चौधरी साहब को देकर एक किनारे खड़ा हो गया। चौधरी साहब ने उस चिट को पढ़ कर खड़े हुए लोगों से पूछा कि मामचन्द रिवारिया कौन से हैं? मेरा नाम सुन कर श्री बलराज मधोक ने कहा कि मामचन्द रिवा-रिया तो ये खड़े हैं। तब चौधरी साहब ने कहा कि इतनी बड़ी भीड़ में एक ने तो मेरे आर्य होने की प्रशंसा की। उन्होंने मेरा धन्यवाद किया और उस चिट को अपनी जेब में रख लिया। आज भी मैं उस घटना का याद कर रोमांचित हो उठता हूं।

सच्चा स्वामी दयानन्द का भक्त वही है जो किसी भी कीमत पर सिद्धान्तों से समझौता नहीं करता है। संसार में उन्हीं महापुरुषों की परमगाथा को गाया जाता है जो सिद्धान्तों पर चट्टान की तरह अडिग रहते हैं।

—मामचन्द रिवारिया

चौधरी चरणसिंह के न रहने का अर्थ

वह अभी और जीना चाहते थे। उनके सपने अभी अधूरे थे जिन्हें उन्हें पूरा करना था। वह शहरी अभीजात राजनीतिज्ञों के बीच कंधे पर हल लिये किसान को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। वह गांव की पंचायत को दिल्ली के तख्त पर बिठाना चाहते थे। इस सपने का उनके पास एक खाका था, जिसे वह राष्ट्रपति प्रणाली पर चार खण्डों की किताब लिखकर बताना चाहते थे, जिसका ७० पेज वह लिख भी चुके थे। वह दो बार मुख्यमंत्री और एक बार देश के प्रधानमंत्री तो जरूर बन गये थे, लेकिन यह सफलता उन्हें दूसरों के समर्थन की बैसाखियों के सहारे मिली थी और वह भी थोड़े-थोड़े समय के लिए। उनकी अन्तिम इच्छा थी कि वह एक बार अपने बल पर और पूरे कार्यकाल तक के लिए दिल्ली की गद्दी पर बैठ जायें, ताकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के अपने खाके में बखूबी रंग भर सकें। वह अपने नाम के साथ लगे इस कलंक के धब्बे कि 'भारत का ऐसा प्रधानमंत्री जिसने कभी संसद का सामना नहीं किया' को मिटाना चाहते थे।

लेकिन वक्त ने उनका साथ नहीं दिया। २९ नवम्बर, १९८५ को पक्षाघात के हमले ने उनकी कलम और गति रोक दी। अपने सपने को संजोये पूरे डेढ़ वर्ष तक वह मौत से जूझते रहे, पर अन्ततः २९ मई, १९८७ को वे मौत से हार गये और इसी के साथ भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण अध्याय समाप्त हो गया।

८५ वर्ष की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते चौधरी चरण सिंह उत्तर भारत की पिछड़ी जातियों और मझोले किसानों के नायक बन चुके थे। उनकी आकांक्षाओं के पर्याय बन चुके थे। उनके होने का अर्थ था केन्द्रीय सत्ता की देहलीज पर देश की किसान राजनीति का निरन्तर दस्तक देते रहना। अब उनके न होने का अर्थ है—एक बड़ा शून्य। लोगों को यह सवाल अब वर्षों तक कचोटता रहेगा कि इस शून्य को कौन भरेगा ?

चौधरी साहब विरासत में जो टूटा हुआ निराशा लोकदल छोड़ गये हैं, क्या वह उनके सपने को सहेज सकेगा, इसका जवाब फिलहाल किसी के पास नहीं है। लेकिन इस मुकाम पर उन घटनाओं, प्रवृत्तियों और परिस्थितियों की पड़ताल जरूरी है, जिन्होंने नूरपुर के एक किसान-पुत्र को मंझोले किसानों और पिछड़ी जातियों का प्रतीक-पुरुष बनाया।

किसानों के रहनुमा : चौधरी चरण सिंह किसानों के नायक अचानक नहीं बने, वरन् इसके पीछे उनके संघर्ष की लम्बी परम्परा है। १९३२ में राजनीति में पदार्पण करने के साथ ही चरण सिंह ने अपनी राह चुन ली थी। उन्हें यह बात सालने लगी थी कि किसानों के समर्थन और ताकत के बल पर शहरी अभिजात तबका सत्ता का स्वाद चख रहा है, लेकिन उन किसानों की उसे जरा भी चिन्ता नहीं है, जो शोषित और उत्पीड़ित हैं, १९३२ में उन्होंने किसानों को व्यापारियों के शोषण और दबाव से मुक्ति दिलाने के लिये सुझाव देते हुए दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में 'एग्रीकल्चरल मार्केटिंग' शीर्षक से एक लेख लिखा था। यह लेख काफी चर्चित हुआ और आजादी के बाद इन्हीं सुझावों को पूरे देश में लागू किया गया। सन् '५० और ६० का' दशक देश में 'हरित क्रांति' का काल था और पंजाब ने उन सुझावों को सबसे पहले '५० में अपने यहां लागू किया। उत्तर प्रदेश में उन सुधारों को' ६४ में चरण सिंह के ही नेतृत्व में लागू किया गया।

चौधरी चरण सिंह ने १९३९ में उत्तर प्रदेश विधानसभा में निजी सदस्य की हैसियत से 'कृषि उत्पादन बाजार बिल' प्रस्तुत किया। इस बिल में किसानों को आर्थिक राहत का प्रावधान था। १९३९ में ही उनकी दो पुस्तकें 'किसान स्वामित्व' और 'प्रिवेंशन आफ द डिवीजन आफ होल्डिंग बिलो ए सरटेन मिनिम' काफी चर्चित रहीं। इसी के आधार पर उन्होंने 'भूमि उपयोग बिल' तैयार किया, जिसमें जोतने वालों और भूमिहीनों को भूमि का स्वामित्व दिलाने का प्रावधान था। अप्रैल १९३९ में उन्होंने खेतिहर परिवार के लोगों के लिये सरकारी नौकरियों

में ५० प्रतिशत आरक्षण की मांग की। इसी वर्ष किसानों को कर्ज से मुक्ति दिलाने के लिये 'ऋण मुक्ति बिल' तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इस वक्त तक चरण सिंह किसान नेता के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे। जब जमींदारी प्रथा के उन्मूलन का निर्णय हुआ, तब उत्तर प्रदेश में गोविन्द बल्लभ पंत मुख्यमंत्री थे और चरण सिंह राजस्व और कृषि मंत्री। बहैसियत मंत्री चरण सिंह ने जमींदारी प्रथा के उन्मूलन में कितनी महत्व पूर्ण भूमिका अदा की, इसका प्रमाण प्रख्यात अन्तरराष्ट्रीय अर्थशास्त्री वुल्ड लेडिन्जेन्सकी की रिपोर्ट से मिलता है। जब जापान अमरीकी प्रभुत्व में था, तब लेडिन्जेन्सकी को जापान में जमींदारी खतम करने का सुझाव देने के लिए भेजा गया था। उसी लेडिन्जेन्सकी को भारत में कृषि उत्पादन बढ़ाने के वास्ते सुझाव देने के लिये फोर्ड फाउंडेशन की टीम ने भारत बुलवाया था। तीन वर्ष के अध्ययन के बाद १९६३ में लेडिन्जेन्सकी ने रिपोर्ट दी, जिसमें उसने चरण सिंह की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए लिखा—'जमींदारी उन्मूलन भारत में सिर्फ उत्तर प्रदेश में ही वास्तविक रूप में हुआ है।

वस्तुतः, यही दौर था, जब चरणसिंह पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाटों के बीच नायक बन गये थे, क्योंकि जमीदारी उन्मूलन सर्वाधिक प्रभावी रूप में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हुआ। ३० एकड़ से बड़े जोतदार वहाँ आज गिने-चुने ही मिल सकेंगे। इसी दौर में भारतीय राजनीति में मंझोले किसानों का वजन बढ़ रहा था। तमिलनाडु में कामराज, आंध्र में संजीव रेड्डी, गुजरात में चिमन भाई पटेल, पंजाब में प्रताप सिंह कैरो, हरियाणा में देवीलाल हरित क्रांति के बाद मंझले किसानों के नेता थे, लेकिन चरण सिंह उन सभी में आगे निकल चुके थे। बतौर मुख्यमंत्री पटवारियों की जगह लेखपालों की नियुक्ति कर तथा भूमि सुधारों के नाते पूरे प्रदेश में एकछत्र 'किसान नेता' बन चुके थे। एक तरफ चरण सिंह जहां यह जोर दे रहें थे कि किसानो की खेती कम-से-कम ढ़ाई एकड़

और अधिक-से-अधिक साढ़े सत्ताईस एकड़ होनी चाहिए, वहीं वह नेहरू के 'सामुदायिक खेती' के प्रगतिशील प्रस्ताव से भी लड़ रहे थे। सामुदायिक खेती के विरोध के बाद ही उन्हें 'कुलक' नेता कहा जाने लगा था।

हालांकि इस आरोप का जवाब देते हुए चरण सिंह ने एक साक्षात्कार में कहा था कि उन्हें कुलक नेता तथाकथित प्रगतिशील नासमझी में कह रहे हैं। रूस में 'मनीलेंडिंग' का काम करने वाले शोषक 'कुलक' कहलाते थे। कम्युनिस्टों ने जमींदारों को 'कुलक' कहना शुरू कर दिया। "मैं तो जमींदारों को उनकी जमीन पर हक देने की बात के विरोध में लड़ रहा था, फिर कुलक नेता मैं हुआ या वे जो जमींदारों के समर्थन में बोल रहे हैं।"

चरण सिंह आलोचनाओं से कभी डरे नहीं, अपनी राह चलते रहे और अपनी बात कहते रहे। अपनी बात पर अड़ जाने की उनकी आदत ने उन्हें 'अड़ियल और जिद्दी' के रूप में काफी बदनाम भी किया।

विरोधाभासों का पुतला : लेकिन चरण सिंह की इसी ठेठ किसान शैली, अड़ियल रुख ने उन्हें समकालीन भारतीय राजनीति का सर्वाधिक विवादास्पद व्यक्ति बना दिया था। वह विवादास्पद इसलिए भी थे कि उनका व्यक्तित्व विरोधाभासों से भरा था। वह निजी जीवन में निहायत सादा और ईमानदारी के पक्षधर थे, लेकिन यह भी मानते थे कि जनता की सेवा बगैर सत्ता के नहीं हो सकती। इसलिए उन्होंने सत्ता प्राप्त करने के लिए हर उस आदमी से मदद ली, जिसे गाली देते रहे। अपनी जिन्दगी में उन्होंने सात बार दलबदल किया। उत्तर प्रदेश में वह उन लोगों का सहयोग लेकर दो बार मुख्यमंत्री बने, जिनकी वह अलोचना करते रहे। जिन श्रीमती गांधी को सख्त सजा देने की वकालत किया करते थे, उन्हीं श्रीमती गांधी से हाथ मिलाकर प्रधानमंत्री के कुरसी तक पहुंचे। जिन बहुगुणा को वह 'के०जी०बी०' का एजेन्ट कहते रहे, उन्हें अपने अन्तिम दिनों में सबसे विश्वसनीय बना लिया।

लेकिन ऐसी भी घटना है कि सिद्धान्त की खातिर उन्होंने पद भी छोड़ा। सामुदायिक खेती के प्रस्ताव का विरोध करते हुए सम्पूर्णानन्द के मंत्रिमण्डल से इस्तीफा यही दर्शाता है। उनकी संविद सरकार भी सिद्धांत के मुद्दे पर गिरी। संविद सरकार में घटक दलों की सारी बातें तो वह मान गये, लेकिन सवा छह एकड़ तक की खेती से लगान माफ करने से मुकर गये, नतीजतन अन्य घटकों ने सरकार से समर्थन वापस ले लिया और सरकार गिर गयी। उनके व्यक्तित्व का यह विरोधाभासपूर्ण पहलू ही था कि जब सत्ता से बाहर होते थे, तो किसी से समझौता कर लेते थे, लेकिन सत्ता में होते ही वह सिद्धांत पर अड़ जाते थे, भले ही उनकी सरकार गिर जाये।

चौधरी साहब राजनीतिक जीवन में व्यक्तिगत ईमानदारी की पक्षधरता के इस हद तक कायल थे कि भारतीय क्रांति दल के सिद्धांत वक्तव्य में उन्होंने लिखवाया कि १० हजार से अधिक मासिक आय वाले व्यक्ति पार्टी के सदस्य नहीं हो सकते। लेकिन कुछ दिनों बाद ओबराय होटल के मालिक मोहन सिंह भारतीय क्रांतिदल के कोषाध्यक्ष तथा मेरठ के पृथ्वी नाथ सेठ राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य बनाये गये।

इसी तरह १९७८ में उनके जन्मदिन पर समर्थकों ने एक करोड़ की थैली भेंट की। हरियाणा इसमें सबसे आगे था। हरियाणा के चौधरी देवीलाल के पुत्र ओमप्रकाश के हाथों उन्होंने ५१ लाख की थैली स्वीकार कर ली, जिन्हें कुछ दिन पहले ही कस्टम अधिकारियों ने हवाई अड्डे पर तस्करी के सामान के साथ पकड़ा था।

चौधरी साहब की थाती पिछड़े वर्गों की राजनीति रही है। वह जानते थे कि उनके पीछे खड़ी जनता जातिवादी आधार पर भी जुट रही है, लेकिन अपनी राजनीतिक शैली में उन्होंने कोई तबदीली नहीं की। वहीं दूसरी तरफ यह भी दिखायी पड़ता है कि वह जातिवाद के घोर विरोधी रहे हैं। १९३९ में कांग्रेस विधायक दल के सामने उन्होंने प्रस्ताव रखा था की जो हिन्दू प्रत्याशी किसी शैक्षणिक संस्था अथवा लोकसेवा में

प्रवेश प्राप्त करे, उससे उसकी जाति की बाबत कोई जांच न की जाये। ७६ में उन्होंने मुख्यमंत्री गोविन्द बल्लभ पंत को पत्र लिखा कि जाति के नाम पर चलने वाली किसी संस्था को कोई अनुदान न दिया जाये। पं० जवाहर लाल नेहरू को पत्र लिखकर यह मांग की थी कि राजपत्रित पद पर उन्हीं लोगों को लिया जाये, जिन्होंने अन्तरजातिय विवाह किया है। 'जाट नेता' कहने पर चौधरी साहब बहुत चिढ़ते थे।

चौधरी चरण सिंह के व्यक्तित्व के इसी विरोधाभास ने उन्हें भारतीय राजनीति का 'खलनायक' बना दिया था। उन्हें औद्योगीकरण के विरोधी के रूप में देखा जाने लगा था। हालांकि इन आरोपों का जवाब उन्होंने अपनी पुस्तक 'इकोनामिक नाइटमेयर' में दिया। एक साक्षात्कार में उनका कहना था—"हम किसानों की तादाद बढ़ाना नहीं चाहते, कम करना चाहते हैं। लेकिन जब तक किसानों की क्रय शक्ति नहीं बढ़ेगी। नान एग्रीकल्चरल गुड्स की मांग नहीं बढ़ेगी। उत्पादन जब खेतीबाड़ी का बढ़ता है, तब वर्कर रिलीज होते हैं। संयुक्त राज्य अमरीका में १८२० में ८७ प्रतिशत किसान थे और भारत में ५० प्रतिशत। अब अमरीका में तीन प्रतिशत किसान हैं। ८७ प्रतिशत रिलीज हो गये और हमारे यहां आज भी ७२ प्रतिशत किसान हैं। क्या होगा औद्योगिक विकास का ?"

बहराल, अपने को आचार्य कृपलानी, सरदार पटेल और विनोबा भावे की परम्परा के नजदीक मानने वाले चरण सिंह की खूबियों और खामियों की अपने-अपने ढंग से लोग व्याख्या करते रहेंगे, लेकिन इस बात से किसी को ऐतराज नहीं होगा कि स्वातंत्र्योत्तर भारत के राजनीतिक परिदृश्य को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले चरण सिंह ने राजनीति में जिस 'किसान शक्ति' को जन्म दिया है, वह भविष्य की राजनीति में हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता रहेगा।

—रामेश्वर पाण्डेय

ये अमर हैं हमारी यादों में—श्वासों में

श्री अजयसिंह, सम्पादक, असली भारत, दिल्ली

पिछले दिनों मैं हरियाणा चुनाव की सरगरमियों में व्यस्त था। रोज सवेरे ही घर से निकल जाता, और देर रात गये घर लौटना होता था। २८-२९ मई की रात को भी इसी भाग-दौड़ के कारण रात को लगभग १२.३० बजे घर पहुंचा था। घर पहुंचे हुए अभी कुछ ही समय बीता कि फोन आया, जिसमें तुरन्त आने को कहा गया था। मेरे मन में आशंकाओं का ऐक तेज बवंडर उठ खड़ा हुआ। अन्दर एक विचार कोंध उठा, "कहीं वह बुरा क्षण तो नहीं आ गया, जिसके प्रति मैं संशकित रहता था।

मैं बिना एक पल की देर किये तेज ड्राईविंग करता हुआ १२ तुगलक रोड पहुंचा। मुझे याद नहीं पड़ता कि इतनी तेज ड्राइविंग मैंने इससे पहले कब की थी? पर मैं अपनी सारी कोशिशों के बावजूद वक्त से पांच मिनट पीछे रह गया।

मैं जिस समय १२-तुगलक रोड़ पहुंचा, वहां एक घनीभूत सन्नाटा छाया हुआ था। मातमी अन्धेरा कोठी में पसरा हुआ था। मैं उस कक्ष में पहूंचा, जहाँ चौधरी साहब का बिस्तर था। वहां जो कुछ देखा उससे एक बारगी मेरा मन हिल गया। भारतीय राजनीति का वह लोह पुरुष, अपराजेय व्यक्तित्व, जिसकी एक जुम्बिश पर करोड़ों हाथ उठ खडे होते थे, आज डा० जे० पी० सिंह, करतार सिंह, भाई अजीतसिंह, माता गायत्री देवी और राम मनोहर लोंहिया अस्पताल के चंद डाक्टरों के बीच निस्पंद पड़ा हुआ था।

लगभग डेढ़ साल से चौधरी साहब बीमार थे किन्तु उनके निधन का समाचार जिस अचानक ढंग से सामने आया, उससे एकाएक मुझे झटका लगा। इस घड़ी के बाद व्यस्तता का एक दौर शुरू हुआ। निधन के बाद से, शव-यात्रा शुरू होने से पहले तक कुछ सोचने-समझने या अहसास करने का समय ही न मिला। किन्तु जब हम उनके पार्थिव शरीर को

कोठी के बाहर लाये और सैनिकों को सौंप दिया, तब बहुत तेजी से एक दर्द का अहसास हुआ, लगा कि हमने अपने चौधरी साहब को, सरकार के हाथों सौंप दिया है, जो उसके भूतपूर्व प्रधानमंत्री थे।

अंतिम यात्रा के दौरान यही अहसास मुझे रह-रह कर सालता रहा, अपने आदर्श पुरुष से बिछुड़ने का अहसास। शव यात्रा के दौरान रह-रह कर मेरे मन, मस्तिष्क में अनेक बिम्ब उभर रहे थे। मुझे याद आया चौधरी साहब उस समय भारत सरकार में प्रधानमंत्री थे। १९७७ में गृहमंत्री पद की शपथ लेने के दूसरे दिन "इण्डिया टुडे" की ओर से मैं उन्हें इन्टरव्यू करने गया था। वैसे तो बचपन से ही, चौधरी साहब के विषय में, उनके अनुशासन और सादगी के विषय में अपने पिता कैं० भगवान सिंह से काफी कुछ सुनता आया था। पिताजी बुलन्दशहर, बरेली और फैजाबाद जिलों में जिलाधीश रह चुके हैं। वह चौधरी साहब की प्रशासनीक क्षमता और ईमानदारी के विषय में अक्सर बताया करते थे। उसी दौरान चौधरी साहब द्वारा तैयार किये गये जमींदारी उन्मूलन विधेयक के विषय में भी काफी कुछ सुना था।

कालेज की पढ़ाई समाप्त कर उच्च अध्ययन हेतु मैं विदेश चला गया। विदेश से अध्ययन कर देश वापिस लौटा। मैंने यहाँ के राजनेताओं में चौधरी साहब को एक सरल और सीधा-सादा इन्सान पाया। उसी दिन से मेरा उनसे भावनात्मक रिश्ता जुड़ गया। जो प्यार उन्होंने मुझे दिया वह किसी ने नहीं दिया।

जिस समय चौधरी साहब भारत सरकार में गृहमंत्री तथा प्रधानमंत्री के पद पर आसीन रहे, उन्होंने मुझे अपने साथ काम करने के लिये बुलाया था। उस समय मैंने विनम्रतापूर्वक अपनी असमर्थता चौधरी साहब से जाहिर कर दी थी, क्यों कि उस समय वह सत्ता में थे और उनके साथ काम करने वालों की कमी न थी।

१९८० के विधान सभा चुनाव के दौरान उन्होंने मुझे फिर बुलाया और अपने साथ सहयोग करने को कहा। तब वह सत्ता में नहीं थे मैं

उनके साथ जुड़ गया। इसके बाद चौधरी साहब ने कई बार मुझसे पार्टी में पद लेने और आगे बढ़कर काम करने को कहा किन्तु मैंने हर बार उन्हें यही जवाब दिया कि आपके दिशा-निर्देशन से यह मेरे लिए कुछ सीखने और समझने का समय है।

इस बीच उन्होंने पार्टी में मुझे कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपी थीं। विपक्षी एकता के मुद्दे पर आन्ध्र के मुख्यमंत्री श्री एन.टी. रामाराव से बात करने के लिए चौधरी साहब ने मुझे उनके पास भेजा था।

इसी तरह १९८४ में जब चौधरी साहब पार्टी का पुनर्गठन कर रहे थे। तब देवीलाल जी से बात करने के लिए उन्होंने मुझे ही भेजा था। शायद बहुत कम लोगों को पता होगा कि चौधरी साहब और श्री देवीलाल की प्रारम्भिक बातचीत के दौर मेरे घर पर ही चले थे, जिनमें चौधरी साहब, देवीलाल जी, करतार सिंह और मेरे अलावा कोई अन्य व्यक्ति मौजूद नहीं होता था।

इसी तरह १९८४ में उन्होंने श्री हेमवती बहुगुणा से बातचीत करने के लिए मुझे ही भेजा। उस समय बहुगुणा जी की डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट पार्टी थी। बहुगुणा जी के साथ चौधरी साहब की बातचीत के दौर भी मेरे ही घर पर चले थे ? उस वक्त भी बातचीत के दौरान चौधरी साहब, बहुगुणा जी, उनके अंग-रक्षक करतार सिंह और मैं ही मौजूद थे।

श्री बहुगुणा ने एक बत्तीस सूत्री कार्यक्रम मुझे लिखकर दिया और कहा कि चौधरी साहब को दिखा देना। हम दोनों इस कार्यक्रम के आधार पर एक सम्मिलित बयान जारी कर देंगे।"

मैं सीधेपन में चौधरी साहब के पास उस कागज को लेकर पहुंच गया और साथ ही, बहुगुणा जी ने जो कुछ कहा था, उन्हें बता दिया। मैंने कहा कि इस ३२ सूत्री कार्यक्रम के आधार पर संयुक्त बयान जारी करने के बाद बहुगुणा जी आपकी पार्टी में आ जायेंगे।

चौधरी साहब ने पहले तो मुझे देखा और मुस्कराए, फिर बोले, "अजय तू भी बहुत भोला है" और इतना कहते-कहते उन्होंने वह ३२

सूत्री कागज फाड़ दिया। कागज को डस्टबिन में डालते हुए चौधरी साहब ने कहा कि "बहुगुणा से कह देना कि आना है, तो पार्टी में आ जायें, नहीं तो रहने दें।"

मैं वापस बहुगुणा जी के पास पहुंचा और उनसे कहा कि "बयान वगैरह तो बाद में होते रहेंगे, इस समय तो एक पार्टी बनानी है। इसलिए आप बिना किसी शर्त के चौधरी साहब के साथ शामिल हो जायें। बहुगुणा जी राजनीति के माहिर खिलाड़ी हैं। वह मेरा मतलब समझ गये थे और मौके की नजाकत भी। उसके बाद वह चौधरी साहब के साथ आ गये।

उन्हीं दिनों चन्द्रशेखर जी से भी एकता की पहल हुई थी। तब भी श्री चन्द्रशेखर और श्री बीजू पटनायक से बातचीत करने के लिए चौधरी साहब ने मुझे ही भेजा था। चौधरी साहब की ओर से इन वार्तालापों में श्री सत्य प्रकाश मालवीय, मुझे तथा अन्य कुछ लोगों को ही भेजा जाया करता था। यह बात-चीत क्यों टूटी, इसका एक लम्बा इतिहास है।

चौधरी साहब ने १९८२ की गर्मियों में महाराष्ट्र के प्रख्यात, शेतकारी संगठन के नेता श्री शरद जोशी से मिलने, उनके विचारों और कार्यक्रमों की जानकारी लेने का दायित्व भी मुझे ही सौंपा था। इस सन्दर्भ में मैं पूना गया था तथा बाद में चौधरी साहब और श्री शरद जोशी की कई मुलाकातें भी हुईं।

इस सारे दौर में जब चौधरी साहब के बेहद नजदीक रहा, मैंने उनके विचार और व्यक्तित्व का बहुत गहराई से अध्ययन किया। मैंने खुद भी उनसे बहुत कुछ सीखा, गांव-ज्वार और धरती से जुड़ा सादगी का प्रतीक पुरुष, करोड़ों लोगों का नायक किस प्रकार बन गया, इस बात पर भी मैंने गहराई से अध्ययन किया। इसके मूल में चौधरी साहब की कुछ विशेषताएं थीं।

चौधरी साहब का हर कार्यकर्ता से सीधा सम्पर्क था। पत्रकारों के अपने जीवन में कई राजनेताओं से मिला किन्तु किसी नेता का भी अपने

कार्यकर्ता से इतना नजदीक रिश्ता और व्यक्तिगत पहचान मैंने नहीं पाई, जितनी चौधरी साहब और उनके कार्यकर्ताओं के बीच था। चौधरी साहब और कार्यकर्ताओं के बीच प्रगाढ़ रिश्तों के चार कारण थे—एक-किसान, मजदूरों और दबे-पिछड़े लोग के लिए जीवन भर का संघर्ष, दूसरा ईमानदारी, तीसरा-सादगी-पूर्ण जीवन-शैली, चौथा-चौधरी साहब का कार्यकर्ताओं के साथ सीधा सम्पर्क।

मैंने कई बार देखा था, हजारों कार्यकर्ताओं के बीच से चौधरी साहब किसी भी एक कार्यकर्ता को नाम लेकर पुकार लिया करते थे। देश की समस्याओं पर वह कार्यकर्ताओं के साथ बैठकर बहस किया करते थे, उन्हें घण्टों समझाया करते थे। एक साधारण कार्यकर्ता और बड़े नेता के बीच जो दूरी होती है, चौधरी साहब ने उसे पूरी तरह मिटा दिया था।

चौधरी साहब के प्रति उनके कार्यकर्ताओं और समर्थकों का लगाव इस हद तक था कि चौधरी साहब यदि किसी बात पर, किसी कार्यकर्ता को डांट लगा देते थे, तो वह इसी अहसास को लेकर फूला न समाता था कि मेरे नेता ने मुझे डांटा है। इस रिश्ते को किन्हीं शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, क्यों कि सच्चाई और साफगोई के रिश्तों का कोई नाम नहीं हुआ करता है।

मैं चौधरी साहब की जनसभा में कई बार उनके साथ गया। मैंने वहाँ एक विचित्र बात देखी। चौधरी साहब अपने कार्यकर्ताओं के बीच जो भाषण देते थे, वह मनोरंजक नहीं होता था बल्कि तथ्यों पर आधारित होता था, ठोस आंकड़े होते थे उनके पास। उनकी शैली ऐसी हुआ करती थी मानो कोई स्कूल का अध्यापक अपने छात्रों को किसी विषय को समझा रहा है। वह बीच-बीच में लोगों से सवाल भी करते जाते थे। और यह भाषण १५-२० मिनट या आधा पौन घंटे का नहीं हुआ करता था, बल्कि घण्टों लम्बा होता था। और लोग थे कि पूरी रुचि और रुझान के साथ उनका भाषण सुना करते थे, मजाल है बीच में कोई उठकर चला जाये।

चौधरी साहब आज नहीं रहे हैं किन्तु अपने जीते-जी असली भारत का जो नक्शा हमें दे गये हैं, जीने और लड़ने का एक अन्दाज सिखा गये हैं, उसके चलते वह इस देश के करोड़ों-करोड़ों दबे-पिछड़े लोगों के दिल-दिमाग में जिन्दा हैं और सदैव जिन्दा रहेंगे।

उन्हें जैसे मैंने देखा

—श्री फौरन सिंह तांगर, आगरा

गांधीवादी चिंतक ग्रामोन्मुख आर्थिक नीति, पिछड़े वर्गों, दलित एवं पीड़ितों के मसीहा चौधरी चरण सिंह जी के निधन से जो रिक्तता देश में हुई है उसे कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता। वह अपने में एक संस्था थे, स्वच्छ एवं सच्चाई पूर्ण राजनीति के प्रेरक थे। सही मानों में वे गांधी एवं नेहरू युग की राजनीति के उपयुक्त थे। आज की गंदी राजीति में उन्हें राजनीतिज्ञ न कहके एक नेक इन्सान, सच्चा देश भक्त एवं यथार्थ चिंतक राजनेता ही कहा जाये तो अच्छा है।

मेरा प्रथम व्यक्तिगत परिचय सन् १९६७ के बाद ही हुआ, जब वे उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री बने और मैं उनके द्वारा बनाई गई जन कांग्रेस पार्टी में आगरा जिले में मंत्री था। एक बार घनिष्ट परिचय होने के बाद वह भूलते नहीं थे। मेरा परिचय मेरे अद्भुत नाम के कारण उनके मस्तिष्क में विशेष रूप से स्थिर रहा। प्रथम परिचय में ही उन्होंने मुझसे पूछा—"तुम्हरा फौरन सिंह नाम रखने का क्या तात्पर्य है।" मैंने उत्तर दिया "वह बात पिताजी को ही पता होगी परन्तु उनसे पूछने का मौका नहीं लग पाया क्योंकि वह मुझे ६ वर्ष का ही छोड़कर स्वर्ग चले गये"

अपने मुख्य मंत्री काल में आगरा में उनका आगमन हुआ उन दिनों में स्वर्गीय श्री राजेन्द्र दौनरिया पार्टी के जिला अध्यक्ष थे उनके ही यहां चौधरी साहब के भोजन का कार्यक्रम था। चौधरी साहब को खाना खाने के बाद एक डोंगे में हाथ धोने के लिए पानी उनके सामने किया गया तो यह वे कहते हुये उठे कि हाथ धोने एवं कुल्ला करने का उचित स्थान

नाली ही होता है और नाली पर जाकर ही उन्होंने कुल्ला किया और हाथ साफ किये। उन्हें व्यर्थ का आडम्बर कतई पसंद नहीं था जैसे दिल के अन्दर थे वैसे ही बाहर थे। झूठ से उन्हें बेहद चिढ़ थी।

अपने जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं को बारीकी से ध्यान में रखते थे परन्तु किसी के साथ किये हुये अहसान को कभी याद नहीं रखते थे। एक बार आगरा की घटना है—चौधरी साहब की कार राजा मण्डी चौराहे से सेंट जौंस की ओर गुजर रही थी जैसे ही आगरा कालेज की छटी कोठी छात्रावास के सामने से गुजरी थी उन्होंने ड्राईवर को इस छात्रावास में घुसने को कहा। छात्रावास में पहुंचकर अपने समय के कर्मचारियों को तलाश किया। संयोग से उनके समय का मेहतर (भंगी) उन्हें मिल गया, उससे बीते दिनों को याद कर बातें की, फिर उस कमरे में गये जिसमें रहा करते थे और उसमें रहने वाले छात्र से बातें की और कहा कि ऐसा कोई कार्य मत करना जिससे इस कमरे की बदनामी हो, मैं भी इस कमरे में कई वर्षों तक रहा हूँ।

चौधरी चरण सिंह : एक दर्शन

—श्री डा० कृष्ण शेखर राना, आगरा

भारतीय राजनैतिक क्षितिज पर महात्मा गांधी के बाद चौ० चरण सिंह ही दूसरे ऐसे इतिहास पुरुष हैं जो अपने जीवन काल में भव्यता से जन-मानस पर छाये रहे और इनको साथ लिए बिना किसी भी दल ने राजनीति नहीं चला पायी। कभी साम्यवादी चौधरी को किसान, मजदूरों के नेता मानकर उनसे निकटता कायम करते थे जैसे प्रधानमंत्री के सवाल पर उनका समर्थन साथ रहा तो कभी भारत के घोर प्रतिक्रियावादी तत्व भी उनके साथ गठबन्धन करते हुए अपने लिए शक्ति संचय करते रहे। जबकि चौ० चरणसिंह इन दोनों खेमों के मध्य ही सीमा रेखा पर अपने आदर्श लेकर खड़े रहे और बापू के सपनों का भारत बनाने में संघर्षशील रहे। यद्यपि वह स्वयं ३० वर्ष के लम्बे राजनैतिक जीवन में कांग्रेसी

रहे और विपक्ष में आने के बाद भी कांग्रेसी नेतृत्व सदैव उनको अपना लेने को प्रयत्नशील रहा, इसलिये १९६१ में उ० प्र० में कांग्रेस भा० क्रा० दल की साझा सरकार बनी और इन्दिराजी ने प्रगतिशील विचारों के समर्थन में श्री वी०वी० गिरी को राष्ट्रपति चुनवाना चौ० चरणसिंह की देन थी। इन्दिराजी ने बिना शर्त समर्थन देकर चरणसिंह को प्रधानमन्त्री चुनवाया, यह उग्र राजनैतिक विवादों की स्थिति में भी चौधरी के व्यक्तितत्व की विशेषता थी कि उनके बिना राजनीति चला पाना किसी भारतीय दल के लिए सम्भव न था।

चौधरी के मरणोपरान्त समूचे राष्ट्र के शिक्षाविदों, राजनीतिज्ञों एवं सरकार द्वारा उनको दिया गया सम्मान इस बात का प्रतीक है कि बुनियादि मतभेदों के बावजूद भी सभी भारतीय राजनीतिज्ञ उनका आलोचनात्मक दृष्टि से किन्तु श्रद्धापूर्वक नाम लेते हैं और उनके तथा उनकी उपलब्धि के बारे में जो वाह-वाही की जाती है, चाहे उसमें से काफी कुछ उन्हें स्वीकार न हो किन्तु सभी उनका ऐसे व्यक्ति के रूप में सम्मान करते हैं जिसने स्वयं को अन्य किसी से बढ़कर आम जनता के जीवन से मूलबद्ध किया था और भारतीय राजनैतिक वातावरण को इतना बदला जितना किसी एक व्यक्ति द्वारा संभव नहीं हो सकता।

जीवन मूल्यों में आदर्शवाद की स्थापना चौधरी के राजनैतिक जीवन की साधना रही। और कठिनतम परिस्थितियों में भी वह इस साधना से विचलित नहीं हुए। जिन अर्थों की स्थापना के लिए उन्होंने आवाज उठाई, अपने निजी जीवन में भी उनका निष्ठापूर्वक परिपालन किया। इसी प्रतिफल स्वरूप गांव के गरीब मजदूर-किसान उनके पीछे हो लिए और अपना एकमात्र चौधरी स्वीकार किया यद्यपि डा. लोहिया ने ग्रामीण जनसमुदाय को आंदोलित करने में बड़ी प्राणवान भूमिका अदा की थी किन्तु कांग्रेस के विरुद्ध प्रचंड जन जागरण का सेहरा व्यक्तिगत रूप से चौधरी के ही बंध सका। क्योंकि डा० लोहिया एवं बाबू जय प्रकाश जनता में आंदोलन तो खड़ा कर सके किन्तु जन विश्वास समूल प्राप्त

नहीं कर सके जिससे लोकतंत्र में वोट से सरकार बदल सके।

काश ! चौधरी भी आंदोलन और संघर्ष की राजनीति में डा० लोहिया की तरह प्रखर होते तो देश की राजनीति का नक्शा ही अलग होता। इस सवाल पर स्वयं चौधरी साहब ने अपनी भूल स्वीकार की थी किन्तु मजबूरी भी बताते थे। मुझे इस संदर्भ में एक वार्तालाप की स्मृतियाँ ताजा हो रही हैं। जून १९८४ में आगरा के वरिष्ठ पत्रकार की बेटी की शादी में होटल क्लार्कशीराज से लौटकर चौधरी साहब सर्किट हाउस में ठहरे थे। प्रात:काल दिल्ली मेरे एक मित्र आनन्द प्रकाश जैन की गाड़ी से चले तो रास्ते में पेट्रोलिंग पुलिस जीप पीछे छूट गई। कोसी पर मैंने अनुरोध किया, चौधरी साहब कोसी रेस्तरां बहुत अच्छी शान्तिप्रिय जगह है यहाँ चाय पी लें तब तक पुलिस गाड़ी आ जायेगी। बामुश्किल वे तैयार हुए तो बातों का सिलसिला चल पड़ा और लगभग ४० मिनट तक इसी सवाल पर बहस होती रही कि चौधरी साहब आप बहुत बुजुर्ग हैं और सम्मानित व्यक्ति हैं किन्तु एक बुद्धिजीवी समीक्षक के रूप में आप यह स्वीकार नहीं करते कि जनता सरकार के गृहमंत्री पद से त्यागपत्र देने के बाद से जो व्यापक जन समर्थन आपको मिला था उसे सघर्ष की राह में खड़ा करते हुए आपको पुनः मंत्रिमण्डल में शामिल नहीं होना चाहिए था ताकि आप भारत के 'माओत्से तुंग' बन जाते और, ग्रामीण भारत ही 'असली भारत' है, का आपका गांधी जी वाला नारा पूरा हो पाता।

चौधरी साहब ने इस तथ्य को तो स्वीकार कर लिया कि यह मुझसे भूल हो गई कि किसानों का संगठित आंदोलन खड़ा न कर सका लेकिन तत्कालिक मजबूरी भी बताई। उनका कहना था—"मंत्रिमण्डल में जाना मेरा इसलिये जरूरी हो गया था कि जनता उस समय सरकार हाथ में लेकर कुछ काम देखना चाहती थी, और मैं स्वयं भी इस मत का रहा हूं कि समस्यायें सड़क पर आंदोलन खड़े करने से नहीं, सरकार में निर्णय लेने और उनका परिपालन सुनिश्चित करने से ही सुलझती हैं। जब

हमारी सरकार थी, हमारे विश्वास पर जनता ने वोट दिया था, तब हम सरकार क्यों छोड़ते ? यह जनता के साथ विश्वासघात भी था और हमारी कमजोरी भी मानी जाती कि हम मोरारजी जैसे पुराने पूँजीपतियों के एजेन्ट के सामने घुटने टेक गये हैं। जनता की तात्कालिक भावना केवल यह थी कि हम सरकार चलायें और जो बेईमान सरकार में हावी हो गये हैं उन्हें निकाल बाहर करें। इसलिए मैंने अन्त तक जनभावना के अनुरूप ही कार्य किया था। जब तक अपरिहार्य न बन जाय, पार्टी को न तोड़ा जाय, यह भी भावनात्मक लगाव था, अतः मैंने मंत्रिमण्डल में जाना स्वीकार किया था। उन्होंने स्वीकार किया कि आज मैं महसूस करता हूं कि यह मेरा सोचना कुछ इतिहासकारों की नजर में गलत भी हो सकता है किन्तु भूल तो महात्मा गांधी से भी हुई थी। मसलन, प्रथम विश्व युद्ध में गांधी जी ने फौजी रंगरूट भर्ती कराकर अंग्रेजों की ओर से लड़ाई लड़ी थी फिर दूसरे महायुद्ध में स्वयं को अलग कर लिया। अतः वहाँ भी यह प्रश्न उठा था कि जो चीज प्रथम महायुद्ध में नैतिक थी वह दूसरे में अनैतिक कैसे बन गई ? इसी प्रकार बापू ने पहिले सरकार बनाने के निर्णय का बहिष्कार कराया किन्तु बाद उनमें शामिल होने के लिए दबाव डाला। चोरी-चौरा काण्ड में जनता में से हिंसा हो गई तो आँदोलन को रोक दिया था, किन्तु अंग्रेजों द्वारा अनेक बार गोलीबारी की गई तो यदा-कदा उनका समर्थन भी कर दिया करते थे। क्या इन सवालों का जवाब छूट सकने वाला व्यक्ति गांधी जी से घृणा करने लगेगा ? किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि गांधी जी का दृष्टिकोण अति व्यापक था। अतः वह समयानुसार हर निर्णय को कसौटी पर कसते थे।

ठीक, इसी प्रकार चौधरी चरण सिंह भी अपने एकमात्र लक्ष्य ग्रामीण जन समुदाय की भलाई के व्यापक दृष्टिकोण के आगे ही कोई निणंय कसौटी पर कसते थे। उसके लिए उन्हें न चाहते हुए भी सत्ता एवं प्रतिपक्ष के थपेड़ों से समय-समय पर टक्कर लेनी पड़ी तथा समझौते भी करने पड़े। अतः आम जनता के जिन सवालों को लेकर उन्होंने एक वर्गचेतना

का बिगुल बजाया था जिससे प्रभावित होकर ग्रामों का खामोश जन समुदाय संघर्ष के लिए आमादा था। उसे संघर्ष में उतरने से रोकने का अप्रत्यक्ष प्रयास भी वह हरक्षण करते रहे। अर्थात् उन्होंने राष्ट्र व्यापी एकता एवं शक्ति को तैयार किया किन्तु उसे जुझारू प्रवृत्ति का बनाकर राष्ट्र व्यापी आंदोलन के लिये सक्रिय भूमिका निभाने को प्रेरित नहीं किया। इसी कारण हमारे साम्यवादी समीक्षक उन्हें कभी-कभी प्रतिक्रियावादी घोषित कर देते थे। लेकिन दूसरा मूल कारण चौधरी का व्यावहारिकता वाद और उनकी पुरानी कांग्रेस संस्कृति थी जिसमें उन्होंने राजनैतिक दीक्षा ली थी।

यह दुर्भाग्य था कि चौधरी साहब समय और परिस्थितियों की मजबूरी के शिकार रहे और उन्होंने राष्ट्रव्यापी आंदोलन की जोखिम उठाने का प्रयास नहीं किया जिससे देश में क्रांतिकारी परिवर्तन की उम्मीद जागृत होती; किन्तु इतिहास ने ऐसी कोई विभूति पैदा नहीं की जिसने हर प्रत्याशा पूरी की हो। वह विलक्षण प्रतिभाशाली व्यक्तित्व जिसने गाँव की मिट्टी को जीवन भर प्यार किया और दिल्ली में खेत और खेतिहर की बहस छेड़कर उनको सम्मान दिलाने की चिन्ता में जीवन भर घुलता रहा और घुट-घुट कर जिन्दगी जीता रहा' मगर गांवों के खामोश आवाम की सद्भावनाओं और आशीर्वादों ने ही उसे इतना लम्बा जीवन दिया। वह आज नहीं है किन्तु आगे की पीढ़ियां भी उसके लिए कृतज्ञ होकर झुकती रहेंगी। जब तक इस देश में किसान-मजदूर और उनके बीच हरियाली रहेगी।

स्व० चरण सिंह और आर्यसमाज

आचार्य दत्तात्रेय (बाव्ले) आर्य, अजमेर

चौधरी चरणसिंह के निधन पर देश के प्रमुख अंग्रेजी तथा हिन्दी समाचार पत्रों ने अपने-२ दृष्टिकोण से कई प्रकार की प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की हैं। अनेक प्रमुख नेताओं ने भी उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

अपने विचार व्यक्त किये हैं। चौधरी साहब जैसे राजनैतिक क्षेत्र के एक वरिष्ठ नेता के संबंध में ऐसी प्रतिक्रियाएं स्वाभाविक है। उनकी राजनैतिक विचारधारा तथा दलगत राजनीति के संबंध में इसलिये मैं यहाँ कोई विवेचन नहीं करना चाहता। किन्तु इन सब मूल्यांकनों में जिस बात पर प्रायः सब एकमत प्रतीत होते हैं वह यह है कि चौधरी साहब एक ईमानदार, निष्ठावान तथा स्पष्टवादी राजनेता थे। जैसा 'टाइम्स आफ इंडिया' आदि कुछ पत्रों ने लिखा है कि उनकी इन विशेषताओं का श्रेय आर्यसमाज को है।

चौधरी साहब उन थोड़े से गिने-चुने प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं में से एक थे जिन्होंने कभी यह स्वीकार करने में संकोच नहीं किया कि उनका प्रारम्भिक जीवन व चरित्र निर्माण आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द की ही देन है। समाचार पत्रों में उनके निवास स्थान के उस कमरे का चित्र प्रकाशित हुआ है जिसमें उनका पार्थिव शरीर जनता के दर्शनार्थ रखा गया था। उस कमरे में दो चित्र साथ-साथ रखे हुए दिखाई देते हैं प्रथम ऋषि दयानन्द तथा दूसरा महात्मा गांधी का। इन दोनों ही की कुछ विशिष्ट शिक्षाओं के श्री चरणसिंह एक प्रतीक थे। देश के आर्थिक नवनिर्माण और विशेषकर ग्रामी किसानों की उन्नति के सम्बन्ध में उनका दृष्टिकोण स्पष्टवादी तथा गांधीवादी था। उनका सादा जीवन तथा रहन-सहन भी एक गांधीवादी नेता का स्मरण दिलाता था किन्तु ऋषि दयानन्द ही उनके वास्तविक प्रेरणास्रोत व मार्गदर्शक रहे हैं यह तथ्य भी निर्विवाद है। उनकी निर्भीकता स्पष्टवादिता, सैद्धान्तिक दृढ़ता तथा जन्मगत जातपांत जैसी कुरीतियों का विरोध इसका प्रमाण है। अपने इस संक्षिप्त लेख में, मैं उसके केवल कुछ उदाहरण देकर उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहता हूं।

जाट बनाम किसान

चौधरी चरण सिंह जी के सम्बन्ध में उनके समालोचक अक्सर यह कहते हैं कि उन्होंने राजनीति में जातिवाद और विशेषकर जाटवाद को

प्रोत्साहन दिया किन्तु उनके जीवन, व्यवहार व विचार इन तीनों से सइ आरोप का खण्डन होता है। उन्होंने अपनी कन्याओं का विवाह जन्मगत जातिपांत तोड़कर, गैर जाटों में किया, मुझे स्मरण नहीं है कि वे कभी किसी जाट संस्था या संगठन से सम्बन्धित रहे हों और न ही किसी जाट सम्मेलन या सभा की उन्होंने अध्यक्षता या सदस्यता स्वीकार की। ये सही है कि देश में किसान वर्ग और विशेष कर उत्तर भारत में किसानों में एक बड़ी संख्या जाटों की है, किन्तु साथ में यह भी सही है कि चरण सिंह उनके समर्थक या नेता इसलिए नहीं थे कि वे जाट थे बल्कि इसलिए थे कि वे किसान थे। यही कारण है कि उनके समर्थकों में जाटों के अतिरिक्त गूजर, अहीर आदि अन्य पिछड़ी जाति के किसानों की बहुत बड़ी संख्या थी। अनेक उच्च जाति के लोग भी जिन्हें गांधी जी की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था और बड़े उद्योगों के स्थान में कुटीर उद्योगों के महत्व में विश्वास था। चौधरी साहब को अपना नेता स्वीकार करते थे। लोकदल आदि जिन दलों का नेतृत्व उन्होंने किया उनमें प्रायः सब जातियों के, यहाँ तक कि मुसलमान भी तटस्थ व अधिकारी रहे हैं।

जाट राजपूत विवाद

राजस्थान में जाटों के साथ राजपूतों द्वारा दुर्व्यवहार किये जाने के अनेक उदाहरण दिये जाते हैं। उन्हें अपेक्षाकृत छोटी जाति का समझ कर राजपूत राजा और ठिकानेदार सामाजिक दृष्टि से उनके साथ लगभग अछूतों जैसा व्यवहार करते थे। अपने विवाह में जाट वर को घोड़े पर नहीं बैठा सकते थे और न ही वधू को सोने के जेवर पहना सकते थे। यहाँ तक कि वे अपने भोज में देशी घी का प्रयोग नहीं कर सकते थे, उन्हें तेल का ही उपयोग करने की छूट थी। जैसा चौधरी साहब ने एक बार कहा था, "जन्माभिमानी क्षत्रियों के इसी प्रकार के दुर्व्यवहार का परिणाम था कि पंजाब में लगभग ५१ प्रतिशत जाट या तो मुसलमान हो गये या फिर सिख बन गये। आधुनिक युग में ऋषि दयानन्द ही एकमात्र ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने वेद और शास्त्रों के आधार पर जाटों को क्षत्रिय

घोषित किया। इतना ही नहीं आर्य समाज के अनेक प्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान, पंडित आदि जन्म से जाट हैं। आज भी यदि किसी वर्ग विशेष के अधिकांश व्यक्ति आर्य समाज के अनुयायी हैं तो वे जाट ही हैं। चौधरी चरण सिंह जी इसीलिये अन्त तक अपने आपको आर्यसमाजी व ऋषि दयानन्द के अनुयायी घोषित करने में गौरव अनुभव करते थे।

अन्तर्जातीय विवाह एकमात्र उपाय

मेरी सम्मति में उनकी सबसे बड़ी देन उनका जातिवाद के विरुद्ध वह क्रांतिकारी अभियान था, जिसे स्व० पं० नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेता भी स्वीकार करने में झिझकते थे। चौधरी साहब ने पं० नेहरू से सन् १९४५ में ही यह मांग की थी कि वे कम से कम सरकारी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिये अन्तर्जातीय विवाह अनिवार्य कर दें किन्तु नेहरू जी ने उनके सुझाव को यह कह कर अमान्य कर दिया कि विवाह एक व्यक्तिगत मामला है उसमें राज्य या कानून को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। नेहरू जी की यह दलील सैद्धान्तिक दृष्टि से सही थी, किन्तु भारत की परिस्थितियों में उसका एक सामाजिक व राष्ट्रीय पहलू भी है। जन्मगत जातपांत न केवल हमारे सामाजिक अपितु राष्ट्रीय जीवन का भी एक बड़ा अभिशाप रहा है, कुछ अपवादों को छोड़कर कोई भारतीय और विशेषकर हिन्दू अपना विवाह केवल व्यक्तिगत गुण-दोषों के आधार पर शायद ही करता हो। प्रायः सब जाति व धर्मों के लोग विवाह संबंध अपनी जाति व धर्म की सीमा के अन्दर ही करते हैं। यहाँ तक कि आर्य समाज की स्थापना के पूर्व व बाद में हिन्दू कोड बिल के पारित होने के पहले अपनी जाति में ही विवाह करना कानून की दृष्टि से आवश्यक था। यदि कोई उच्च वर्ग का हिन्दू किसी अन्य जाति की कन्या से विवाह कर लेता था तो उसे कानून भी स्वीकार नहीं करता था। ऐसे विवाहों से उत्पन्न सन्तानें अवैध समझी जाती थीं। उन्हें अपनी पैतृक सम्पत्ति में कोई अधिकार या हिस्सा नही मिल सकता था। ऐसी स्थिति में चरणसिंह जी का सुझाव जातिवाद के उन्मूलन के लिए एक सर्वथा उपयुक्त और

आवश्यक कदम समझना चाहिये था। कानून द्वारा अपनी ही जाति में विवाह करने के लिये बाध्य किया जा सकता है तो अपनी ही जाति में विवाह न करने का कानून अनुचित क्यों समझा जाये। वस्तुतः जन्मगत जातिपांत के निराकरण का वर्तमान परिस्थिति में यही एक कारगर उपाय है।

जातिवाद को प्रोत्साहन

यह दुर्भाग्य की बात है कि स्वाधीनता के बाद चुनाव आदि राजनैतिक स्वार्थों के कारण हमारे अनेक प्रमुख नेता तक जातिपांत के इस राष्ट्र विरोधी भस्मासुर को प्रोत्साहन देने में संकोच नहीं करते। अंग्रेजी राज्य में जिन सामाजिक व धार्मिक सुधारों को हम अपनी राजनैतिक मुक्ति के लिये आवश्यक समझते थे। जातिप्रथा का निराकरण उनमें सबसे अधिक महत्व का प्रश्न था। ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम इसलिए गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था को ही वेदोक्त सिद्ध करके जन्मगत जातपांत के आधार को ही नष्ट करने का प्रयत्न किया। छूआछुत अथवा हरिजनों की समस्या भी इसी सर्वभक्षी जाति व्यवस्था के वृक्ष के विषैले फल मात्र हैं। जन्म के स्थान में कर्म के आधार पर तथाकथित अछूतों को ब्राह्मण आदि उच्च वर्गों में सर्वथा आत्मसात् करके इस समस्या का चिरस्थायी और कारगर उपाय किया जाना चाहिए था किन्तु स्वाधीनता के बाद इन वर्गों को उचित तात्कालिक के स्थान में अब प्रायः सदा के लिये स्वयं उनके हित विरोधी, राजनैतिक व आर्थिक लाभ के प्रलोभन देकर हमने जन्म की दृष्टि से उन्हें हमेशा के लिए अछूत बना दिया है। आज स्थिति यह है कि हरिजनों के लिए निर्धारित आर्थिक व राजनैतिक लाभ उठाने के लिए ऊँची जाति के लोग झूठे प्रमाण पत्र देकर अछूत बन रहे हैं।

जाति सूचक नामों का निषेध—

चौधरी साहब द्वारा अन्तर्जातीय विवाह का उपर्युक्त सुझाव स्वीकार करना यदि कठिन था तो कम से कम इस प्रकार का कानूनी या संवैधानिक प्रावधान तो किया ही जा सकता था कि कोई सरकारी अधिकारी

अपने नाम के आगे अपनी जाति का उल्लेख न करे। जैसेकि हम रामसिंह रंगर मजिस्ट्रेट या दयाराम जाट कलैक्टर आदि लिखते हैं अथवा जयदेव गुप्ता पुलिस अधी. जैसे नाम पढ़ते व सुनते हैं तो जातिवाद का प्रोत्साहन मिलता है चाहे जाति सूचक नाम के अधिकारी स्वयं कितने ही निष्पक्ष हों उनकी जाति से सम्बन्धित व्यक्तियों के मन में यह आशा और अपेक्षा उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि यह अधिकारी उनका पक्ष लेंगे दूसरी तरफ अन्य जाति के लोगों में उनके प्रति सही या गलत यह आशंका भी उत्पन्न होना स्वाभाविक है कि भिन्न जाति के होने के कारण उनसे न्याय की अपेक्षा नही कर सकते। मैंने स्वयं चरण सिंह जी को जब वे प्रधानमंत्री बने, तब नेहरू जी को दिये गये उनके सुझाव का स्मरण दिलाते हुए आग्रह किया था कि यदि अपने कार्यकाल में वे हिन्दुओं की जाति प्रथा को सर्वथा गैर कानूनी घोषित नहीं कर सकते तो कम से कम सरकारी क्षेत्र में जाति सूचक नामों के उपयोग का कानून द्वारा निषेध अवश्य कर दें। यह आपके प्रधानमंत्री काल की बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। मेरी भावना से सहमति सूचक उनके कार्यालय का पत्रोत्तर भी मुझे प्राप्त हुआ किन्तु दुर्भाग्य से उनके प्रधानमंत्रित्व काल की लघु अवधि तथा विवाद-ग्रस्तता के कारण वे यह कार्य नहीं कर सके।

वस्तुतः मैंने स्व० श्रीमती इन्दिरा गांधी को भी इस प्रकार का सुझाव देकर निवेदन किया था कि वे केन्द्रीय तथा राज्य मंत्रियों तथा समस्त सरकारी कर्मचारियों को यह आदेश दें कि वे अपने सरकारी पदों के साथ अपने जातिसूचक नामों का प्रयोग करें। यह बात निर्विवाद है कि जब तक हिन्दू समाज जन्मगत जाति प्रथा के अभिशापों से सर्वथा मुक्त नहीं हो जाता तब तक हमारा देश एक राष्ट्र तो दूर स्वयं हिन्दू समाज का भी उनका एक शक्तिशाली राष्ट्रीय आधार नहीं बन सकता। हमारे प्रायः सभी धार्मिक व सामाजिक सुधार भी जातपांत के इस नमक की खान में विलीन होकर नष्ट होते जा रहे हैं। अतएव स्व० चरण सिंह के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि मेरी सम्मति में यही हो सकती है कि हम

उनकी स्मृति में एक ऐसा देशव्यापी जातपांत उन्मूलक आन्दोलन प्रारम्भ करें कि जिससे परिणाम स्वरूप हमारे देश व समाज का यह ऐतिहासिक कलंक सदा के लिए समाप्त हो जाये।

चौधरी चरणसिंह : संस्मरणों के आइने में

—श्री शिवकुमार गोयल

लखनऊ की एक शाम। दिल्ली से उ० प्र० के दौरे पर गये हम पत्रकारों का दल तत्कालीन मुख्यमन्त्री चौधरी चरणसिंह जी के बंगले के लान में बैठा हुआ था। चौधरी साहब चाहते थे कि मेरठ, बुलन्दशहर तथा अन्य स्थानों से उनसे भेंट करने आये कुछ व्यक्तियों से मुलाकात कर, उन्हें विदा करने के वाद वे हमसे बातें करें।

'विश्वभर, तूने मेरठ से इतनी दूर आने की तकलीफ किसलिये की ?' चौधरी साहब ने सबसे किनारे बैठे हुए एक युवक से पूछा।

'चौधरी साहब, आपके दर्शनों के लिए यों ही चला आया हूं।' उनसे कहा तथा कुछ क्षण रुककर वह बोला, 'शराब की दुकान नीलाम में होने वाली है। यदि आप किसी से कह दें तो काम हो जाये।'

मैं उनके बिल्कुल पास की कुर्सी पर बैठा ये सब बातें सुन रहा था। चौधरी साहब का चेहरा तमतमा उठा। परन्तु उन्होंने गुस्से को दबाते हुये बहुत आहिस्ता से कहा, 'भले आदमी, तुझे और कोई काम न मिला। अब खेतीबाड़ी छोड़कर दलाली करके पैसा कमाना चाहता है। शराब और मुकदमेबाजी ने तुम लोगों का नाश कर डाला। और तू मुझसे यह आशा करता है कि मैं तेरे लिये मौत का कुंआ खोदने में तेरी मदद करूं ?'

एक पत्रकार के नाते मुझे चौधरी साहब से अनेक बार मिलने और साथ-साथ जाने का अवसर प्राप्त होता रहा है। मैंने सदैव यह देखा है कि चौधरी साहब स्पष्टवादी, दो टूक बात करने वाले तथा किसी भी गलत बात को स्वीकार न करने वाले तेजस्वी नेता हैं, अपनी दो टूक

बातों तथा किसी गलत व हृदय के विपरीत काम न करने के स्वभाव ने उनके विरोधियों को भी जन्म दिया। परन्तु यह सब अहसास करने के बावजूद उन्होंने कभी अन्य राजनीतिक नेताओं की तरह व्यवहार-कुशल बनने, लगी-लिपटी बातें करने तथा सभी को प्रसन्न करने के लिए 'झांसेबाजी' का सहारा लेना स्वीकार नहीं किया। चौधरी साहब का यह स्वभाव प्रारम्भ से ही रहा था।

बदमाश की पैरवी नहीं करूंगा

वे १९३० में गाजियाबाद में वकालत करते थे। एक बार जब बलात्कार के आरोप में एक युवक का केस उनके पास आया और उन्हें बताया गया कि झूठा है तथा आपसी रंजिश के कारण उस पर यह गम्भीर आरोप लगाया गया है तो प्रारम्भ में उन्होंने मामला पैरवी के लिए स्वीकार कर लिया। बाद में एक दिन उसी गांव के एक विश्वस्त आदमी से उन्हें यह पता लगा कि उक्त युवक वास्तव में कुख्यात अपराधी है तथा इस प्रकार के अपराधों का आदी है तो उन्होंने अदालत में मामला पेश होने वाले दिन युवक के आने पर पैरवी करने से स्पष्ट इंकार कर दिया तथा कहा "मैं किसी बलात्कारी एवं बदनाम को कानून के शिकन्जे से छुड़ाने का पाप नहीं कर सकता।' उनके साथी वकील ने तर्क भी दिया, 'हमें इन बातों से क्या लेना-देना है। परन्तु चौधरी साहब अपने निर्णय से टस से मस न हुए तथा उन्होंने एक सप्ताह पहले ली हुई फीस आदि अपने मोहर्रिर से कह कर वापिस करा दी।

गाजियाबाद में उन्हीं दिनों एक एग्जीक्यूटिव आफिसर ने किसी स्थानीय लड़की का अपहरण कर लिया तथा इस घटना से नगर में बवंडर मच गया। नगर के सम्भ्रांत नागरिकों ने लड़की का पता चलाने के लिए एक समिति का गठन किया तो चौधरी साहब भी उसमें सक्रिय थे। वे वकालत की चिन्ता न करके लड़की की वापसी के लिए दौड़-धूप में लगे रहे तथा तब तक चुप न बैठे तब तक लड़की अपने घर वापस न आ गई।

इसी प्रकार एक पाखण्डी साधु ने गाजियाबाद आकर डेरा जमाया

तथा अपने को अवतार व सिद्ध बताकर वह विशेष कर महिलाओं को अपने जाल में फांसने लगा। उसके चरित्र के विषय में लोगों को सन्देह हुआ तो नगर में सनसनी फैल गई, सम्भ्रांत नागरिकों ने उसके विरुद्ध अभियान चलाया, चौधरी साहब उसमें भी सबसे आगे थे।

चौधरी साहब वकालत से अधिक रुचि आर्यसमाज तथा कांग्रेस के कार्यों में लेते थे। वे साप्ताहिक सत्संगों में सक्रिय भाग लेते थे। आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० रामचन्द्र देहलवी व श्री कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर से उनका निकट का सम्पर्क रहा।

एक बार वयोवृद्ध नेता शायर श्री गोपीनाथ अमन ने अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया था कि १९३० में उन्हें तथा चौधरी साहब को नमक बनाने के आरोप में एक साथ गिरफ्तार किया गया था। इस प्रकार वे नमक कानून का उल्लंघन करते पकड़े गये तथा मेरठ जेल में बन्द रहे।

इस संदर्भ में मजेदार बात यह है कि चौधरी साहब के मकान से उनकी भैंस कुर्क कर ली गई तो कांग्रेसी नेता मास्टर सुन्दरलाल जी ने जिलाधीश श्री बनर्जी के पास जाकर कहा भैंस से तो उनके परिवार को दूध मिलता है, उसकी जगह आप चौधरी साहब की लायब्रेरी कुर्क क्यों नहीं कर लेते ? तब जाकर भैंस की कुर्की से मुक्त किया गया।

नेहरू जी अत्यन्त दबंग प्रधानमंत्री थे उनके समक्ष किसी भी नेता ने उनके विचारों को चुनौती देने का कभी साहस नहीं किया। किन्तु चौधरी साहब पहले व्यक्ति थे जिन्होंने १९४७ में नागपुर में हुए कांग्रेस कार्य समिति के अधिवेशन में नेहरू जी के सहकारी खेती सम्बन्धी विचारों को अव्यवहारिक बताकर चुनौती दी उन्होंने तर्कपूर्ण ढंग से यह सिद्ध किया कि सहकारी खेती में व्यक्तिगत रुचि के अभाव के कारण कृषि उत्पादन गिर जायेगा।

चौधरी साहब की राजनीतिक ध्रुवीकरण में प्रमुख भूमिका रही है। उनका कांग्रेस छोड़ने के बाद से ही यह मत रहा है कि जब तक देश में

एक सशक्त विपक्षी दल न होगा तब तक लोकतन्त्र सुचारु रूप से चल न पायेगा ।

२५ जून १९७५ को अन्य नेताओं के साथ चौधरी साहब को भी जेल भेज दिया गया । दिल्ली की तिहाड़ जेल में वे बन्दी रखे गये ।

मार्च १९७६ में उन्हें रिहा किया गया ।

२३ मार्च १९७६ की उत्तर प्रदेश विधानसभा में विरोधी दल के नेता के रूप में उन्होंने दो ढ़ाई घन्टे तक अपने भाषण में आपात्काल तथा उसके दौरान हुए अत्याचारों के सप्रमाण प्रहार किये, उन्हें सुनकर कांग्रेसी सदस्य तथा मुख्यमन्त्री निरुत्तर हो गये थे ।

जनवरी १९७७ में चुनाव की घोषणा होने के बाद जयप्रकाश जी के आदेश पर चौधरी साहब ने जनता पार्टी के गठन की पहल की थी ।

पता था कि पटवारी लोग रिश्वत के बल पर जमीन की हेराफेरी करने के लिए बदनाम हैं । एक बार जब उन्होंने हड़ताल की धमकी दी, तो उन्होंने उनके बस्ते रखवा कर पटवारी शब्द को ही हमेशा के लिए शब्दकोष से हटा दिया । भले ही बाद में उनका 'लेखपाल' के रूप में पुनर्जन्म हो गया हो।

एक बार वे अपने प्रदेश के किसी जिले में गये । जिला उद्योग अधिकारी उनकी अगवानी के लिये आया, तो उन्होंने सहज भाव से पूछ लिया, इस जिले में कौनसा प्रमुख उद्योग है । उसने उत्तर दिया, उद्योग तो यहां कोई नहीं है यह सुनकर उनका चेहरा तमतमा उठा तथा बोले, फिर आप किस प्रकार अपनी फौज के साथ यहां वर्षों से जमे हुए हैं ? और दूसरे ही दिन उद्योग विभाग को वहां से उठाकर अन्यत्र भेज दिया ।

चौधरी चरण सिंह :
जिनके चरण-चिन्हों पर चलें

श्रद्धेय चौधरी जी के कमरे में सदा दो चित्र लगे रहते थे । एक चित्र था युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का और दूसरा था राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी का ।

मान्य चौधरी जी प्राय: कहा करते थे दोनों महान् विभूतयों का मेरे जीवन एवं चरित्र निर्माण में बहुत बड़ा हाथ है।

"स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मुझे सच्चे धर्म का मार्ग दिखाया। जिसके कारण मुझे ईश्वर पर परम विश्वास है। अपनी संस्कृति, सभ्यता और देश पर अभिमान है।"

"महात्मा गांधी के आचरण, वेश-भूषा, सात्विक अहार-व्यवहार, राजनीति में भी निष्कपट जीवन, बहुजन हिताय के संकल्प ने मुझे देश-भक्त बनाया।"

विद्यार्थी काल से ही उन्होंने शिष्टाचार, सदाचार तथा सादेपन को महत्व दिया।

नियमबद्ध जीवन की शिक्षा महर्षि के साहित्य में वर्णित सिद्धान्तों से मिली। उनकी दिनचर्य्या तथा खान-पान अनुकरणीय था। प्रातः ४ बजे उठकर शौच आदि से निवृत्त हो सन्ध्या-हवन करना। प्रातराश में पाव भर दूध, १५-२० किशमिश के दाने होते थे। दोपहर के भोजन में एक दाल, एक सब्जी दही के साथ २ या ३ मिसी रोटी। दोपहर बाद ४ या ५ बजे १ प्याला चाय का लेते थे। रात्रि का अहार दोपहर जैसा होता था, सोने से पूर्व १ पाव दूध गुड़ या बताशे के साथ पीते थे। सर्दी में वे मक्की की रोटी, सरसों के शाक तथा बथुवे के रायते को और गर्मियों के दिनों में छाछ मिसी रोटी को बहुत पसन्द करते थे।

शेष दिन में प्रातः ९ बजे से ५ बजे तक विधान सभा या पालिया-मेंट में अथवा अपने विभाग के कार्यालय में नियम पूर्वक मेज पर प्रस्तुत फाइलों को देखते थे। ६ बजे से ७ बजे तक पार्टी के कार्यालय के कार्यों को निपटाते थे। अवकाश के उनके दिन जनता के दु:ख-दर्द सुनने के होते थे।

कार्य-कुशल इसीलिये थे कि उनकी पैनी निगाह से विभाग की कोई फाईल बच नहीं पाती थी। इसी कारण उनके विभागीय कार्यकर्त्ता सजग रहते थे। अपने कार्य को पूरा रखते थे। क्यों कि वे देखते थे कि मान्य

चौधरी जी कार्य को निबटा कर सोते हैं, चाहे रात के दो बज जाय, सोने को २ या ३ घण्टे ही मिल पाये। कई बार लेखक जैसे अनुग्रहीत एवं उपकृत जन उनसे निवेदन कर बैठते थे कि "यह फाइलों का कार्य तो सेक्रेटरी लोग भी कर सकते हैं।" आपको बड़े देश की बड़ी आन्तरिक, आर्थिक व्यवस्था पर अधिक ध्यान देना चाहिये। इस सन्दर्भ पर उनका सारगर्भित समाधान होता था।

"अन्तिम निर्णय तो मुझे करना है। कहीं मेरे निर्णय से दोषी बच जाये और निरपराध को हानि हो जाय। इस कारण मैं स्वयं इन सब फाईल के पुलिन्दों को देखता हूं।" अपराधी को दण्ड मिलना चाहिए निरापराध की रक्षा होनी चाहिए।

राजनीतिज्ञों के लिये आलस्य और प्रमाद घातक होते हैं। इस हेतु राजनैतिक व्यक्ति कर्तव्य और उत्तरदायित्व निभाने में असमर्थ रहते हैं। जब कि दायित्व को निभाना उनका परम कर्तव्य होता है। व्यक्ति को पद प्राप्त करके उसके अनुरूप जिम्मेवारी का न निभाना पाप सदृश होता है। दायित्व निभाना सरल कार्य नहीं और फिर आज के भ्रष्ट वातावरण में कर्तव्य पालन करना असम्भव सा हो गया है।

कर्तव्य निष्ठ व्यक्ति अब प्रतिष्ठित पद को कांटों का ताज समझने लगे हैं। स्वस्थ राजनैतिक वातावरण में जो कार्य सरलता से शीघ्रता से हो जाते थे, अब असम्भव हैं।

आदरणीय चौधरी जी आडम्बरों को पसन्द नहीं करते थे। सन् १९५६ की बात है आपको बूढपुर गांव वालों ने आमंत्रित किया। आपने स्वीकृति दे दी। निश्चित दिन चौधरी साहब बूढपुर पधारे। जनता की बाढ़ में जनता उनके दर्शनों को नहीं कर पा रही थी। अत: गाँव वाले हाथी ले आये। उनसे उस पर बैठने के लिये प्रार्थना की। चौधरी महोदय यह कह कर टालते रहे कि यह आडम्बर है। जनता ने ऊँचे स्वर में कहा हम दर्शन करना चाहते हैं। यदि आप हाथी पर बैठ जायें तो हम दर्शन कर सकेंगे। श्री विष्णु शरण दुबलिश के आग्रह पर उन्होंने हाथी